सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 148, नई दिल्ली, बुधवार 06 अगस्त 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 इंदरजीत मदान: एक उद्यमी से कवि तक का सफर
06 क्या हमारी पहचान 30 सेकंड के रील में सिमट कर रह गई है
08 मोहन-मनमोहन दिल्ली जाएंगे: कैबिनेट फेरबदल पर बातचीत तेज

दिल्ली में यहां जाम से मिल जाएगी मुक्ति, कुतुब मीनार और साकेत पर भी कम होगा ट्रैफिक का दवाब

दक्षिणी दिल्ली में छतरपुर से इग्नू तक एलिवेटेड रोड बनने से जाम से राहत मिलेगी। पीडब्ल्यूडी फीजिबिलिटी स्टडी के बाद निर्माण शुरू करेगा। वर्तमान में 100 फुटा रोड पर अतिक्रमण है जिससे भयंकर जाम लगता है। इग्नू रोड पर भी अतिक्रमण से यातायात प्रभावित है। एलिवेटेड रोड बनने से कुतुब और साकेत मेट्रो जंक्शनों पर ट्रैफिक का दबाव कम होगा।

नई दिल्ली। दक्षिणी दिल्ली में जाम की समस्या से राहत दिलाने के लिए छतरपुर 100 फुटा रोड से इग्नू तक एलिवेटेड रोड बनाया जाएगा। इससे छतरपुर व उसके आसपास के इलाके में कुछ हद तक यातायात जाम से राहत मिलेगी। इस क्षेत्र में अभी वाहन चालक दिनभर ट्रैफिक में फंसे रहते हैं।

सुबह और शाम को तो यातायात की विकट स्थिति हो जाती है। पुलिस भी कई घंटों तक ट्रेफिक को सुचारू नहीं कर पाती है। फीजिबिलिटी स्टडी के बाद पीडब्ल्यूडी (लोक निर्माण विभाग) द्वारा काम शुरू किया जाएगा।

वर्तमान में छतरपुर 100 फुटा रोड की चौड़ाई 27 से 30 मीटर है। इस पर दुकानदारों व रेहड़ी वालों ने काफी दूर तक अतिक्रमण भी कर रखा है। इससे यहां रोड के दोनों तरफ सुबह से शाम तक भयंकर जाम लगता है।

दो से तीन किलोमीटर तक वाहनों की कतार लग जाती है। पुलिस ने यहां कंक्रीट बैरियर लगाकर आने-जाने वाली गाड़ियों को अलग करने की कोशिश की, लेकिन इससे जाम की समस्या पूरी तरह खत्म नहीं हुई। इसके अलावा इग्नू रोड पर भी अतिक्रमण की वजह से दिनभर जाम रहता है।

यहां पर अतिरिक्त यातायात पुलिसकर्मी तैनात करने के बावजूद स्थिति काबू में नहीं रहती है। इसलिए पिछले काफी समय से एलिवेटेड रोड बनाने की मांग की जा रही है। विभाग के सर्वे में भी सामने आया था कि रोड के दोनों तरफ भारी ट्रैफिक रहता है।

अभी यह परियोजना अभी प्रारंभिक चरण में है। इसकी फीजिबिलिटी स्टडी के बाद ही निर्माण की शुरुआत होगी। इस स्टडी में पीडब्ल्यूडी के इंजीनियर, स्थानीय विधायक, दिल्ली यातायात पुलिस और अन्य हितधारकों को शामिल किया जाएगा।

इग्नू रोड पर भयंकर जाम में फंसते हैं हजारों स्थानीय लोग

इस क्षेत्र में इग्नू रोड भी एक अहम सड़क है। यह इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी को महरौली-बदरपुर रोड से जोड़ती है। यह सड़क नेब सराय, फ्रीडम फाइटर्स एन्क्लेव, पर्यावरण काम्प्लेक्स और सैदुलाजाब जैसे रिहायशी इलाकों को साकेत मेट्रो स्टेशन से जोड़ती है।

इस सड़क के दोनों तरफ आधे हिस्से पर दुकानदारों और फेरीवालों ने अतिक्रमण कर लिया है। इस वजह से सड़क ओर संकरी हो गई है। स्थानीय कॉलोनियों के निवासियों को प्रतिदिन जाम से जूझते हुए अपने घर जाना पड़ता है। यहां आसपास कोई दूसरी सड़क न होने से लोग इसी रास्ते पर निर्भर हैं। इससे इग्नू रोड और एमबी रोड के टी-पाइंट पर प्रतिदिन जाम रहता है।

कुतुब और साकेत मेट्रो जंक्शन पर ट्रेफिक का दबाव होगा कम

पीडब्ल्यूडी द्वारा करीब दो लंबा एलिवेटेड रोड बनाया जाएगा। यह 100 फुटा रोड को इग्नू से जोड़ेगा। एलिवेटेड बनने से गुरुग्राम और कुतुब मीनार की ओर जाने वाले यातायात को डायवर्ट करने में मदद मिलेगी, इससे कुतुब और साकेत मेट्रो जंक्शनों पर दबाव कम होगा।

यह सड़क छतरपुर के मुख्य सड़क और एसएसएन मार्ग के बीच एक लिंक के रूप में भी काम करेगी। इसके अलावा छतरपुर की मुख्य रोड और एसएसएन मार्ग के व्यस्त चौराहे पर भी एक फ्लाईओवर बनाने की योजना है। इसको लेकर भी जल्द ही सर्वे किया जाएगा।

इग्नू रोड पर सुबह से शाम तक स्थानीय लोग जाम में फंसे रहते हैं। किसी आपातस्थिति में भी यहां से निकलना दूभर हो जाता है। यहां पर पिछले काफी समय से यातायात को सुचारू कराने की मांग की जा रही है, ताकि लोगों को जाम से राहत मिल सके।

विनोद बलहारा, नेब सराय

सहकारिता टैक्सी केंद्र सरकार के द्वारा लाई जा रही है उसी को आम ड्राइवर तक पहुंचाने के लिए हिमांशु जी (कर्नल साहब) चालको तक सहकारिता टैक्सी की उपलब्धियां को पहुंच रहे । ऑल ऑटो टैक्सी ट्रांसपोर्ट कां0 यूनियन, आयोजित किया गया प्रोग्राम । करनजीत जी गुडगांव से, उमाशंकर दिल्ली से मौजूद रहे, रवि राठौर जी ,सुमेर अम्बावता।

देशभक्ति, सैनिक एकता और सम्मान की अनूठी मिसाल

पहलवान सूबेदार संजय अहलावत का सेवानिवृत्ति समारोह ऐतिहासिक बना

परिवहन विशेष न्यूज

>> 100+ गाड़ियों के काफिले, देशभक्ति के रंग और सैनिकों की गूंज ने रचा यादगार क्षण*

बहराना (जिला झज्जर)।

देश सेवा में *22 वर्षों की गौरवमयी पारी* के बाद *सूबेदार संजय अहलावत* के *सेवानिवृत्त होने के उपलक्ष्य में एक भव्य और ऐतिहासिक सम्मान समारोह* का आयोजन किया गया, जो ना केवल सैन्य परंपराओं का प्रतीक बना, बल्कि *देशभक्ति, भाईचारा और गांव की गरिमा का एक अद्वितीय संगम* भी रहा।

इस भावपूर्ण आयोजन की शुरुआत *सांपला स्थित 'काके दी हट्टी'* से हुई, जहां *हरियाणा, उत्तर प्रदेश सहित कई राज्यों और दर्जनों जिलों से पधारे पूर्व सैनिक, रिश्तेदार, ग्रामीण व मित्रगण एकत्र हुए।

**चाय-जलपान* के बाद जब *100 से भी अधिक गाड़ियों का भव्य काफिला* – राष्ट्रीय ध्वज, पुष्प सज्जा और देशभक्ति गीतों के साथ गांव बहराना के लिए रवाना हुआ, तो दृश्य एक *चलती-फिरती देशभक्त परेड* जैसा प्रतीत हुआ।

गांव पहुंचते ही माहौल *'भारत माता की जय', 'वीर जवान अमर रहें' जैसे नारों से गूंज उठा। जवानों ने **जोश से भरपूर नृत्य* किया और फिर मंच पर सूबेदार संजय अहलावत का *फूल मालाओं, पगड़ी और उपहारों के साथ भव्य स्वागत* किया गया। इस गरिमामयी क्षण को और भी विशिष्ट बनाते हुए, *उनकी धर्मपत्नी का भी पूरे सम्मान के साथ सार्वजनिक अभिनंदन* किया गया — जो हर फौजी के पीछे खड़े परिवार के योगदान को दर्शाता है।

इस समारोह को सशक्त नेतृत्व और अनुशासन के साथ सफल बनाने में *पूर्व हवलदार सुनील कुमार अहलावत* और उनकी टीम की अहम भूमिका रही। मंच पर देशभर से आए गणमान्य पूर्व सैनिकों का भी जोरदार स्वागत हुआ, जिनमें प्रमुख रूप से:

* *Lt Col (Retd) Phool Kumar Mor* (अध्यक्ष – गुरेज वेलफेयर एसोसिएशन)

* Sub Maj (Retd) Jagbir Singh Gehlot (सेक्रेटरी),

* SM Hony Capt Parma Ram Saran Advisor - जोधपुर से, SM Ran Singh Phogat*, Hony Capt Surender Singh,

* SM Naresh Jakhar, SM Jaiprakash Dubaldhan, SM Basant,

* Hony Capt Ramniwas, Hony Capt Surender Singh Shekhawat,

* Hony Capt Anoop Singh, SM Rajender Singh, SM Rampal

* व साथीगण उत्तर प्रदेश से,

* SM Rajesh Kumar Malik,SM Umed Singh,SM Balwan Singh , Mahipal साहब आदि आदि

* *कुरुक्षेत्र, करनाल, जींद, भिवानी, रेवाड़ी, रोहतक, झज्जर, सोनीपत, गुरुग्राम* आदि जिलों से आए सैकड़ों NCO, JCO साहिबान और ग्रामीण शामिल रहे।

सभी सम्मानित पूर्व सैनिकों को मंच पर पगड़ी व शॉल भेंट कर, जयघोष के साथ सम्मानित किया गया।

इस गरिमामयी अवसर पर मंच पर देश सेवा के जज्बे और सैनिक परंपराओं की अनुगूंज स्पष्ट रूप से दिखाई दी। पंडाल *स्वंदे मातरम्* और *स्जय हिन्दस्* जैसे नारों से गूंजता रहा और हर चेहरा गर्व, प्रेम और भावुकता से चमकता रहा।

> **'ये सिर्फ़ एक रिटायरमेंट फंक्शन नहीं,

> ये सैनिक एकता, संस्कार और देशभक्ति की जीवंत झलक थी।' **

कार्यक्रम के समापन पर *सूबेदार संजय अहलावत को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं* के साथ विदाई दी गई। यह आयोजन निश्चित ही उन समारोहों में शामिल होगा, *जो वर्षों तक गांव, परिवार और साथियों के दिलों में गर्व से संजोया जाएगा।

जय हिन्द ,जय भारत

वन्देमातरम

सौजन्य से: सुनिल कुमार अहलावत & टीम

हादसा: लक्ष्मी नगर मंगल बाजार में बस ने ऑटो को मारी जोरदार टक्कर, ड्राइवर की मौके पर ही मौत

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली के लक्ष्मी नगर स्थित मंगल बाजार रोड पर एक दिल दहला देने वाला हादसा सामने आया। तेज़ रफ्तार बस ने एक ऑटो को ज़ोरदार टक्कर मार दी, जिससे ऑटो पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। टक्कर इतनी भीषण थी कि ऑटो ड्राइवर की मौके पर ही मौत हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, बाजार में काफी भीड़भाड़ थी और ट्रैफिक भी धीमा चल रहा था, इसी बीच अनियंत्रित बस ने अचानक ऑटो को टक्कर मार दी। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और पुलिस मौके पर पहुंची। फिलहाल, पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और हादसे की जांच जारी है। इस दर्दनाक हादसे ने इलाके के लोगों को झकझोर कर रख दिया है। सूत्रों के अनुसार मामला 4 अगस्त का है।

प्रदोष व्रत आज

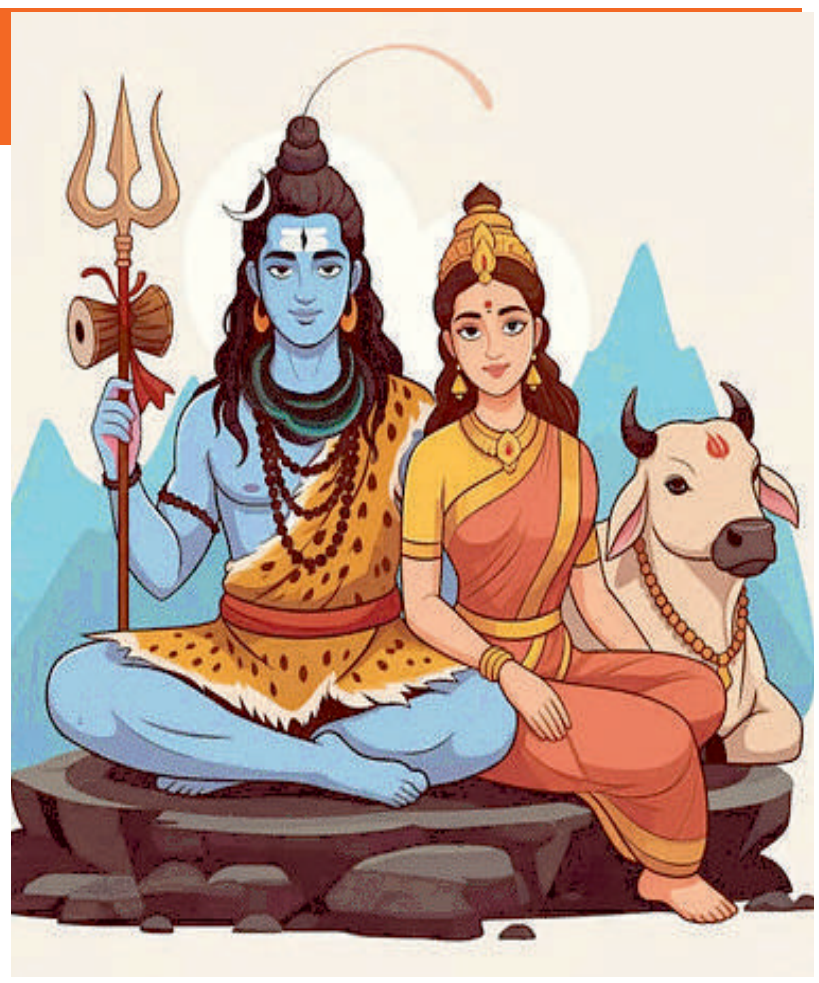

शिवपुराण के अनुसार, प्रदोष व्रत करने से व्यक्ति को सुख समृद्धि और शुभ फल की प्राप्ति होती है। प्रदोष व्रत भगवान शिव को समर्पित है। इस दिन भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा अर्चना की जाती है। मान्यताओं के अनुसार प्रदोष व्रत करने से व्यक्ति की सारी मनोकामनाएं पूरी होती है। साथ ही व्यक्ति को संतान सुख, धन संपत्ति का लाभ भी मिलता है। इस दिन व्रत करने से भगवान शिव आपकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं। साथ ही घर परिवार में सुख समृद्धि और खुशहाली आती है।

अगस्त महीने का पहला प्रदोष व्रत कब है ?

==========

हर महीने की शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी तिथि को प्रदोष व्रत किया जाता है। पंचांग की गणना के अनुसार 6 तारीख को अगस्त माह का पहला प्रदोष व्रत किया जाएगा। 6 तारीख को दोपहर में 2 बजकर 9 मिनट से द्वादशी तिथि समाप्त होकर त्रयोदशी तिथि का आरंभ होगा। संध्याकाल में त्रयोदशी तिथि व्याप्त होने के कारण 6 तारीख को ही बुध प्रदोष व्रत का संयोग बनेगा। 6 अगस्त को बुधवार होने के कारण इसे बुध प्रदोष व्रत कहा जाएगा। शास्त्रों में विधान है कि जब भी त्रयोदशी तिथि प्रदोष काल यानी शाम के समय होती है उस समय ही प्रदोष व्रत किया जाता है। क्योंकि, प्रदोष काल में भगवान शिव कैलाश पर प्रसन्न मुद्रा में नृत्य करते हैं। शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी तिथि होने से शिव जी का वास वृषभ पर होगा। जिसे की बेहद शुभ और अभीष्ट सिद्धि देने वाला बताया गया है। यानी इस दिन किए गए व्रत को करने से आपकी जो भी मनोकामना है वह जरूर पूरी होगी।

प्रदोष व्रत का महत्व

==========

शिव पुराण में प्रदोष व्रत को लेकर बताया गया है कि जो व्यक्ति सच्चे मन से प्रदोष व्रत करता है भगवान शिव उसकी सारी मनोकामनाएं पूरी करते हैं। साथ ही व्यक्ति को धन संपत्ति लाभ के साथ साथ संतान सुख की प्राप्ति भी होती है। भगवान शिव का आशीर्वाद और कृपा पाने के लिए हर महीने प्रदोष व्रत करना चाहिए।

प्रदोष व्रत पूजा विधि

==========

प्रदोष व्रत के दिन सूर्योदय से पहले उठकर घर के सभी काम करने के बाद स्नान कर लें। इसके बाद भगवान शिव को नमन करते हुए व्रत का संकल्प लें।

इसके बाद सबसे पहले शिवलिंग पर पंचामृत से अभिषेक करें। अभिषेक के लिए जल में गंगाजल, दूध, दही, शहद आदि चढ़ाकर अभिषेक करें। अभिषेक करते समय ओम नमो भगवते रुद्राय नमः मंत्र का जप करें।

फिर शिवलिंग पर सफेद चंदन, धतूरा, शमी के पत्तियां, फूल, फल, भस्म आदि अर्पित करें। ये सभी चीजें अर्पित करते हुए ओम तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ! तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्मंत्र का जप करें।

इसके बाद घी का दीपक जलाकर भगवान शिव की आरती करें। प्रदोष व्रत में दो बार पूजा करें। पहले सुबह और दूसरा प्रदोष काल का समय व्रत करें। पूजा के अंत में भगवान शिव की आरती के बाद पूजा पाठ में की गई भूल चूक के लिए माफी मांगे।

आयुर्वेदिक समाधान

बालक का सुखा रोग

अतिश
ककड़ासिंगी
नागरमोथा
इंद्रजौ
छोटी पीपल
मुलहठी
वंशलोचन,
जहरमोहारा ख्ताई
गिलोय सत
प्रत्येक 3,3 माशा लेकर पानी के साथ पीसकर मटर बराबर गोली बनाकर एक गोली रोज शहद से लें।

मूत्र में जलन, रुकावट, मूत्र में रक्त आना

जवाखार
खैरसार
विजयसार
शीतल चीनी
इलाइची
कलमिशोरा
सभी को समान भाग लेकर पीस लें, 6 माशा लस्सी से लें

हैजा

तिल के पत्ते, 6 माशा , 3 तोला पानी मे घोटकर, 2 बार पिलाये समस्या समाप्त।

खाँसी और कफ

लसोड़े के पत्ते
काली मिर्च
काला मुनक्का
प्रत्येक 7,7 और मिश्रा 120 ग्राम लेकर 500 ग्राम जल में, 50 ग्राम रहने तक उबालें। प्रात शाम छानकर पिए कफ निकल जाएगा।

सिरदर्द या सर्दी

पीपल के चार कोमल पत्तों का रस चूसिये। रस चूसते-चूसते दर्द या सर्दी जुक़ाम मिट जायगा।

कान का दर्द

पीपल के पत्ते का रस कान में डालने से कान का दर्द, बहना तथा बहरापन चला जाता है।

मधुमक्खी काटने की दवा

आक (मदार) के दूध में लौंग, गोल मिर्च, शुद्ध कड़वा तेल या सरसों का दाना एक में रगड़कर तेल में फेंटकर लगाये। पीड़ा समाप्त हो जायगी।

मनुष्य के पेट में दर्द

आकाश बवर पीस कर थोड़ा शुद्ध घी एक चम्मच जल के साथ पिला दिया जाये, दर्द मिट जायगा।

जहर खा लेने पर

अकोल्हा की छाल थोड़ा-सा पीसकर पिला दिया जाय तो कैसा भी जहर हो उसे उलटी द्वारा बाहर निकाल देता है। यह दवा रामबाण है।

वातरोग या गठिया

हरसिंगार की चार या पाँच पत्ती पीसकर एक गिलास पानी से सुबह-शाम दो या तीन सप्ताह पीने से रोग समाप्त हो जायगा।

मुनिश्री सौम्य साग़र महाराज के आज़ के मंगल प्रवचन -

"उस समय भारत में व्याप्त गुलाम बनाने की कमजोरी और कमियों को विदेशी आक्रांताओं ने परख एवं देख लिया था" विदेशियों ने हमारे पूर्वजों को लालच, प्रलोभन और डर से यह मनवाया कि यह छोटा काम तुम्हारा नहीं उसका है, तुम बड़े हो श्रेष्ठ हो शुद्ध हो और सारे छोटे काम छोटे ही करेंगे बड़े नहीं, क्यों की समाज में सबके अपने-अपने पैरामीटर है।----

खैर, नतीजा यह निकला कि - किस्मत में थी नाकामी, कभी कुछ कह कर पछताए, कभी चुप रह के पछताए।----

जो आपके मोन को नहीं समझ सकता। वह आपके शब्दों को समझ पाए इसकी कोई गारंटी नहीं, क्योंकि शब्दों में जान तो तुम्हारे भावों से होती है और भाव तो मन से भी प्रकट किया जा सकते हैं।-----

आगरा, संजय साग़र सिंह। आज, संस्कारों की नीलामी और भारत की गुलामी - स्वतंत्रता विशेष धर्मसभा में निर्मल भवन छिपी टोला की पावन भूमि से मुनि श्री 108 सौम्या सागर जी महाराज ने गुलामी की पराधीनता, प्रमाद के प्रकार, देश के गुलाम बनने की चूक, विदेशी आक्रांताओं ने हमारी किस कमी को पहचाना, इंद्रियों की परिधीनता स्वाधीनता, हमें कैसे प्रमादी बनाया, आंखों पर बंधी मोह की पट्टी, कुर्सी की लड़ाई, नेताओं के वशीकरण, प्रलोभन का चस्का, विदेशों के रियासतों और राजघरों का प्रलोभन, पूछ हिलने वाले स्वान उनके मन को डराने वाले अत्याचार - विदेशों द्वारा रसूखदारों को दी गयी गुलामी की हलवा पुरी, उनकी मानसिकता की गुलामी की नीलामी, इंसानियत और मानवता के गुणों की नीलामी, हमारे महान शहीद हुए महापुरुषों की अपनी मातृभूमि के लिए देशभक्ति की विचार शैली, अपनों के गुलामी के दंश - जितनी सुविधाएं उतनी परेशानियां, दिमाग के कचरे गुलामी की धारणाएं, खिदमत और खुशामद, जैसे महत्वपूर्ण विषयो पर वर्षो से जमी धूल और हमारी भूल की परतों को अच्छी तरह साफ़ किया।

मुनि श्री ने गुमाली की कमियों पर विशेष प्रकाश डालते हुए बताया कि उस समय भारत में व्याप्त गुलाम बनाने की कमजोरी और कमियों को विदेशी आक्रांताओं ने परख एवं देख लिया था और विदेशियों ने हमारे पूर्वजों को लालच, प्रलोभन और डर से यह मनवाया कि - यह छोटा काम तुम्हारा नहीं उसका है, तुम बड़े हो श्रेष्ठ हो शुद्ध हो और सारे छोटे काम छोटे ही करेंगे बड़े नहीं। क्यों की समाज में सबके अपने-अपने पैरामीटर है।

उन्होंने जैन धर्म के अनुशासन, धैर्य, मर्यादाओं और जागरूकता पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला और अपने मंगल प्रवचनों में कहा कि - खैर, नतीजा यह निकला कि - किस्मत में थी नाकामी, कभी कुछ कहकर पछताए, कभी चुप रह के पछताए।

मुनि श्री ने आगे कहा कि जो आपके मोन को नहीं समझ सकता। वह आपके शब्दों को समझ पाए इसकी कोई गारंटी नहीं, क्योंकि शब्दों में जान तो तुम्हारे भावों से होती है और भाव तो मन से भी प्रकट किया जा सकते हैं।

पावन निर्मल भवन में, इस धर्मसभा के दौरान दूर-दराज़ से आएं सभी सेकड़ों श्रद्धालुओं ने मुनि श्री 108 सौम्य सागर महाराज के पाद प्रक्षालन के माध्यम से अपनी गहन श्रद्धा व्यक्त की और मुनिश्री से सदमार्ग पर चलने का आशीर्वाद प्राप्त किया और उनके महत्वपूर्ण विचारों को जीवन में उतारने का सभी श्रद्धांलुओं ने अटल संकल्प लिया।

जब शरीर अपना नहीं है, तो फिर धन, जमीन, मकान आदि हमारे अपने कैसे हो सकते हैं? जब शरीर भी छूट जाएगा, तो फिर किस चीज़ को साथ में रखेंगे?

जब हमारा शरीर ही नहीं रहेगा, तो क्या कुटुम्ब रहेगा ? स्त्री-पुरुष, माँ-बाप, बेटा-बेटी रहेंगे ? घर रहेगा ? रुपया रहेगा ? ज़मीन रहेगी ?

जब हमारा मूल शरीर भी हमारे साथ नहीं रहेगा, तो संसार की कोई भी चीज़ हमारे साथ नहीं रहेगी। शरीर सबको छोड़ना ही पड़ता है। शरीर कब छुटेगा, इसका तो पता नहीं है, पर शरीर छूटेगा, इसमें कोई संदेह नहीं है। हम संसार के नहीं हैं, संसार हमारा नहीं है। परन्तु भगवत्ता का साथ सदा रहेगा। हम इसे जानते हैं तो भी रहेगा, और न जानते हों तो भी रहेगा। हम भगवत्ता को स्वीकार करें तो भी रहेगा, और स्वीकार न करें तो भी रहेगा। ध्यान रहे कि यह सारा संसार रेखांकित/चित्रलिखित है। हमारे मन/विचार के प्रोजेक्टर पर जैसी/जितनी किरणें निकलती/बनतीं रहेंगीं, यह दृश्य भी निरंतर बनते/बदलते रहेंगें। वास्तव में इस संसार को कितना ही अपना मानें, वह हमारे साथ सदा नहीं रहेगा।

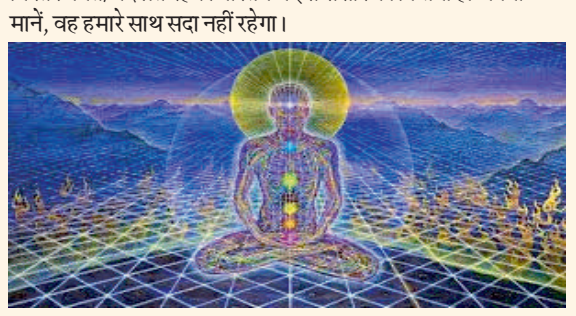

जैतून के औषधीय गुण और उपयोग

जैतून एक पेड़ है तथा इन वृक्षों की आयु सौ वर्षों से अधिक होती है। यह पारिजात कुल (ओलिआसे) की वनौषधि है। इस वृक्ष का लैटिन नाम ओलिया एउरोपेआ (Olea Europaea Linn) है जिसे अरबी में जैत और फारसी में जैतून कहा जाता है। जैतून के फलों से प्राप्त तेल को आलिव आयल (Olive Oil) अंग्रेजी में, तथा लैटिन में ओलिउम ओलीवी (Oleum Olivae) कहते हैं।

जैतून के बागी वृक्ष (बगीचे में लगाए जाने वाला) सदा हरे-भरे मध्यम आकार के तथा जंगली वृक्ष बड़े होते हैं।सारे विश्व में जैतून उत्पादन तथा इसके तेल (olive oil) की गुणवत्ता की दृष्टि से इटली का स्थान प्रथम है। जैतून उत्तरी पश्चिमी एशिया में पाया जानेवाला वृक्ष है। अब इसे अफ्रीका, केलिफोर्निया, दक्षिण अमेरिका, फ्रांस, इटली, स्पेन तथा आस्ट्रेलिया आदि में वृहद् स्तर पर उगाया जाता है। यूनान के अनेक आख्यानों में जैतून का वर्णन मिलता है। यूनान में ओलम्पिक खेल से लेकर अनेक धार्मिक अनुष्ठानों में जैतून को पवित्रता का प्रतीक माना जाता रहा है। मुख्यतः इसके तेल के लिये इसके वृक्ष लगाये हुये मिल जाते हैं। इसके बागी और जंगली दोनों प्रकार के वृक्ष पाये जाते हैं। जंगली जाति के वृक्ष अफगानिस्तान, बलूचीस्तान आदि में होते हैं।

ईसा मसीह से सत्रह सौ वर्ष पूर्व पुरातन मिश्र में जैतून के वृक्ष 'वाक' नाम से ज्ञात थे। प्राचीन यूनान एवं रोमवासियों को भी यह भलीभांति ज्ञात था, किन्तु प्राचीन भारतीयों ने इसका उल्लेख नहीं किया।

तेल निकालने की विधि

तेल निकालने के लिये फलों का संग्रह वसन्त के प्रारम्भ में करते हैं। अच्छे परिपक्व फलों को मशीन में चक्की द्वारा इस प्रकार पीसा जाता है कि गूदा तो पिस जाय, किन्तु गठली टूटने न पावे। इन पिसे हुये फलों को पुनः गोल-गोल थैलों में कस कर भर लिया जाता है तथा थैलों पर थैले एक के ऊपर एक रखकर मशीन द्वारा दबाया जाता है, जिससे गाढ़ा तेल निकल आता है। नालियों द्वारा इस तेल को हौज में संग्रहीत कर, उसमें पानी मिलाते हैं। स्वच्छ एवं शुद्ध तेल पृथक होकर पानी पर तैरने लगता है। फिर तेलीय भाग को पृथक कर लेते हैं। इसे वर्जिन आयल (Virgin Oil) कहते हैं। औषधि कार्यार्थ यही तेल उपयुक्त होता है।

उक्त प्रकार से गाढ़ा तेल निकालने के बाद जो चोया या फुजना रह जाता है, उससे प्रपीडन द्वारा दूसरे दर्जे का तेल अलग निकाला जाता है। यह तेल अन्य कार्यों के लिये उपयोग में लाया जाता है।

इस प्रकार शीत प्रपीडन द्वारा यूरोप देशीय जैतून के पके फलों से प्राप्त किया हुआ स्थिर तेल उत्तम स्वच्छ, सुनहला, हरिताभ पीत हल्की गन्धयुक्त होता है।

यूरोपीय जैतून के पके फलों से 40 प्रतिशत तक तेल निकलता है, जबकि अन्य कैलिफोर्निया, अमेरिका आदि के जैतून के फलों से मात्र 20-25 प्रतिशत तक ही तेल निकलता है।

इसके शुद्ध तेल में बिनोले का तेल, तिल तेल, मंगफली के तेल आदि का मिश्रण कर देते हैं, किन्तु इसकी विशिष्ट गन्ध एवं इसके विशिष्ट स्वाद से इसे पहचाना जा सकता है। वस्तुतः औषधि कार्य हेतु शुद्ध सही, विश्वसनीय तेल ही उपयोग में लाना चाहिए।

विकृत तेल के प्रयोग से खुजली आदि विकार हो जाते हैं, उनके निवारण के लिये शहद एवं शर्बत बनफ्शा को उपयोग में लाना चाहिये। कच्चे फलों से या सड़े फलों से निकाला गया तेल रूक्ष होने से उक्त विकारों को उत्पन्न कर देता है।

औषधीय गुण और उपयोग

बाह्य प्रयोग से यह त्वचा पर स्नेहन, मृदुकर शोथ विलयन और संशमन कर्म करता है।

जैतून का तेल शरीर पर मर्दन करने से अंग-प्रत्यंगों को शक्ति प्रदान करता है।

निर्बल व्यक्तियों विशेषकर निर्बल एवं कृश शिशुओं में जैतून तेल की शरीर पर मालिश करने से वे पुष्ट बनते हैं।

व्रण शोधन रोपण हेतु इसे मरहमों में मिलाकर लगातेहैं।

सौन्दर्य वर्धनार्थ इसे विविध रूप से उपयोग में लाया जाता है।

जीर्ण मलावरोध में इसे बस्ति (एनीमा) के रूप में प्रयोग करने से जैतून का तेल आंतों में कठोरता के साथ चिपके मल को ढीलाकर बाहर निकालता है।

अर्थ, कृमि, आन्त्रक्षत एवं उदरशूल में भी इस तेल की वस्ति उपयोगी है। अन्तः प्रयोग से यह शरीर को पुष्ट बनाता है।

गद-विदार, चिरकालीन विबन्ध, आंतों की रूक्षता आदि में इसकी अधिक मात्रा प्रयुक्त की जाती है।

वृक्काश्मरी तथा पित्ताशय की अश्मरी को निकालने के लिये जैतून का तेल विशेषतया उपयोग में लाते हैं।

संखिया जैसे विष के निवारण में यह लाभप्रद है।

शोथ, वेदना एवं दाह युक्त रोगों में इसका बाह्याभ्यन्तर प्रयोग हितकारी सिद्ध हुआ है।

जैतून का तेल 95 प्रतिशत तक पचकर आंतों में शीघ्र अवशोषित हो जाता है।

इन तत्वों की न्यूनाधिक मात्रा कई रोगों को जन्म देती है। ऐसा ही एक रक्त में पाया जाने वाला तत्व है कोलेस्टरोल, जो शरीर के लिये लाभदायक होते हुये भी न्यूनाधिक अवस्था में प्राणघातक भी हो सकता है। एक 70 किलोग्राम भार वाले स्वस्थ मनुष्य के रक्त में कोलेस्टरोल की मात्रा 4-6 ग्राम होती है। रक्त की इसकी स्वाभाविक मात्रा 100 मि.ली. स्वस्थ रक्त में 150 से 250 मि.ग्राम होती है। अतः यह मात्रा 150 मि.ग्रा. से कम नहीं होनी चाहिये तथा 300 मि. ग्रा. से अधिक नहीं होनी चाहिए। कोलेस्टरोल शरीर में स्वयं स्वतन्त्र रूप से बनता है। इतना अवश्य है कि प्रतिदिन के भोजन में यदि असंतृप्त वसाम्ल (Unsaturated Fatty Acids) लिये जायें तो कोलेस्टरोल की मात्रा अवश्य कम हो जाती है, जो अधिक स्थायी है। फिर यदि उसके साथ में कोलेस्टरोल युक्त भोजन किया भी जाये तो भी कोलेस्टरोल की मात्रा रक्त में नहीं बढ़ती है। असंतृप्त वसाम्ल जैतून के तेल, सूरजमुखी के तेल आदि में रहता है। अतएव चिकित्सक हृदय के लिये उपयोगी तेलों में जैतून के तेल को प्राथमिकता देते हैं।

उपयोग

आग से जलने

जैतून के तेल से आधा भाग चूने का पानी मिलाकर घोटकर लगाने से जलन मिटती है तथा घाव ठीक होते हैं।

त्वचा का रूखापन

रूखी त्वचा में स्निग्धता तथा चमक लाने के लिये जैतन के तेल में कच्चा दूध मिलाकर लगायें। जैतून तेल और शहद मिलाकर मालिश करना भी लाभदायक है फिर पानी में कुछ जैतून तेल डालकर स्नान करने से त्वचा का रूखापन दूर होकर उसमें निखार आता है।

नाखूनों विकृती

यदि नाखून कमजोर, फटे हुये या विकृत हैं तो एक कटोरी में जैतून के तेल को कुछ गरम कर उसमें आधा घन्टे नाखूनों को डुबाये रखें।

होठों का फटना

होठों में कोई तेल ग्रन्थि नहीं होती अतः इन्हें विशेष स्निग्धता की आवश्यकता होती है। सर्दियों में ये प्रायः रूक्ष होकर फट जाते हैं अतः हाथों पर जैतून का तेल लगावें साथ में अपनी नाभि में भी इस तेल को लगायें।

स्तनों को सुडौल बनाएं

स्तन के अग्रभाग के आसपास धीरे धीरे जैतून के तेल से मालिश करने पर स्तनों पर उभार आता है वे अधिक आकर्षक तथा सुडौल बनते हैं। जिन स्त्रियों के स्तनों की सुडौलता खत्म होकर उनमें ढीलापन आ गया हो उन्हें जैतून के तेल में अनार के छिलके और गंभारी की छाल का बारीक चूर्ण मिलाकर स्तनों पर गाढ़ा उबटन करना चाहिये। यह लेप लगभग एक घन्टे तक रहना चाहिये इसके बाद स्नान कर लें। एक-दो माह तक यह प्रयोग निरन्तर जारी रखना चाहिए।

कील-मुंहासे

जैतून के तेल को थोड़ा गरम कर उसमें आधा भाग नीबू रस मिलाकर धीरे धीरे मुंह पर लगाना चाहिये। कुछ समय पश्चात मुंह को धोना चाहिए।

एड़ी फटना

कई स्त्री पुरुषों की एड़ियों में दरार पड़ जाती हैं। यह सर्दियों में विशेष फटती हैं। उस समय जैतून के तेल में गुड़ या बड़ का दूध मिलाकर लगाने से लाभहोता है।

त्वचा की झुर्रियां

जैतून के तेल में नीबू का रस और गुलाबजल मिलाकर मालिश करनी चाहिए।

वात रोग

आमवात, गृध्रसी (सायटिका) आदि रोगों की अंग वेदना में कवोष्ण जैतून तेल की मालिश कर सेक करना चाहिये।

बालों की जड़ों को मजबूत बनाएं

बालों की जड़ों को मजबूत करने के लिए इस तेल की बालों की जड़ों में मालिश करने के पश्चात्गुनगुने जल में कपड़े को भिगोकर फिर उसे निचोड़कर बालों पर आधा घन्टे तक बांधे रखना चाहिये।

बालों को घने और चमकयुक्त बनाने के लिये जैतून के तेल में एरण्ड तेल मिलाकर मालिश करने के पश्चात आंवले, सिकाकाई अरीठा के औटाये पानी से बालों को धोना चाहिए। आवश्यकतानुसार इस मिश्रण में थोड़ा बादाम तेल या नारियल का तेल भी मिलाया जा सकता है।

शक्तिवर्धक

इस तेल को दूध में मिलाकर या मौसम्मी, पपीता के रस में मिलाकर सेवन करने से दुर्बलता दूर होकर शरीर पुष्ट बनता है। इस कार्य के लिये रुचि के अनुसार रस की स्वल्प मात्रा ही देनी चाहिये।

क्षय रोगियों को मछली के तेल के स्थान पर इसे ही देना चाहिये। इस तेल को सेवन करने में किसी को असुविधा हो तो इसे बबूल के गोंद चूर्ण में मिश्रित कर या कैपसूल में रखकर लेना चाहिए।

आमाशय का घाव

आमाशय व्रण के रोगियों में इसके प्रयोग से शक्ति मिलती है। इस तेल में शतावरी चूर्ण या शतावरी घृत मिलाकर सेवन करना अधिक लाभकारी है। इस तेल का प्रयोग महास्रोत में स्नेहन के लिये करना चाहिये। इससे जीर्ण मलावरोध के रोगियों को पूर्ण लाभमिलता है। किसी विष के प्रयोग से यदि पेट में जलन एवं वेदना अधिक होती हो तो भी इसका प्रयोग हितावह है।

पित्ताशय की पथरी

इस पथरी (अश्मरी) के मुख्य घटक कोलेस्टेरीन के विलयन तथा तज्जन्य शूल के निवारणार्थ इस तेल का प्रयोग बहुत उपयुक्त समझा गया है।

वैद्य श्री गिरधारी लाल मिश्र तेजपुर ने इस पर अपना अनुभव सुधानिधि अप्रेल 1997 के अंक में इस प्रकार लिखा है-रोगी सुबह का नाश्ता तथा दोपहर का भोजन करे। दोपहर के भोजन के बाद उसे कुछ खाने को न दें। केवल पानी इच्छानुसार पिया जा सकता है परन्तु पानी के अतिरिक्त कुछ भी न पिलावें। रात में लगभग सात बजे जैतून का तेल चार चम्मच पीवें और पन्द्रह मिनट बाद एक चम्मच नीबू का रस पीवें। फिर 15 मिनट बाद पुनः जैतून का तेल चार चम्मच और इसके 15 मिनट बाद पुनः नीबू का रस एक चम्मच पीवें। इस प्रकार 100 मि. ली. तेल पी लें। कोई कोई रोगी 50 मि.लि. ही तेल पी पाते हैं या इससे कम पीने पर ही उल्टी करने लगते हैं। किसी को इसके स्वाद से तो किसी को इसकी गन्ध से उल्टी होने लगती हैं। नीबू का रस उल्टी को रोकने के लिये ही प्रमुख रूप से दिया जाता है। इस प्रकार तीन से सात दिनों के अन्दर पित्ताशय की अश्मरी की छोटी-बड़ी साइज के अनुसार 300 से 500 मि.ली. तक पिलाते हैं। सुबह मल के साथ जैतून का तेल मल में घुलकर निकलेगा और उसके साथ पथरी के हरे रंग के टुकड़े भी निकल जायेंगे।

विशुद्ध जैतून तेल 2 चम्मच, नीबू का रस एक चम्मच, जल 8 चम्मच मिलाकर रात में सोते समय एक दिन छोड़कर देते रहें। साथ में अन्य अश्मरीहर योग दें।

जैतून के फलों का मुरब्बा मृदु रेचक है। इसे गरम पानी के साथ खिलाने से दस्त खूब लगते हैं। फलों का अचार भूख बढ़ाता है किन्तु कुछ विबन्ध कारी भी है। सिरके के साथ इसे सेवन करने से यह शीघ्र पच जाता है।

जैतून के फल का अचार

बागी जैतून के कच्चे फलों को चूना और राख मिश्रित पानी में डुबोकर कुछ समय तक रखते हैं, जिसे उनकी कड़वाहट बहुत कुछ दूर हो जाती है। फिर उन्हें बर्नियों में नमक एवं सुगन्धित द्रव्य मिश्रित जल के साथ भर देते हैं। 3 से 4 दिनों में अचार तैयार हो जाता है।

जैतून के पत्र रस कान में डालने से कर्णशूल (कान दर्द), कर्णपूय (कान से पस बहना) एवं कर्णशोथ (कान की सूजन) दूर होता है।कान में फुन्सी हो या बहरापन हो तो पत्र स्वरस में बराबर शहद मिलाकर कुछ गरम कर कान में डालना चाहिये।

बच्चों की आंखों के टेढेपन को मिटाने हेतु पत्र रस का नस्य देते हैं।

व्रण रोपण (घाव भरने) हेतु पत्र चूर्ण को शहद में मिलाकर लगाना चाहिए।

अधिक पसीना आने पर जंगली जैतून को सुखाकर पीसकर शरीर पर मलना चाहिये।

जैतून की गोंद

जैतून की गोंद उष्ण एवं रूक्ष होता है। यह जुकाम, सर्दी, नजला व खांसी को दूर कर आवाज को सुधारता है। इसकी सेवनीय मात्रा 3-5 ग्राम है।

गर्भाशय शोथ निवारणार्थ इसे योनिमार्ग में रखते हैं।

दाद पर इसे मलहम में मिलाकर लगाना चाहिये।

इसे कीड़ा खाये दांत में भर देने से बहुत लाभ होता है।

"राहुल गांधी का चुनावी एटम बॉम्ब"

विजय सहगल

जब से भारत के चुनाव आयोग ने बिहार चुनाव के पूर्व, चुनाव सूची मे विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य आरंभ किया है, देश के सभी विपक्षी दलों की तोपों के मुंह चुनाव आयोग की तरफ मुड़ गये। कॉंग्रेस के युवा नेता ने तो एक कदम आगे बढ़ 1 अगस्त को चुनाव आयोग पर सरकार के पक्ष मे वोट चोरी का आरोप लगा कर, चुनाव आयोग को खुल्लम खुल्ला धमकाते हुए इस चोरी के पुख्ता प्रमाण, सबूत और साक्ष्य रूपी एटम बॉम्ब फोड़ने की चेतावनी दी। उन्होने वर्तमान मे हिंदुस्तान मे चुनाव आयोग नाम की कोई चीज के अस्तित्व को नकारते हुए, आगाह किया कि उनके धमाके के बाद तो चुनाव आयोग के अस्तित्व ही नज़र नहीं आयेगा। राहुल गांधी पूर्व मे भी इस तरह के सनसनी खेज वक्तव्य देते रहे हैं। विदित हो कि 8 नवंबर 2016 मे मोदी सरकार द्वारा लागू की गयी नोट बंदी पर भी राहुल गांधी ने 9 दिसम्बर 2016 मे अपने उत्तेजक वक्तव्य मे, लोक सभा मे बोलने के मौका देने पर भूकंप आने की चेतावनी दी थी और जब वे लोक सभा मे बोले तो, अपने वक्तव्यों के भूकंप से धरती तो दूर, एक तिनका भी नहीं हिला सके। उनके सनसनी खेज ₹एटम बॉम्बर₹ के वक्तव्य पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने चुटकी लेते हुए सही ही कहा कि यदि राहुल गांधी के पास सौ प्रतिशत पुख्ता सबूतों का ₹एटम बमर₹ हैं तो उसका परीक्षण तुरंत करिए और सारे प्रमाण देश के सामने रखिये। लेकिन सच्चाई यह हैं कि न तो उनके पास कोई तथ्य हैं, न सबूत। सनसनी फैलाना उनकी पुरानी आदत रही है।

राहुल गांधी ने चुनाव आयोग के अधिकारियों को डराते और धमकाते हुए कुछ उसी लहजे मे कहा जैसे नरेंद्र मोदी ने पाकिस्तानी आतंकवादियों को चेताते हुए कहा था। उन्होने चुनाव आयोग के अधिकारियों से कहा, जो भी ये काम कर रहे है, टॉप से बॉटम तक, याद रखिये हम आपको छोड़ेंगे नहीं! ये देश के खिलाफ साजिश है। उन्होने कहा कि आप रिटायर्ड हों या कहीं भी हों, हम आपको ढूंढकर निकाल लेंगे! देश की सबसे पुराने दल कॉंग्रेस के नेता द्वारा, देश की संवैधानिक संस्था के अधिकारियों के विरुद्ध इस तरह की भाषा का प्रयोग करना करना उचित है? वहीं दूसरी ओर चुनाव आयोग ने कहा, कि राहुल गांधी चुनाव आयोग पर बेबुनियाद आरोप लगा रहे हैं। आयोग के कर्मचारियों को धमकाने वाली ये भाषा निंदनीय है। आयोग ने कहा कि वह ऐसे गैर जिम्मेदाराना बयानों को नज़र अंदाज़ करता है और निष्पक्ष व पारदर्शी रूप से अपना काम सतत रूप से करता रहेगा। आयोग ने इस बात का भी उल्लेख किया कि उसके द्वारा 12 जून को भेजा गया मेल और पत्र के प्रतिउत्तर अब तक अप्राप्त है। कॉंग्रेस या राहुल गांधी द्वारा आयोग को कभी कोई शिकायत नहीं की गयी।

तीन-तीन प्रधानमंत्रियों के घर चाँदी की चम्मच ले कर पैदा हुए माननीय राहुल गांधी अब तक भारतीय लोकतन्त्र और भारतीय मतदाताओं की ताकत और मिजाज को शायद नहीं समझ पाये? इसलिये ही राहुल गांधी ने राजधानी दिल्ली मे कॉंग्रेस के वार्षिक कानूनी सम्मेलन को संबोधित करते हुए चुनाव आयोग पर 2014 के गुजरात विधान चुनाव पर सवाल उठाते हुए कहा कि, किसी एक पार्टी (भाजपा) की भारी मतों से विजय का रुझान शक पैदा करता हैं। शायद उन्हे स्मरण नहीं कि आपात काल के बाद जिस कॉंग्रेस की 1977 लोक सभा चुनाव मे सदस्यों की संख्या 350 से

घट कर 153 रह गयी थी उन्ही श्रीमती इंद्रा गांधी को 1980 मे मतदाताओं ने भारतीय नागरिकों पर, आपातकाल मे किए गये तानाशाही पूर्ण रवैये को भुला कर उन्हे फिर सत्ता सौंपी। ठीक इसी तरह भारत के ये मतदाता ही थे जिन्होने, श्रीमती इन्दिरा गांधी की नृशंस हत्या के बाद राजीव गांधी से सहानभूति रखते हुए उनकी सरकार को दो तिहाई से भी अधिक सीटें (404) देकर कॉंग्रेस को सत्ता सौंपी। तब किसी नेता या दल ने कॉंग्रेस की विजय पर कोई शक, संशय या संदेह व्यक्त नहीं किया, आज राहुल गांधी गुजरात और अन्य प्रदेश के उन्ही मतदाताओं पर शक व्यक्त कर सवाल उठाते हैं जो न्यायोचित प्रतीत नहीं होता।

चुनाव आयोग पर मिथ्या आरोप लगाने मे कॉंग्रेस ही नहीं बिहार की राजद के नेता तेजस्वी यादव भी पीछे नहीं रहे। शनिवार, 2 अगस्त को जब चुनाव आयोग ने ड्राफ्ट वोटर लिस्ट प्रकाशित की तो उन्होने एक सार्वजनिक कार्यक्रम मे चुनाव आयोग पर वोटर लिस्ट मे अपना नाम न होने का गंभीर आरोप लगाते हुए सवाल किया कि अब वे कैसे चुनाव लड़ेंगे? जब लिस्ट से राजद के मुख्यमंत्री दल के प्रत्याशी का नाम हटाया जा सकता है तो जनसमान्य के साथ क्या होगा? लेकिन कुछ ही समय बाद ही चुनाव आयोग ने तेजस्वी यादव के मिथ्या आरोप के दावे का खंडन करते हुए मतदाता सूची क्रमांक 416 मे उनके नाम होने की पुष्टि की। तेजस्वी यादव ने प्रेस कॉन्फ्रेंस मे जिस एपेक संख्या दर्ज़ कर, चुनाव आयोग पर अपना नाम मतदाता सूची मे न होने का आरोप लगाया था उस एपेक संख्या के आधार पर राजनैतिक विरोधियों ने उन पर दो मतपत्र रखने के आरोप लगाते हुए जांच की मांग कर दी और तेजस्वी यादव पर ₹होम करते हाथ जलना₹ वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया। विदित हो कि दो मतदातापत्र रखना कानूनन अपराध है।

चुनाव के दौरान राजनैतिक दलों द्वारा एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाना स्वाभाविक हैं लेकिन देश की चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्थाओं पर निरर्थक, बेबुनियाद और मिथ्या आरोप लगाना उचित नहीं। चुनाव आयोग जैसी संस्था की ये कानूनी और नैतिक ज़िम्मेदारी हैं कि वो देश मे स्वतंत्र, निष्पक्ष और पारदर्शी चुनाव कराना सुनिशिचित करे। इस हेतु चुनाव आयोग द्वारा विशेष गहन पुनरीक्षण का कार्य करने पर सुप्रीम कोर्ट ने भी अपनी सहमति प्रदान कर दी ताकि निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनाव की प्रक्रिया सम्पन्न की जा सके। इसलिये ये देश के सभी नागरिकों और राजनैतिक दलों की भी ज़िम्मेदारी है कि वे चुनाव आयोग को इस हेतु अपना सहयोग प्रदान करें।

रक्षाबंधन में सेवा, समर्पण और अपनत्व के अद्भुत बंधन है और इसका अपना एक महत्व है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा द्वारा आज प्रदेश कार्यालय में रक्षा बंधन त्योहार का आयोजन किया गया जिसमे प्रदेश भाजपा महिला मोर्चा अध्यक्ष ऋचा पांडे मिश्रा सहित अन्य मोर्चा पदाधिकारियों ने दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा को हर्षोल्लास के साथ राखी बांधी।

इस मौके पर महिला मोर्चा की प्रभारी श्यामबाला, मोर्चा महामंत्री प्रियल भारद्वाज, सरिता तोमर और वैशाली पोद्दार सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी वीरेंद्र सचदेवा को राखी बांधी। इस मौके पर विभिन्न स्कूल से आई छात्राओं ने भी दिल्ली भाजपा अध्यक्ष को राखी बांधी।

स्कूल की छात्राओं के द्वारा "बीजों" की राखी भी अध्यक्ष को बांधी गई। महिला मोर्चा की बहने गीत संगीत, मिठाइयों के साथ वीरेंद्र सचदेवा को राखी की शुभकामनाएँ दी।

वीरेंद्र सचदेवा ने मीडिया से बात करते हुए सभी को रक्षाबंधन की अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए कहा कि रक्षाबंधन केवल एक पर्व नहीं, यह हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों की जीवंत अभिव्यक्ति है। उन्होंने कहा कि आज दिल्ली भाजपा महिला मोर्चा की हमारी बहनों ने रक्षासूत्र बाँधकर जो स्नेह, आशीर्वाद और आत्मीयता प्रदान की, वह वास्तव में अमूल्य है। मैं इस भावपूर्ण आयोजन में सम्मिलित होकर स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ।

सचदेवा ने कहा कि यह राखियाँ केवल कलाई पर नहीं, दिल पर बंधती हैं और ये सेवा, समर्पण और अपनत्व के अद्भुत बंधन है और इसका अपना एक महत्व है।

उन्होंने कहा कि रक्षाबंधन का त्योहार एक पवित्र और भावनात्मक त्योहार है, जो भाई-बहन के अटूट प्रेम, विश्वास और सुरक्षा के बंधन का प्रतीक है। यह पर्व न केवल पारिवारिक संबंधों को मज़बूत करता है, बल्कि समाज में आपसी विश्वास, प्रेम और समर्पण की भावना को भी बढ़ावा देता है।

ऋचा पांडे मिश्रा ने कहा कि रक्षा बंधन के पावन पर्व को महिला मोर्चा दिल्ली की सभी 256 सेवा बस्तियों में मनाएगा। हर सेवा बस्ती एवं झुग्गी बस्ती में मिठाई खिला कर, राखी बांधी जाएगी। इस के निमित पूरी दिल्ली में 256 जगहों पर झुग्गी प्रवास होगा एवं भाजपा के झुग्गी विस्तारकों एवं पालकों के साथ महिला मोर्चा की बहने धूम धाम से यह पर्व मनाएँगी।

'घिच पिच' सिनेवेस्टर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में शानदार विश्व प्रीमियर के बाद, 8 अगस्त को भारतीय सिनेमाघरों में रिलीज़ होगी

मुख्य संवाददाता

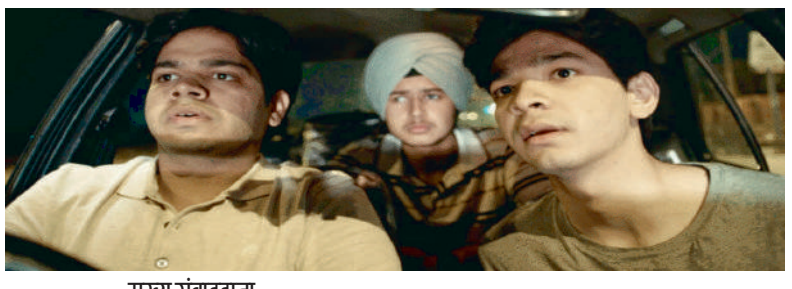

इस साल की शुरुआत में प्रतिष्ठित सिनेवेस्टर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल (CIFF) में शानदार विश्व प्रीमियर और 9.7 की असाधारण IMDB रेटिंग के बाद, घिच पिच, एक रोमांचक नई आयु-आधारित ड्रामा, 8 अगस्त, 2025 को भारत के सिनेमाघरों में रिलीज़ होने के लिए तैयार है। जनता की भारी मांग पर। 1990 के दशक के उत्तरार्ध के चंडीगढ़ में स्थापित, ₹घिच पिच₹ तीन किशोर लड़कों की मार्मिक कहानी कहती है जो बड़े होने, दोस्ती, विद्रोह और अपने पिता के साथ तनावपूर्ण रिश्तों के जटिल भावनात्मक परिदृश्य से गुज़रते हैं। समृद्ध वातावरण और पुरानी यादों से सराबोर, यह फिल्म एक ऐसे शहर और एक पीढ़ी को जीवंत रूप से जीवंत करती है जो पहचान, अपेक्षाओं और दबी हुई भावनाओं से जूझ रही है। तकनीकी उद्यमी हैं, जिन्होंने दिल्ली स्थित एक स्वतंत्र प्रोडक्शन हाउस बरसाती फिल्म्स की स्थापना से पहले अपना सफल सिकोइया-समर्थित स्टार्टअप अमेज़न को बेच दिया था। कलाकार की बात की जाए तो शिवम कक्कड़ (गौरव अरोड़ा) कबीर नंदा (गुरप्रीत सिंह) आर्यन राणा (अनुराग बंसल) नितेश पांडे (राकेश अरोड़ा) गीता अग्रवाल शर्मा (ऋतु अरोड़ा) सत्यजीत शर्मा (नरेश बंसल) सब ने खूबसूरती से अपने रोल को निभाया है। फिल्म इस बात पर प्रकाश डालती है कि कैसे पितृसत्तात्मक अपेक्षाएँ, पीढ़ीगत आघात और बदलते सामाजिक भूमिकाएँ पुरुषत्व और भावनात्मक अभिव्यक्ति को आकार देती हैं।

संगीत की बात की जाए तो फिल्म के गीत रोहित शर्मा (कश्मीर फाइल्स, एस्पिरेंट्स) द्वारा रचित हैं और गीत प्रशंसित गीतकार शैली (देव डी, मनमर्जियां) द्वारा लिखे गए हैं। भावपूर्ण पृष्ठभूमि संगीत ऋत्विक डे द्वारा रचित है। सैयद मुबाशशिर अली ने फिल्म का संपादन किया है। अली दिल्ली स्थित एक फिल्म निर्माता भी हैं और वर्तमान में उत्तराखंड के खानाबदोश परिदृश्य पर आधारित फिल्म चिट्ठी चोर का निर्देशन कर रहे हैं।

ट्रंप का ट्रंपेट और दर्द का रिश्ता

इष्ट देव सांकृत्यायन

अमेरिका की अपनी अर्थव्यवस्था की बात करें तो २०२५ के लिए उसका प्रोजेक्टेड रीअल जीडीपी ग्रोथ रेट केवल 1.8 प्रतिशत है। अमेरिका आज भी कई बार जिसके गुलाम की तरह व्यवहार करता है, उस यूनाइटेड किंगडम का ग्रोथ रेट केवल 1.1 प्रतिशत रह गया है। रशियन फेडरेशन का 1.5, जापान का 0.7, जर्मनी का 0.4 और चीन का 4 प्रतिशत है। इन हालात में बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में अकेला भारत है जिसका प्रक्षेपित वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद वृद्धि दर ६.२ प्रतिशत है। भारत विश्व की पाँचवीं से चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया। यहाँ तक अमेरिका किसी तरह पचा लेता अगर भारत अमेरिका का पिछलग्गू बना रहता लेकिन ऐसा नहीं हुआ।

२014 के बाद के भारत ने अमेरिका को हर तरह से उसकी औकात बताई है और सीधे न सही तो प्रकारांतर से उसकी हदों में रहने के लिए कहा है। किरना हिल्स पर निशाना साधकर भारत ने केवल पाकिस्तान की छाती ही नहीं, अमेरिका के गाल पर भी तमाचा मारा है। सबसे हाइटेक, एडवांस और कटिंग एज बताए जाने वाले लड़ाकू विमान एफ ३५ को जिस तरह केरल में उतारा गया और अमेरिका व यूके के इंजीनियर लाख कोशिशों के बावजूद उसे साबुत उड़ाकर नहीं ले जा सके, आखिरकार महीनों वहाँ खड़े रहने के बाद जिस तरह उसे टुकड़ों-टुकड़ों में काट-काट कर ले जाना पड़ा, वह अमेरिका के गाल पर भारत का दूसरा तमाचा था। इस सब के बाद ट्रंप ने अगर भारत को मरी हुई अर्थव्यवस्था कहा है, उस अर्थव्यवस्था को जो पिछले 11 साल में 10वें नंबर से सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते चौथे नंबर की दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गई है तो यह बयान किसी राष्ट्राध्यक्ष की चिंता कम और हारे हुए जुआरी की कुंठा ज्यादा जाहिर करता है। यह बात अब जगजाहिर है।

ट्रंप की इस निहायत वाहियात बात का अनुमोदन वह राहुल गांधी कर रहे हैं जिनकी अपनी सरकार अमेरिका के वीजा को इतनी बड़ी चीज मान बैठी थी कि उसके लिए भारत की संप्रभुता गिरवी रख आई थी। बराक ओबामा के राष्ट्रपति रहते मोदी को अमेरिकी वीजा न दिए जाने का जो अनुरोध किया गया था, उस पर कुल ६5 सांसदों के हस्ताक्षर बताए गए थे और उनमें अधिकतर इनके ही थे। दो-चार बाहरी लोगों में से एक सीताराम येचुरी ने तो मना कर दिया था।

नरेंद्र मोदी सबसे पहले भारत के नागरिक हैं। उन्होंने भारत में अगर कोई अपराध किया तो उसके लिए उन्हें भारत के संविधान और उसके अधीन बने कानून के अनुसार भारत में ही दंडित किया जाना चाहिए था न कि अमेरिका या रूस या चीन में। मोदी कहीं भाग नहीं गए थे और न भागने वाले ही थे। शायद उन्होंने अमेरिकी वीजा के लिए अप्लाई तक नहीं किया था। तब तक तो अमेरिका जाने की उनकी कोई योजना भी नहीं थी।

नरेंद्र मोदी कोई छुपकर भी नहीं रह रहे थे। गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर रहते हुए रोज सरकारी बैठकों में भाग लेते थे। सारे कामकाज देखते थे। कांग्रेस के सारे मुख्यमंत्रियों से बहुत अच्छे मुख्यमंत्री साबित हो रहे थे। जनसभाएँ भी करते थे। उनके खिलाफ गढ़े गए कांग्रेसी मुकदमे कोर्ट में थे और कोर्ट उन पर सुनवाई कर रही थी। ज्यादातर तारीखों पर मोदी या उनका प्रतिनिधि हाजिर था। फिर समस्या क्या थी? अपने देश के नागरिक को अपमानित करने के लिए राहुल जी और उनकी सरकार दूसरे देश का सहारा क्यों ले रही थी? ऐसी टुच्ची हरकत क्यों की गई? और वह भी वीजा जैसी मामूली चीज के नाम पर?

क्योंकि राहुल गांधी और उनके गुर्गे मोदी को कंट्रोल नहीं कर पा रहे थे। नरेंद्र मोदी पूरी कांग्रेस के लिए अनकंट्रोलेबल हैं। यह अब कहने की जरूरत नहीं रही। देश का बच्चा-बच्चा जानता है। केवल मीडिया में स्वतंत्र या निष्पक्ष बताए जाने वाले कुछ अनुगृहीत मीडियाकरों की बात छोड़ दी जाए तो भारत के बच्चे-बच्चे की दृष्टि में राहुल गांधी भारतीय राजनीति के मिस्टर बीन बनकर रह गए हैं। दुनिया के स्तर पर यही छवि डोनल्ड जे ट्रंप की बन चुकी है। आज जो राहुल गांधी ट्रंप जैसे बददिमाग, दीवालिया और विफल उद्यमी द्वारा भारत की अर्थव्यवस्था को मृत अर्थव्यवस्था कहे जाने पर इतने प्रसन्न हो रहे हैं, उसका कारण भी यही है। उनका दर्द ट्रंप के दर्द से मिलता है। दोनों के बीच दर्द का एक रिश्ता बन गया है।

जीओ पॉलिटिक्स को समझने वाले जानते हैं कि नरेंद्र मोदी आज ट्रंप के लिए अनकंट्रोलबल हो चुके है। नरेंद्र मोदी के अनकंट्रोलबल होने का अर्थ है भारत का अनकंट्रोलबल होना। मोदी ने वर्षों से अमेरिकी फैसलों को धता बता कर ये बताया है कि हम अपने फैसले खुद करते हैं। हमारे रास्ते में तुम न आओ। तुम उतना ही मतलब रखो जितना एक देश को दूसरे देश से रखना चाहिए।

ट्रंप के लिए ये बर्दाश्त के बाहर है। मौलिक रूप से बदमिजाज अमेरिका भूल नहीं सकता कि भारत वही देश है जिसके नेताओं के लिए अमेरिकी वीजा जैसी मामूली चीज इतनी बड़ी उपलब्धि थी कि वह इसका उपयोग अपने एक लोकप्रिय राजनेता को बेवजह अपमानित करने के लिए कर रहा था। आज वह भारत उसकी धमकियों के बावजूद रूस से कच्चा तेल खरीदता है। एक झटके में उसके खटारा लड़ाकू विमान का सौदा रद कर देता है। उसके कबाड़ा अस्त्र-शस्त्र खरीदने से मना कर देता है। टैरिफ की उसकी धमकियाँ धरी रह जाती हैं। वह अपने लिए पहले से ही कई बाजार तलाश कर बैठा है। यह सब ट्रंप को वास्तव में डरा रहा है। यह डर उनके अपने देश के भीतर भी दिख रहा है।

ठीक इसी तरह नेशनल हेराल्ड और यूके की नागरिकता जैसे मसले खुलने, कर्नाटक और हिमाचल में कांग्रेस सरकारों की विफलता, लगातार तीसरी बार भी लोकसभा चुनाव में बहुमत के बारे में सोचने तक के लायक न बन पाना और चौथी बार के लिए भी कोई आसार न दिखाई देना, यह सब राहुल गांधी को डरा रहा है। यह डर भी एक प्रकार का दर्द है और फिर से यह दर्द का एक और रिश्ता बन रहा है।

राहुल जी दर्द का अपना हर रिश्ता शौक से निभाएं लेकिन दर्द की यह रिश्तेदारी निभाने में इतना खयाल तो रखें कि विरोध नरेंद्र मोदी का करें, भाजपा का करें, वामपंथियों की तरह भारत का अशुभचिंतक होने की अपनी छवि पुख्ता न कर लें। हिंदूविरोधी होने की छवि तो राहुल और कांग्रेस ही नहीं, अपने को सेकुलर कहने वाले सारे दल बना चुके हैं। दूसरे देशों में जो होता हो, वो हो, भारत में सेकुलर होने का अभिप्राय हिंदुओं का दुश्मन होना भर रह गया है। तथाकथित सांप्रदायिक एवं लक्षित हिंसा निरोधक विधेयक जिसके सारे प्रावधान देश भर के हिंदुओं को केवल धर्मांतरण के लिए मजबूर करने वाले और उनसे आत्मरक्षा का अधिकार तक छीन लेने वाले थे, ने सबके मन में यह बात पुख्ता कर दी। रही-सही कसर एटीएस अधिकारियों के खुलासे निकाल दे रहे हैं। राहुल जी अब कम से कम भारत का दुश्मन होने की छवि पुख्ता करने पर न तुल जाएँ। यह न तो राहुल जी के लिए ठीक होगा, न कांग्रेस के लिए और न ही भारत के लिए।

विपक्ष के तौर पर देश को एक पार्टी की जरूरत हमेशा रहेगी। मजबूत विपक्ष न होने का ही परिणाम इमरजेंसी थी। कोई सरकार दुबारा तानाशाह न बने, इसके लिए भारत को एक मजबूत विपक्ष की आवश्यकता आज भी है लेकिन वह विपक्ष रचनात्मक विपक्ष होना चाहिए, जनता के पक्ष में सही मुद्दे उठाने वाला विपक्ष। सही को गलत कहने और गलत का अनुमोदन करने वाले विपक्ष की आवश्यकता किसी भी देश को नहीं होती। क्या राहुल गांधी से यह उम्मीद की जा सकती है? अमेरिका तो खैर, ढलान की ओर बढ़ ही चुका है।

इंदरजीत मदान: एक उद्यमी से कवि तक का सफर, दिलों को छू लेने वाली रचनाओं के साथ एक नई पहचान

मुख्य संवाददाता

एक प्रेरणादायक यात्रा में जहाँ व्यापारिक कौशल और कला की संवेदनशीलता एक साथ मिलती हैं, वहीं इंदरजीत मदान एक ऐसा नाम बनकर उभरे हैं जो अब न केवल व्यवसाय जगत में बल्कि संगीत और कविता की दुनिया में भी अपनी खास पहचान बना रहे हैं। यूके में स्थित यह सफल उद्यमी, जो ड्राई क्लीनिंग उद्योग में प्रतिष्ठित नाम हैं, आज अपने सैकड़ों काव्य-रचनाओं और भावनात्मक गीतों के माध्यम से दुनिया भर के दिलों को छू रहे हैं।

₹ऐ ज़िंदगी₹ और अपनी माँ को समर्पित एक भावपूर्ण गीत, इन दोनों रचनाओं ने Spotify और YouTube जैसे मंचों पर काफी लोकप्रियता हासिल की है।

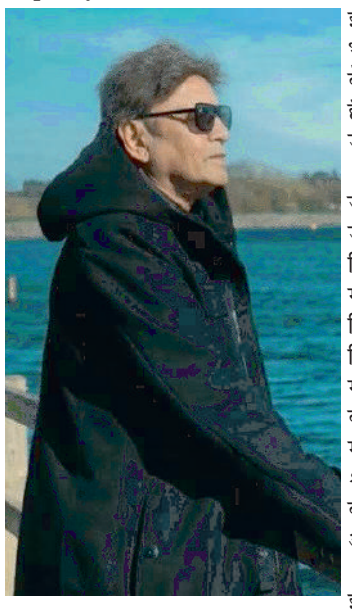

इंदरजीत मदान की कविताओं में भावनाओं की गहराई और जीवन के अनुभवों की सच्चाई झलकती है, जो श्रोताओं के दिलों में सीधे उतर जाती है।

ऐ ज़िंदगी एक ऐसा गीत है जो जीवन की कठिनाइयों के बीच भी उसकी खूबसूरती और जिजीविषा को दर्शाता है। इस गीत का वीडियो यूके में प्रसिद्ध निर्देशक हैरी आनंद द्वारा फिल्माया गया है, जो इसकी गहराई और भावनात्मक प्रभाव को और बढ़ाता है। वहीं, उनकी माँ को समर्पित गीत एक मार्मिक श्रद्धांजलि है, जो हर उस इंसान को छू जाता है जिसने किसी अपने को खोया है।

इन दोनों गीतों को मोहम्मद इज़हार ने सुरों में ढाला है, जिनकी भावपूर्ण गायिकी और संगीतमय प्रस्तुति ने इंदरजीत मदान की कविताओं को और भी जीवंत बना दिया है।

यूके में रहते हुए, इंदरजीत मदान अपने परिवेश से गहराई से प्रेरित होते हैं। उनका यूट्यूब चैनल "Inderjit Madan Shayar" लगातार लोकप्रियता हासिल कर रहा है, जो उनके बढ़ते प्रशंसक वर्ग और उनकी अनोखी काव्य-शैली की स्वीकार्यता का प्रमाण है। आगे की योजनाओं में, इंदरजीत मदान की इच्छा है कि वे अपनी गीतात्मक प्रतिभा को बॉलीवुड फिल्मों में भी योगदान दें और कुछ अग्रणी गायकों के साथ सहयोग करें। कविता, संगीत और भावनाओं के अद्वितीय संगम के साथ, वे एक ऐसे कलाकार के रूप में उभर रहे हैं जिन्हें आने वाले समय में जरूर देखा और सुना जाएगा।

इंटीरियर डिज़ाइन में इनोवेशन, आपसी सहयोग और बिज़नेस के लिए महत्वपूर्ण मंच

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। भारतीय इंटीरियर एवं फर्नीचर उद्योग में विकास के अगले चरण को गति प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किए गए प्रीमियर बी2बी प्लेटफॉर्म 'आईएमएम इंडिया' का आधिकारिक लॉन्च आज नई दिल्ली के इंडिया हेबिटेट सेंटर में हुआ। उद्योग जगत के मुख्य हितधारकों की मौजूदगी में कोलनमेस्से द्वारा आयोजित विशेष कार्यक्रम में यह लॉन्च किया गया, जिसने ऐसा प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराया जो देश भर में इनोवेशन, आपसी सहयोग एवं उद्योग जगत के विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आईआईएम इंडिया का लॉन्च जोधपुर हैण्डीक्राफ्ट्स एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भरत दिनेश, फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (फियो) के अध्यक्ष एससी रल्हन और कोलनमेस्से प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक मिलिंद दीक्षित की उपस्थिती में हुआ।

लॉन्च के अवसर पर मिलिंद दीक्षित, मैनेजिंग डायरेक्टर, कोलनमेस्से प्रा. लिमिटेड ने कहा, ''आईएमएम इंडिया ऐसे समय में विश्वस्तरीय इनोवेशन एवं भारतीय प्रतिभा को एक मंच पर लाया है जब देश का इंटीरियर डिज़ाइन मार्केट 2033 तक दोगुना होकर 71 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। भारत में डिज़ाइन-उन्मुख जीवनशैली की बढ़ती मांग के बीच कोलनमेस्से ग्लोबल की विशेषज्ञता के साथ हम ऐसा मंच लेकर आए हैं जो देश में इंटीरियर के भविष्य को पूरी तरह से बदल देगां।"

इस मौके पर मौजूद फेडरेशन ऑफ इंडियन एक्सपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन (एफआईसीओ) एस.सी. रहलान ने अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ को लेकर पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा कि, "ट्रंप के टैरिफ से भारतीय एक्सपोर्टर्स की मुश्किलें बढ़ सकती हैं क्योंकि चीन के बाद अमेरिका हमारा सबसे बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर है। इस बीच सरकार ने निर्यातकों को बचाने के लिए एक बड़ी योजना बना रही है। यह योजना लगभग 20,000 करोड़ की होगी। सरकार का लक्ष्य है कि सितंबर तक इस योजना को शुरू कर दिया जाए। इसका मकसद है कि दुनिया भर में ट्रेड में होने वाले उतार-चढ़ावों से भारतीय निर्यातकों को बचाया जा सके।"

जोधपुर हैण्डीक्राफ्ट्स एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भारत दिनेश ने उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, ''भारतीय कारीगरी एवं निर्यात को बढ़ावा देने वाले संगठन के रूप में हमें खुशी है कि हम कोलनमेस्से के साथ मिलकर आईएमएम इंडिया का आयोजन कर रहे हैं। यह कार्यक्रम भारतीय इंटीरियर कारोबार के लिए महत्वपूर्ण कदम है, जो हमारे सदस्यां एवं उद्योग जगत को बेजोड़ विश्वस्तरीय मंच प्रदान करेगा।"

आईएमएम इंडिया के पहले संस्करण का आयोजन 11 से 14 मार्च 2026 में नई दिल्ली के द्वारका स्थित यशोभुमि में होगा, जो भारत के सबसे आधुनिक ब्राण्ड्स एवं भावी इंटीरियर समाधानों को एक मंच पर लेकर आएगा।

भारत दिनेश, प्रेज़ीडेन्ट- जोधपुर हैण्डीक्राफ्ट्स एक्सपोर्टर्स एसोसिएशन ने कहा, ''भारतीय कारीगरी एवं निर्यात को बढ़ावा देने वाले संगठन के रूप में हमें खुशी है कि हम कोलनमेस्से के साथ मिलकर आईएमएम इंडिया का आयोजन कर रहे हैं। यह कार्यक्रम भारतीय इंटीरियर कारोबार के लिए महत्वपूर्ण कदम है, जो हमारे सदस्यां एवं उद्योग जगत को बेजोड़ विश्वस्तरीय मंच प्रदान करेगा। यह भारतीय डिज़ाइन की समृद्धि एवं विविधता को दर्शाने, अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियों को बढ़ावा देने तथा विश्वस्तरीय बाज़ारों में हमारी मौजूदगी को सशक्त बनाने का अनूठा अवसर है।

आईएमएम इंडिया विश्वस्तरीय इंटीरियर समाधानों की व्यापक प्रदर्शनी है, जिसमे घर, आउटडोर एरिया के लिए फर्नीचर जैसे अपहोल्स्टर्ड फर्नीचर, लैम्प एवं लाइटिंग, वॉल एवं फ्लोर कवरिंग, होम डेकोर एवं अस्थेटिक्स, ओकेज़नल एवं सिंगल फर्नीचर पीस आदि पेश किए जाएंगे। इसके अलावा इस प्रदर्शनी में रिप्रोड्यूस्ड फर्नीचर, बाथरूम एक्सेरीज़ एवं प्रोडक्ट्स, किचन समाधान एवं कलाकृतियां भी प्रस्तुत की जाएंगी। यह बायर-सैलर मीट, बिज़नेस वार्ता एवं साझेदारियों के माध्यम से भारतीय निर्माताओं एवं मुख्य निर्णय-निर्माताओं के बीच प्रत्यक्ष नेटवर्किंग को भी बढ़ावा देगा।

स्टार प्लस के शो इशानी के इमोशनल सीन में आंखें सूजने तक रोईं मेघा चक्रवर्ती, जानें पूरा किस्सा

मुख्य संवाददाता

स्टार प्लस का नया शो 'इशानी' एक ऐसी दिल छू लेने वाली कहानी लेकर आया है, जिसमें एक महिला अपने सपनों और जिम्मेदारियों के बीच उलझी हुई है। शो में इशानी नाम की एक युवती की कहानी दिखाई गई है, जो भावनात्मक संघर्षों, उलझे हुए रिश्तों और अनकहे त्यागों के बीच अपनी राह तलाश रही है। अपनी सच्ची कहानी कहने के अंदाज़ और दमदार अदाकारी के साथ, 'इशानी' पहले ही दर्शकों के दिलों में जगह बनाने लगी है और एक महिला की इन चुपचाप लड़ी जाने वाली लड़ाइयों को असली रूप में पेश कर रही है।

मेघा चक्रवर्ती, जो शो में मुख्य किरदार इशानी की भूमिका निभा रही हैं, बताती हैं कि शो में इशानी के शुरुआती जीवन से वह खुद को काफी जुड़ा हुआ महसूस करती हैं। मेघा कहती हैं, "इशानी के शुरुआती जीवन से मैं खुद को रिलेट कर सकती हूं, क्योंकि वह बहुत महत्वाकांक्षी और बेखौफ है। वह किसी से डरती नहीं थी। उसने हमेशा अपने सच के लिए लड़ाई लड़ी। अपना नज़रिया साफ़-साफ़ रखा। उसके कई गुण ऐसे हैं जिनसे मैं खुद को जोड़ पाती हूं। लेकिन मैं उसकी शादीशुदा ज़िंदगी से बिल्कुल भी रिलेट नहीं कर सकती, क्योंकि वहां वह कई तरह की परेशानियों का सामना कर रही है।" *सबसे मुश्किल सीन के बारे में बात करते हुए मेघा याद करती हैं,* "अनुराग के साथ एक सीन था, जो पूरे नौ पेज का था और बेहद इमोशनल था। पहली बार अनुराग ने मुझसे आमने-सामने बात की, ये बताया कि उसने मुझे क्यों छोड़ा और हमारे बीच जो गलतफहमियां थीं, उनके बारे में कहा। मैंने उस पर आरोप लगाए, लेकिन फिर एक पल ऐसा आया जब उसने मुझे पूरी तरह असहाय महसूस करा दिया। यह सीन बहुत ही खूबसूरती से लिखा गया था, और मैंने इतना रोया कि मेरी आंखें सूज गईं। यह मेरे करियर के सबसे इमोशनल सीन्स में से एक था।" *मेघा ने अपने किरदार के लिए दिल से सलाह भी दी,* "इशानी घर और पति की जिम्मेदारियों में पूरी तरह डूबी रहती है, लेकिन कभी अपने लिए नहीं सोचती। मुझे लगता है कि उसे अब खुद के बारे में भी सोचना चाहिए। जैसे कई औरतों को समझना चाहिए कि हमें ज़िंदगी एक ही बार मिलती है। जिम्मेदारियां ज़रूरी हैं, लेकिन खुद का ख्याल रखना भी उतना ही ज़रूरी है।" शो इशानी एक ऐसी औरत की दिलचस्प कहानी दिखाता है, जो समाज की उम्मीदों और अपने दिल की चाहत के बीच फंसी हुई है। प्रोमो में इमोशनल टकराव, दबे हुए सपने और वो शांत ताकत नज़र आती है, जो इशानी को आगे बढ़ने की हिम्मत देती है। स्टार प्लस पर कल शाम 7:20 बजे देखना न भूलें इशानी।

पंजाब सरकार की वन-टाइम सेटलमेंट स्कीम के तहत, पिछले वर्षों के लंबित प्रॉपर्टी टैक्स पर ब्याज और जुर्माने की 15 अगस्त 2025 तक माफी का लाभ लें : कमिश्नर गुलप्रीत सिंह औलख

परिवहन विशेष न्यूज

अमृतसर , 05 अगस्त (साहिल बेरी)

कमिश्नर गुलप्रीत सिंह औलख द्वारा प्रॉपर्टी टैक्स विभाग के कार्यों की समीक्षा के लिए एक बैठक बुलाई गई, जिसमें संयुक्त आयुक्त जे. इंदर सिंह, सहायक आयुक्त विशाल वधावन, दलजीत सिंह, अधीक्षक दविंदर सिंह बब्बर, राज कुमार, प्रदीप राजपूत, जसविंदर सिंह और वरिंदर कुमार उपस्थित थे।

मीटिंग के दौरान बताया गया कि वित्तीय वर्ष 2025–26 में 1 अप्रैल से 4 अगस्त 2025 तक कुल 22,639 प्रॉपर्टी टैक्स रिटर्न प्राप्त हुए हैं, जिनसे ₹10.40 करोड़ की आय हुई है। यह राशि पिछले वर्ष की तुलना में ₹5.82 करोड़ अधिक है, जब 15,681 रिटर्न के मुकाबले ₹4.58 करोड़ की आय हुई थी।

कमिश्नर ने अधीक्षकों को 15 अगस्त 2025 तक वसूली का लक्ष्य निर्धारित किया है और नागरिकों की सुविधा के लिए प्रतिदिन 2 शिविर लगाने के निर्देश दिए हैं।

कमिश्नर ने बताया कि पंजाब सरकार ने नागरिकों की सहूलियत के लिए एक वन-टाइम सेटलमेंट स्कीम लागू की है, जिसके अंतर्गत वर्ष 2013-14 से अब तक के बकाया प्रॉपर्टी टैक्स पर ब्याज और जुर्माने को माफ कर दिया गया है। पहले इसकी अंतिम तिथि 31 जुलाई 2025 थी, जिसे अब बढ़ाकर 15 अगस्त 2025 कर दिया गया है।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए हैं कि इस सरकारी सुविधा का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाए और प्रतिदिन अलग-अलग क्षेत्रों में 2 शिविर लगाकर लोगों को जागरूक किया जाए।

कमिश्नर ने शहरवासियों से अपील की कि सरकार की इस योजना का अधिक से अधिक लाभ समय रहते उठाएं। साथ ही यह भी याद दिलाया कि वर्तमान वित्तीय वर्ष के टैक्स पर छूट पाने की अंतिम तिथि 30 सितंबर 2025 है, जिसका भी लाभ लिया जाए।

बैकुंठवासी जगद्गुरु स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज का 26वां त्रिपाद्विभूति प्राप्ति महोत्सव 06 अगस्त से

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। केशीघाट स्थित श्रीजानकी वल्लभ मंदिर में बैकुंठवासी श्रीवेदान्तदेशिक पीठाधीश्वर अनंतश्री विभूषित जगद्गुरु स्वामी रामानुजाचार्य परमहंस स्वामी भगवानदासाचार्य महाराज का 26वां त्रिदिवसीय त्रिपाद्विभूति प्राप्ति महोत्सव 06 से 08 अगस्त 2025 पर्यन्त अत्यन्त हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया जाएगा।

जानकारी देते हुए स्वामी रघुनाथाचार्य महाराज ने बताया है कि श्रीजानकी वल्लभ मंदिर के अध्यक्ष जगद्गुरु स्वामी अनिरुद्धाचार्य महाराज की पावन अध्यक्षता में आयोजित होने वाले इस त्रिदिवसीय महोत्सव में 06 अगस्त को प्रातःकाल श्रीतिरुपति बालाजी का तिरुमंजन एवं सायंकल स्त्रोतों का पाठ होगा। 07 अगस्त को अपराह्न 03 बजे से सायं 07 बजे तक वृहद संत-विद्वत सम्मेलन आयोजित होगा ।जिसमें तमाम प्रख्यात सन्त, विद्वान और धर्माचार्य आदि भाग लेंगे ।साथ ही ठाकुर श्री जानकी वल्लभ भगवान का भव्य फूल बंगला सजाया जाएगा।

स्वामी गोविंद दास महाराज ने बताया है 08 अगस्त को प्रातःकाल वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य गुरु चरण पादुकाओं का पूजन होगा। तत्पश्चात संत-ब्रजवासी-वैष्णव सेवा एवं समष्टि भंडारा (तदीयाराधन) आदि के कार्यक्रम सम्पन्न होंगे ।जिसमें समस्त भक्त-श्रद्धालु सादर आमंत्रित हैं।

वी. एस. अच्युतानंदन : एक कम्युनिस्ट और आदर्श जननेता

जॉन ब्रिटास, अनुवाद : संजय पराते

एक युग का अंतर भले ही एक घिसा-पिटा मुहावरा हो, लेकिन कई बार यह सबसे उपयुक्त मुहावरा होता है। 101 वर्ष की आयु में वी.एस. अच्युतानंदन का जाना एक ऐसा ही क्षण है।

वी.एस. ने लगभग आठ दशकों तक कम्युनिस्ट राजनीति को परिभाषित किया। वे उन 32 नेताओं में से अंतिम जीवित बचे नेता थे, जिन्होंने 1964 में अविभाजित सीपीआई की तूफानी राष्ट्रीय परिषद की बैठक से बाहर निकलकर सीपीएम का गठन किया था। लेकिन उनकी पहचान केवल इससे ही नहीं होती। भारत के स्वतंत्रता संग्राम से लेकर 1946 के पुन्नप्रा-वायलार विद्रोह, जिसने केरल के भारतीय संघ में शामिल होने का मार्ग प्रशस्त किया, 1964 में कम्युनिस्ट पार्टी का विभाजन, 1975 में आपातकाल के खिलाफ लड़ाई और 1991 में देश का योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था से मुक्त बाजार की ओर बड़ा बदलाव तक – यह वह युग था, जिसने उन्हें परिभाषित किया। कॉमरेड वी.एस. मजदूरों और किसानों के आंदोलनों और भारतीय राजनीति की वह अंतिम जीवित कड़ी थे, जो इस विचार के वाहक थे कि जन संघर्ष सामाजिक परिवर्तन का माध्यम हो सकता है।

नई दिल्ली में जब मैं यह लिख रहा हूँ, आज बारिश हो रही है। लेकिन मैं तिरुवनंतपुरम से लाइव प्रसारित हो रहे दृश्यों पर ध्यान दिए बिना नहीं रह सकता : स्कूली बच्चे भी दिवंगत नेता की एक झलक पाने के लिए एकेजी सेंटर के आसपास उमड़ते देखे जा सकते हैं। मैं यह सोचने से खुद को नहीं रोक पा रहा हूँ कि जब वी.एस. ने लाल झंडा उठाया होगा, तब उनके दादा भी पैदा नहीं हुए होंगे, चाहे वे दर्जी का काम कर रहे हों या अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए नारियल के रेशे के कारखाने में गट्ठर उठा रहे हों। इसलिए, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने अपनी आत्मकथा का नाम रखा जीवन एक संघर्ष है। जैसे ही उनके निधन की खबर आई, केरल के मुख्यमंत्री पिनरायी विजयन से लेकर ज़मीनी कार्यकर्ता तक, श्रद्धांजलि देने वालों में एक बात समान थी : वी.एस. ने साबित कर दिया कि जीवन और संघर्ष दो अलग-अलग चीज़ें नहीं हैं।

वह कौन-सी बात है, जो आम जनता में कॉमरेड वी.एस. को प्रिय बनाती है? इसका संबंध उनके उस जुनून से है, जो उन्हें उस उद्देश्य के प्रति प्रतिबद्ध करता था, जिस पर वे विश्वास करते थे। राजनीति की निरंतर बदलती दुनिया में, वी.एस. ने दशकों तक पार्टी संगठन में रहना पसंद किया। जब 1957 में केरल में अविभाजित भाकपा सत्ता में आई थी, उस समय वे पार्टी की राज्य समिति के सदस्यों में से एक थे। वे 2006 में 82 वर्ष की आयु में पहली बार मंत्री बने -- यानी मुख्यमंत्री। उनकी दुनिया में केवल दो स्तंभ थे -- पार्टी और जनता।

मुख्यमंत्री के तौर पर, वी.एस. पर सबसे बड़ा आरोप यह था कि वे विपक्ष के नेता की तरह व्यवहार करते थे। यह तंज उनके द्वारा चलाए गए जनांदोलनों को लेकर था —जैसे कि मुन्नार जैसे पर्यटन स्थल पर शक्तिशाली निहित स्वार्थों द्वारा अतिक्रमण के खिलाफ या घातक कीटनाशक एंडोसल्फान पर प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर उनके द्वारा किया गया अनशन। उनके विरोधी यह समझने में नाकाम रहे — और जनता ने सहज रूप से यह समझ लिया — कि वे विपक्ष से नहीं, बल्कि व्यवस्था से लड़ रहे थे। यही वह दृढ़ विश्वास था, जिसने उन्हें मुक्त सॉफ्टवेयर आंदोलन का एक अप्रत्याशित समर्थक बना दिया।

भ्रष्टाचार, पर्यावरण और महिलाओं के खिलाफ हिंसा जैसे बुनियादी मुद्दों पर उनके अडिग रुख ने उनके कुछ विरोधी तो बनाए, लेकिन उनकी लोकप्रियता आसमान छू गई। मुख्यमंत्री रहते हुए, उन्होंने एक बार यौन उत्पीड़न के आरोपों से जूझ रहे मलयालम सिनेमा के एक तत्कालीन स्टार को पुरस्कार देने से इंकार कर दिया था। यह वी.एस. थे। असफलताओं ने उनका केवल हौसला बढ़ाया और वे दूसरे दिन फिर लड़ने के लिए जीवित रहे।

यह आज भी अकादमिक रुचि का विषय है कि कैसे वी.एस. जैसा पार्टी संगठन का एक अनुभवी व्यक्ति, 1990 के दशक में रातोंरात एक बेहद लोकप्रिय जननेता बन गया। मैंने देखा है कि वे भीड़ खींचने वाली सबसे बड़ी हस्ती थे। व्यंग्य से भरपूर उनके भाषणों ने हर तरह के लोगों को आकर्षित किया। उनके भाषणों की नकल करना — किसी शब्दांश पर ज़ोर देने या बीच में किसी चुटकुले पर विराम देने की शैली -- स्कूल/कॉलेज के समारोहों, फिल्मों और टीवी शो में एक उपसंस्कृति बन गई।

अपने निजी जीवन में, वी.एस. ने वही अनुशासन अपनाया, जो उन्होंने पार्टी में लंबे समय तक राज्य सचिव रहते हुए अपनाया था। वी.एस. भोग-विलास में लिप्त नहीं थे। इस प्रकार, वे भारत के युवाओं के लिए एक और आदर्श छोड़ गए हैं : अनुशासन, साहस और प्रतिबद्धता ही जीवन है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब उनके मुख्यमंत्री बनने की योग्यता पर सवाल उठाए गए, तो उन्होंने युवाओं को एक नई परिभाषा दी। कॉमरेड वी.एस. ने एक कविता सुनाकर संशयवादियों को ध्वस्त कर दिया :

आपकी उम्र आपके मुकुट की तरह धूसर या काली नहीं है/बल्कि उस आग की तरह है, जो आपकी आत्मा को जलाती है/और आपके पास ऐसा सिर है, जो अत्याचार के आगे कभी नहीं झुकता।

कुछ दिन पहले, मैं उस अस्पताल में था, जहाँ वे प्यारे कॉमरेड भर्ती थे। उनके बेटे वी. ए. अरुण ने कहा था : "वे एक योद्धा हैं, इसलिए मौत के लिए उन्हें हराना आसान नहीं होगा।"

वी. एस. अमर रहे ! लाल सलाम कॉमरेड !!

('इंडियन एक्सप्रेस' से साभार। लेखक राज्यसभा में माकपा के नेता हैं। अनुवादक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं। संपर्क: 94242-31650)

अरे, लालची नेताओं कुछ तो बफ़ादारी और ईमानदारी रखो अपनी मातृभूमि, और भारतीय सैना के साथ...

आज़ की चर्चा -- नेताओं के संस्कारों की नीलामी और भारत देश के लालची नेताओं की विदेशी गुलामी

उत्तर प्रदेश आगरा, संजय साग़र सिंह। आज़ स्वतंत्रता विशेष पर की चर्चा में आम मजदूरों और हिन्दू दलित वर्ग के वोटरों ने विदेशी ग़ुलामी की मानसिकता से पीड़ति लालची नेताओं पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए बताया कि देखिए सर, एक बात गांठ बांध लीजिए कि अब विदेशी दुश्मनों ने भारत में पनप रहें और देश का अन्न खा रहें। देश विरोधी, सैना विरोधी, हिन्दू सभ्यता विरोधी और देश में रहकर देश के टुकड़े करने बाले, लालची नेताओं की मानसिकता को अपना गुलाम

बनाने की कमजोरी और कमियों को बहुत अच्छी तरह परख एवं देख लिया हैं।

खैर, आज़ तक इनकी देश विरोधी लालची राजनीति का नतीजा यह निकला कि -

देश में रहके, देश का अन्न खाके, देश विरोधी, भारतीय सैना विरोधी, हिन्दू सभ्यता विरोधी और देश में रहकर देश के टुकड़े करने बाले लालची नेताओं की किस्मत में थी नाकामी, कभी देश, सैना, हिन्दू सस्कृति को कुछ बुरा कह कर पछताए, कभी अबैध घुसपैथियों, अबैध कब्ज़े और अबैध धर्म परिवर्तन के करण हिन्दू बेटियों की हत्या और अत्याचारों पर चुप रह के पछताए।

----लेक़नि आज़ादी से आज़तक अफ़सोस यही रहा कि ये लालची नेता अपनी मातृभूमि के सच्चें देशभक्त एवं सच्चें भारतीय नागरिक कभी नहीं बन पाएं।

आखिर में हिन्दू दलित नागरिकों ने कहा कि अरे, लालची नेताओं कुछ तो बफ़ादारी और ईमानदारी रखो अपनी मातृभूमि, भारतीय सैना और हिन्दू सभ्यता के साथ.....!

जय हिन्द -- जय जय हिन्द की सैना

कानपुर में पिता से ऐसा प्यार, उनके बाद खुद भी जान दे दी, मुंबई में करता था नौकरी

सुनील बाजपेई

कानपुर। आज के अधिकांश युवा जहां अपने जन्मदाता मां-बाप का ख्याल नहीं रखते। वहीं बहुत से ऐसे भी हैं, जो मां-बाप से बिछड़ने का गम सह नहीं पाते .और अपनी जान तक दे देते हैं । कुछ इसी तरह की घटना नरवल थाना क्षेत्र में हुई ,जहां पिता की मौत के बाद जीवकोपार्जन के लिए मुंबई में नौकरी करने वाले युवक ने भी ट्रेन से कटकर जान दे दी। बताते हैं कि वह अपने पिता से बहुत प्यार करता था और मुंबई में होने की वजह से उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाया था ,जिसकी वजह से ही वह बहुत दुखी था

वह कल 4 अगस्त को मुंबई से गांव पहुंचे इस युवक की शादी लगभग 5 माह पहले ही हुई थी।

प्राप्त विवरण के मुताबिक सिकठिया गांव निवासी अनिल साहू (25) मुंबई में एल्युमिनियम फैक्ट्री में काम करता था। फरवरी महीने में उसकी साढ़ गांव निवासी सेजल से शादी हुई थी। जिसके बाद से वह पत्नी के साथ मुंबई में रहता था। जबकि गांव में मां शारदा, पिता रामपाल व दो बड़े भाई नीरज और मुकेश रहते थे।

मौके पर पहुंची पुलिस को भाई मुकेश ने बताया कि 26 जुलाई को पिता खेत में गए थे। इस दौरान वह अचानक तालाब किनारे गिर गए। उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया था। पिता के अंतिम संस्कार में अनिल शामिल नहीं हो पाया था, जिस कारण वह परेशान था। घटना से परिवार में कोहराम मचा है। पुलिस ने बताया कि लाश को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर में झूलन महोत्सव 07 अगस्त को

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। सेवाकुंज गली स्थित श्रीकृष्ण बलराम मन्दिर में श्रावण मास के उपलक्ष्य में झूलन महोत्सव 07 अगस्त 2025 को प्रख्यात गौडीय संत भक्ति वेदांत स्वामी मधुसूदन महाराज के पावन सानिध्य में अत्यन्त श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ मनाया जाएगा। जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत सायं 05 बजे से ठाकुरजी विग्रहों को पुष्प हिंडोले में विराजित किया जाएगा ।साथ ही झूलन के पदों का संगीतमय गायन हुआ ।तत्पश्चात वृहद सन्त-विद्वत सम्मेलन एवं हरिनाम संकीर्तन आदि के आयोजन संपन्न होंगे। महोत्सव का समापन संत ब्रजवासी वैष्णव सेवा (भंडारे) के साथ होगा।

हाईकोर्ट जजमेंट में पुत्र को कड़ी फटकार -मैं गहरी शर्मिंदगी महसूस कर रहा हूं कि 100 वर्षीय मां सिर्फ 2000 रूपए मासिक पेंशन पानें अपनें बेटे से लड़ रही है

भारत में माता-पिता बड़े बुजुर्गों का अपमान तेजी से बढ़ा -अब माता-पिता व वरिष्ठ नागरिक (अत्याचार अपमान दुर्व्यवहार निवारण) विधेयक 2025 मानसून सत्र में ही लाने की तात्कालिक ज़रूरत-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

भारत में हम आदि अनादि काल से सुनते आ रहे हैं कि यहां माता-पिता बड़े बुजुर्गों का मान सम्मान बहुत अधिक है। उन्हें ईश्वर अल्लाह की तरह देखा जाता है व माता-पिता दिवस, मातृ दिवस, पितृ दिवस, बड़े बुजुर्गों का दिवस इत्यादि मनाए जाते हैं, जो बहुत अच्छी बात है परंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि अब यह शब्द, गाथाएं पौराणिक कथाएं इस आधुनिक युग में केवल किताबी या शाब्दिक जुमले यांने इस धरा पर ठीक इसके विपरीत के सटीक उदाहरण तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। अभी सप्ताह भर पहले ही हमने सीसीटीवी पर अयोध्या कांड देखें जहां संभवतः परिवार वाले उस 80 वर्षीय बुजुर्ग महिला सदस्य को यूंही रोड पर फेंक कर चले गए थे, जो आरोपी अभी तक पकड़ से बाहर हैं, फिर अभी चार दिन पहले केरल हाई कोर्ट में एक मामले आरपीएफसी नंबर 253/2025 अन्ना कृष्णन मलई 57 वर्ष बनाम जानकी अम्मा 100 वर्ष व अन्य जिसमें 2022 में फैमिली कोर्ट ने मां को 2000 रूपए प्रति माह का भत्ता देने का आदेश दिया था, जिसे पुत्र ने हाईकोर्ट में चुनौती दी थी, जिसमें माननीय हाई कोर्ट ने अत्यंत तीखी टिप्पणियों के साथ अपील को खारिज कर दिया। अब सवाल उठता है कि एक 100 वर्ष की महिला सिर्फ 2000 रूपए मासिक के लिए अपने पुत्र के खिलाफ कोर्ट में गई, वहां जीती तो पुत्र ने हाईकोर्ट में अपील की व पुत्र हार गया, अब शायद सुप्रीम कोर्ट का द्वार खटखटाना की संभावना है, यह है एक मां का सम्मान? आज मैं यह मुद्दा इसीलिए उठा रहा हूं कि संसद का मानसून सत्र चल रहा है व आज 5 या 6 अगस्त 2025 को भी सभी सांसद मिलकर अयोध्या व केरल मां केस का संज्ञान लेकर लोकसभा यानी निचले सदन के सभी 543 सदस्य व राज्यसभा याने उच्च सदन के सभी 245 सदस्य कुल मिलाकर 788 सदस्य मिल जाए तो माता-पिता, बुजुर्गों के कल्याण के लिए एक बेहतरीन सख्त मेरा ड्रीम संभावित बिल माता-पिता वरिष्ठ नागरिक (अत्याचार अपमान दुर्व्यवहार निवारण) विधेयक 2025 संसद के दोनों सदनों में 788/0 मतों से पास कर विश्व में एक उदाहरण प्रस्तुत करें, तो सारी जनता सभी सांसदों की कृतज्ञता हो जाएगी। यह बात में क्लियर कर दूं कि सभी बच्चे अपने माता-पिता का अपमान नहीं करते जबकि बहुत बच्चे ऐसे हैं जो अपने माता-पिता व बड़े बुजुर्गों पर अपनी जान निश्वर करते हैं, परंतु कहावत है कि एक मछली पूरे तालाब को गंदा करती है, एक आम पूरे घड़े के सभी आमों को खराब कर देता है, इसीलिए समाज की उन गन्दी मछलियों व आमों को कड़ी सजा देने का वक्त आ गया है ताकि, ऐसा कार्य करने वालों को सख़्त संदेश जाए, और आगे इस तरह की घटनाएं न हो इसको साकार करने के लिए उपरोक्त विधेयक 2025 पास करना जरूरी है, तथा उसमें हत्या रेप देशद्रोह जैसी सख्त तुल्य उम्र कैद फांसी जैसी शख्स सजा का प्रावधान हो, यदि वह सरकारी कर्मचारी है तो उसे नौकरी से डिसमिस करने सहित अनेक कड़क का प्रावधान करना जरूरी है। इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे हाईकोर्ट जजमेंट में पुत्र को कड़ी फटकार, मैं गहरी शर्मिंदगी महसूस कर रहा हूं कि 100 वर्षीय मां सिर्फ 2000 रूपए मासिक पेंशन पाने के लिए बेटे से लड़ रही है।

साथियों बात अगर हम 1 अगस्त 2025 को केरल हाई कोर्ट द्वारा रिट पिटीशन क्रमांक आरपीएस सी नंबर 253/2025 में दिए जजमेंट की करें तो, यह एक रिवीजन पिटिशन (आरपीएफसी नों.253 ऑफ़ 2025) थी जिसे 57 वर्ष के उन्नीकृष्णा पिल्लाई ने दायर किया, जो अपनी 100 वर्षीय मां जानकी अम्मा की तरफ से फॅमिली कोर्ट के आदेश को चुनौती दे रहा था, जिसमें मासिक ₹2,000 की रख-रखाव राशि देने का निर्देश दिया गया था ।फॅमिली कोर्ट ने वर्ष अप्रैल 2022 में यह आदेश जारी किया था, लेकिन बेटे ने भुगतान नहीं किया, जिसके चलते रेवेनयू रिकवरी प्रोसीडिंग्स शुरू हो गए ।पुत्र ने दावा किया कि उसकी मां उसके बड़े भाई के साथ रहती है, और उसकी अन्य संतानें उस पर निर्भर हैं, इसलिए केवल वही क्यों जिम्मेदार ठहराया जाए ।उसने तर्क दिया कि वह मां की देखभाल करने को तैयार है यदि वह उसके साथ रहना स्वीकार करें। साथ ही, उसने 1,149 दिनों की देरी से फॅमिली कोर्ट के निर्णय को चुनौती दी, जिसे वह न्यायिक त्रुटि बताता है ।हाईकोर्ट का निर्णायक विश्लेषण (1) प्रत्येक पुत्र की व्यक्तिगत दायित्वता-- न्यायाधीश ने स्पष्ट किया कि सेक्शन 125 सी आर.पी.सी. के अंतर्गत प्रत्येक पुत्र का व्यक्तिगत दायित्व होता है जो सक्षम हो, चाहे माँ अन्य बच्चों के साथ रहती हो या न करती हो ।यह बहाना कि मां के पास अन्य संतानें हैं जो उसकी देखभाल कर सकती हैं वे रक्षा प्रद नहीं है वै वह इसका उत्तरदायित्व उठाने में विफल रहता है-तब वह मानव नहीं कहा जा सकता। (2) अदालत ने बेटे की आलोचना करते हुए कहा कि,[एक 100-साल की मां को कोर्ट में जाकर ₹2,000 मासिक मांगने के लिए मजबूर करना] शर्म की बात है।"मैं गहरी शर्मिंदगी महसूस करता हूँ कि 100-वर्षीय मां, सिर्फ 2,000रूपए मासिक पेंशन पाने के लिए अपने बेटे से लड़ रही ह (3) देरी पर विचार, लेकिन खर्च माफ़-- देरी का मुद्दा-बेटे द्वारा 1,000 से अधिक दिनों के बाद पुनरीक्षण याचिका दाखिल करना-खैर अदालत ने खर्च (कस्टस) लगाए जाने पर विचार किया, लेकिननोटिस न जारी होने के कारण उसे माफ़ कर दिया। (4) व्यक्तिगत और सामाजिक संदेश--बेंच ने कहा कि बच्चों को उन्हीं मूल्यों को अपनाना चाहिए जो माँ ने अपनाया था-धैर्य, समझदारी, स्नेह-और वृद्धावस्था में माता-पिता को बच्चनुमा व्यवहार करने पर भी सहानुभूति से पेश आना चाहिए ।हाईकोर्ट ने मानवता, नैतिकता और क़ानून की त्रिवेणी में यह आदेश जारी कर समाज को स्पष्ट संदेश दिया है:पुत्र द्वारा मां की देखभाल करना दान नहीं, वह कर्तव्य है। यह निर्णय विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह डिले, बेटा-भाई-बहन की मौजूदगी, एवं विवरणों में उलझे बिना-माँ को न्याय संपूर्णतया दिलाने पर केंद्रित है ।उन्होंने पुत्र को याद दिलाया कि मां ही संसार की स्कूल है और पुत्र का आचरण वही मूल्यों पर आधारित होना चाहिए जिससे वह पला है-धैर्य, प्रेम, और मानवता ।केरल उच्च न्यायालय का यह निर्णय कानून और संवेग के संगम का प्रबल उदाहरण है, जिसने यह साफ कर दिया कि वृद्ध माता-पिता के प्रति रख-रखाव सिर्फ कानूनी आवश्यकता नहीं बल्कि मानवीय, नैतिक और सामाजिक कर्तव्य भी है। इस फैसले से यह स्पष्ट हुआ कि किसी बेटे द्वारा अपनी मां की देख-रेख में कमी करना-नॉट ओनली लीगली रॉंग बट मोरली रिप्रेहेंसिबल-एकबिल्कुल "शेमफुल" स्थिति मानी जाएगी।

साथियों बात अगर हम केरल हाईकोर्ट के जजमेंट को ऐतिहासिक मानने की करें तो, भारत के न्यायिक इतिहास में 1 अगस्त 2025 का दिन एक ऐसा संवेदनशील अध्याय लेकर आया, जिसने कानून, नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी के रिश्ते को गहराई से परखा। केरल उच्च न्यायालय द्वारा दिया गया निर्णय जिसमें एक बेटे को उसकी 100 वर्षीय मां को 2000 रूपए प्रतिमाह भरण-पोषण देने का आदेश बरकरार रखा गया, न सिर्फ न्यायिक दृष्टि से बल्कि मानवीय मूल्य की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस निर्णय ने उस अनदेखे, मगर सतत्ज्वलंत प्रश्न को उजागर किया:क्यावृद्धावस्था में माता-पिता को न्यायालय के दरवाज़े खटखटाने चाहिए? क्या पुत्र होने का दायित्व केवल जन्मदाता का ऋण चुका देना है, या यह कर्तव्य जीवनपर्यंत है? यह निर्णय उन सामाजिक धाराओं को भी चुनौती देता है जो यह मानती हैं कि वृद्धजन अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में स्वयं को 'परित्यक्त' मान लें। कोर्ट ने साफ कहा कि माता-पिता को अपने बेटों से यह अपेक्षा रखना पूरी तरह जायज़ है कि वे उनका भरण-पोषण करें, और यह अधिकार कानून के साथ-साथ संस्कारों में भी निहित है। कोर्ट का यह कथन-स्यह कर्तव्य है, दया नहींस- इस पूरे विवाद की आत्मा है। यह समाज को उसकी अंतरात्मा की ओर लौटने का इशारा करता है, जहाँ बेटा केवल पुत्र होने से नहीं, बल्कि पुत्रधर्म निभाने से समाज के मूल्यबोध में स्थान पाता है ।एक औरमहत्वपूर्ण बात यह रही कि कोर्ट ने याचिकाकर्ता की उस दलील को भी खारिज किया जिसमें उसने कहा कि उसकी मां अन्य बेटों के साथ रहती है, और वह अकेले क्यों भुगतान करे। न्यायालय ने यह स्पष्ट किया कि बच्चों के बीच बंटवारे की बहस याचिकाकर्ता बाद में सिविल कोर्ट में कर सकता है, परन्तु फिलहाल उसके दायित्व को टाला नहीं जा सकता। यह रुख इसलिए भी सराहनीय है क्योंकि यह न्याय को केवल तकनीकी व्याख्या में सीमित न रखकर मानवीय संदर्भ में प्रस्तुत करता है ।यह मामला भारतीय न्यायशास्त्र में 'कर्तव्यपरक न्याय' का जीवंत उदाहरण बनकर सामने आया है। सुप्रीम कोर्ट की विभिन्न मिसालें जैसे कि कीर्तिकांत द. वड़ोदरिए बनाम स्टेट ऑफ़ गुजरात या विनीता शर्मा बनाम राकेश शर्मा पहले ही स्पष्ट कर चुकी हैं कि माता-पिता की देखभाल केवल सामाजिक या पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि यह एक संवैधानिक उत्तरदायित्व भी है। इस निर्णय ने इन विचारों को और अधिक स्पष्टता और दृढ़ता प्रदान की है ।एक ओर यह निर्णय वृद्धजनों के पक्ष में नीतिगत निर्णयों को बल देता है, वहीं दूसरी ओर यह समाज के लिए चेतावनी भी है। आज की पीढ़ी को यह समझना होगा कि माता-पिता की सेवा केवल धार्मिक अनुष्ठानों या वार्षिक पितृपक्ष में 'श्राद्ध' करने तक सीमित नहीं है। वास्तविक श्रद्धा और सेवा तो तब होती है जब माता-पिता जीवित हों और उन्हें अपने बच्चों की सहायता की जरूरत हो। किसी मां को ₹2000 के लिए अदालत में जाना पड़े, यह स्थिति खुद समाज की विफलता है।

साथियों बात अगर हम एक एक सदस्यीय बेंच की तारीफ एक काबिल जजमेंट की करें तो, न्यायमूर्ति की कलम ने जिस प्रकार भावनात्मक गहराई और कानूनी अनुशासन के संतुलन को साधा है, वह इस निर्णय को सामान्य अदालती फैसले से ऊपर उठाकर आंदोलनात्मक दृष्टांत में परिवर्तित करता है। यह निर्णय हर कानून के विद्यार्थी, हर सामाजिक कार्यकर्ता, हर नीति निर्धारक और हर संतान के लिए एक नैतिक पाठ है ।इस निर्णय को भारत के विद्यालयों, विधि विश्वविद्यालयों और प्रशासनिक संस्थानों में केस स्टडी के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए, ताकि भावी पीढ़ियाँ समझ सकें कि समाज की नींव केवल कानून से नहीं, बल्कि दायित्वबोध और करुणा से टिकती है ।आर्थिक संदर्भ में 2000रूपए कोई बड़ी राशि नहीं मानी जाती, परंतु इस निर्णय ने स्पष्ट किया कि यह मामला धन की नहीं, मन की है। यह निर्णय दरअसल उस असंवेदनशील मानसिकता के विरुद्ध आवाज है, जो वृद्धजनों को परिवार का बोझ मानने लगी है। जिस मां ने जन्म दिया, परवरिश की, शिक्षा दी, वही जब उम्र के अंतिम मोड़ पर अपने बेटे से सम्मान और सुरक्षा की उम्मीद करती है, तो वह किसी कृपा की याचना नहीं कर रही- वह अपने अधिकार की बात कर रही है। भारत सरकार को चाहिए कि वह इस ऐतिहासिक निर्णय को आधार बनाकर' मेंटेनेंस एक्ट को और अधिक सख्त बनाए। आज भी लाखों माता-पिता देश के गांवों और शहरों में अकेले जीवन व्यतीत कर रहे हैं, जिन्हें उनके बच्चों ने त्याग दिया है। ऐसे में यदि न्यायालय इस प्रकार के निर्णय दे रहा है, तो यह न केवल न्याय की स्थापना है, बल्कि सामाजिक पुनर्जागरण की दस्तक भी है। इस निर्णय का संदेश हर उस बेटे तक पहुँचना चाहिए, जो अपने मां-बाप को कमाई का बोझ समझता है ।किसी समाज की सभ्यता का सबसे बड़ा संकेतक यह होता है कि वह अपने वृद्धजनों के साथ कैसा व्यवहार करता है।

निसान मैग्नाइट का आ रहा नया स्पेशल एडिशन, मिलेगा ऑल-ब्लैक लुक

निसान इंडिया जल्द ही Nissan Magnite का ऑल-ब्लैक स्पेसल एडिशन लॉन्च करेगी जिसका टीजर जारी किया गया है। टीजर में फ्रंट में एल शेप DRLs और रियर में टेललैंप की झलक है। बाहरी डिजाइन पूरी तरह ब्लैक होगा जिसमें रूफ रेल्स और 16-इंच के अलॉय व्हील्स भी ब्लैक होंगे। इंटीरियर टॉप-स्पेक पर आधारित हो सकता है जिसमें कई ब्लैक कलर ट्रीटमेंट मिलेंगे।

नई दिल्ली। निसान इंडिया जल्द ही अपनी Nissan Magnite का एक ऑल-ब्लैक स्पेसल एडिशन लॉन्च करेगी। कंपनी ने हाल ही में इसका एक टीजर जारी किया है। इस टीजर में इसके फ्रंट और रियर की हल्की झलक देखने के लिए मिली है। निसान मैग्नाइट के इस स्पेशल एडिशन को भारत में जल्द लॉन्च किया जा सकता है। आइए विस्तार में जानते हैं कि निसान के इस टीजर में क्या कुछ देखने के लिए मिला है?

टीजर में क्या दिखा?

कॉम्पैक्ट एसयूवी Nissan Magnite के इस टीजर में सामने की तरफ एल शेप को DRLs और हेडलैम्प देखने के लिए मिले हैं। इसके साथ ही पीछे की तरफ टेलपैंम्प दिखाई दिए। इसके अलावा, ब्लैक कलर के अलॉय व्हील्स भी देखने के लिए मिले हैं।

कैसा होगा बाहरी डिजाइन?

Nissan Magnite के स्पेशल एडिशन का बाहरी डिजाइन पूरी तरह से ब्लैक कलर में होगा। इसके रूफ रेल्स से लेकर 16-इंच के अलॉय व्हील्स तक सब कुछ ब्लैक कलर में पेंट होगा। इसके अलावा डिजाइन में किसी तरह का बदलाव नहीं देखने के लिए मिलेगा।

कैसा होगा इंटीरियर?

Nissan Magnite के स्पेशल एडिशन का इंटीरियर टॉप-स्पेक पर आधारित हो सकता है। इसके अंदर की तरफ रूप की लाइनिंग, सन वाइजर, दरवाजे के हैंडल, स्टीयरिंग व्हील और AC वेंट के चारों तरफ ब्लैक कलर का ट्रीटमेंट देखने के लिए मिल सकता है।

मिल सकते हैं ये फीचर्स

Nissan Magnite के स्पेशल एडिशन में 7-इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, 8-इंच का इंफोटेनमेंट टचस्क्रीन, ARKAMYS द्वारा ट्यून किया गया 6-स्पीकर साउंड सिस्टम, वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और ऐप्पल कारप्ले, ऑटो हेडलाइट्स, क्रूज़ कंट्रोल, एम्बिएंट लाइटिंग, 6 एयरबैग, सभी यात्रियों के लिए तीन-पॉइंट सीट बेल्ट, ISOFIX एंकर, ABS, ट्रैक्शन कंट्रोल, टायर प्रेशर मॉनिटर, हिल-स्टार्ट असिस्ट और 360-डिग्री कैमरा जैसे फीचर्स दिए जा सकते हैं।

मिल सकता है ये इंजन

Nissan Magnite के स्पेशल एडिशन को 100hp की पावर जनरेट करने वाला 1.0-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन दिया जा सकता है। इस इंजन को 5-स्पीड मैनुअल और CVT ऑप्शन दिया जा सकता है।

फॉक्सवगन टायगुन और वर्टस जीटी लाइन को मिला नया कलर, डुअल-टोन ब्लैक रूफ भी मिला

Volkswagen Taigun GT Line और Virtus GT Line को नए फ्लैश रेड कलर में पेश किया गया है जो लिमिटेड यूनिट्स के लिए ही उपलब्ध है। यह रंग उन्हें अधिक स्पोर्टी लुक देता है। इन कारों में 1-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन 10.1-इंच टचस्क्रीन वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो/एप्पल कारप्ले और छह एयरबैग जैसे फीचर्स हैं। Taigun की टक्कर Creta Seltos से है जबकि Virtus का मुकाबला Verna और City से है।

नई दिल्ली। Volkswagen Taigun GT Line और Virtus GT Line को नए कलर के साथ अपडेट किया गया है। यह नया कलर फ्लैश रेड है, जिसे केवल लिमिटेड यूनिट्स के लिए लेकर आया गया है। दोनों कारों में पहले से मिलने वाले चेरी रेड ऑप्शन के विपरित यह फ्लैश रेड कलर ज्यादा चमकदार और शानदार लग रहा है। वहीं, यह कलर इन दोनों कारों को ज्यादा स्पोर्टी लुक देता है।

नए कलर के साथ मिलेगा ये भी

Taigun GT Line और Virtus GT Line को उन लोगों के लिए लेकर आया गया है, जो 1-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन वाली स्पोर्टी-दिखने वाली कार चाहते हैं। इसमें ब्लैक-आउट एलिमेंट्स और पहिए दिए गए हैं, जो इसे अट्रैक्टिव लुक देने का काम करते हैं। इसके अलावा डुअल-टोन ब्लैक रूफ भी मिलता है।

Volkswagen Virtus और Taigun GT Line के फीचर्स

इन दोनों कारों में 10.1-इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो/एप्पल कारप्ले, सिंगल-पेन सनरूफ, क्रूज कंट्रोल, पुश-बटन स्टार्ट/स्टॉप और पैडल शिफ्टर्स (केवल ऑटोमैटिक में) जैसे फीचर्स दिए जाते हैं। इसके साथ ही Virtus GT Line में 8-स्पीकर वाला साउंड सिस्टम, जबकि aigun GT Line में 6-स्पीकर सेटअप दिया गया है।

दोनों में ही पैसेंजर्स की सेफ्टी के लिए छह एयरबैग, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC), हिल स्टार्ट असिस्ट, रियर सेंसर्स के साथ रियर पार्किंग कैमरा, ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज, एक टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS), ऑटो हेडलैंप और रेन-सेंसिंग वाइपर दिया जाता है।

इन दोनों में ही 1-लीटर TSI टर्बो पेट्रोल इंजन दिया गया है, जो 115 PS की पावर और 178 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसके इंजन को 6-स्पीड MT और 6-स्पीड AT गियरबॉक्स ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है।

Volkswagen Virtus और Taigun GT Line कीमत

कीमत (रुपये में)

Virtus GT Line MT 14.08 लाख

Virtus GT Line AT 15.18 लाख

Taigun GT Line MT 14.80 लाख

Taigun GT Line AT 15.90 लाख

(सभी कीमतें एक्स-शोरूम, पूरे भारत की हैं)

Volkswagen Taigun का Hyundai Creta, Kia Seltos, Maruti Grand Vitara, Skoda Kushaq और Honda Elevate जैसी कारों को टक्कर देती है। वहीं, Volkswagen Virtus का मुकाबला Hyundai Verna, Honda City और Skoda Slavia से होता है।

आयशर प्रो प्लस रेंज हुई पेश, लाइट और मीडियम ड्यूटी ट्रकों में मिलेंगे कई बेहतरीन फीचर्स

Eicher Pro Plus कमर्शियल वाहन निर्माता आशयर मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में प्रो प्लस रेंज को पेश कर दिया गया है। नई रेंज में लाइट और मीडियम ड्यूटी ट्रकों को ऑफर किया जा रहा है। इसमें किस तरह की खासियतों को दिया गया है। कितने ट्रकों को नई सीरीज में पेश किया जा रहा है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में बड़ी संख्या में कमर्शियल वाहनों का उपयोग सामान को लाने और ले जाने के लिए किया जाता है। इस सेगमेंट में कई निर्माताओं की ओर से ट्रकों को ऑफर किया जाता है। कमर्शियल वाहन निर्माता Eicher की ओर से भी Pro Plus रेंज को बाजार में पेश किया गया है। इनमें किस तरह की खासियत दी गई हैं। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

आयशर ने पेश की नई सीरीज

आयशर की ओर से प्रो प्लस सीरीज के साथ नए ट्रकों को भारतीय बाजार में पेश कर दिया गया है। नई सीरीज में पेश किए गए ट्रकों में कई बेहतरीन फीचर्स को भी ऑफर किया जा रहा है।

क्या है खासियत

आयशर की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक नई प्रो प्लस सीरीज में कुल छह ट्रकों को पेश किया गया है। इनको लाइट और मीडियम ड्यूटी के मुताबिक ऑफर किया गया है। जिनमें हाई पेलोड क्षमता, एक्सेंडेड कार्गो बॉडी विकल्प, एसी और एर्गोनोमिक केबिन के साथ ही आयशर लाइव और माई आयशर के जरिए कनेक्टिविटी को दिया गया है।

अधिकारियों ने कही यह बात

नई सीरीज को पेश करने के बाद वीईसीवी के लाइट और मीडियम ड्यूटी ट्रक के ईवीपी विशाल माथुर ने कहा कि ईंधन दक्षता, अपटाइम और डिजिटलीकरण पर हमारे निरंतर ध्यान के साथ, प्लस रेंज ग्राहकों को प्रदर्शन और स्थिरता का एक लाभदायक संयोजन प्रदान करती है। ये ट्रक न केवल आज की जरूरतों के लिए बल्कि भारत की आपूर्ति श्रृंखलाओं की तेजी से विकसित हो रही मांगों के लिए भी बनाए गए हैं। नई रेंज गहन ग्राहक जुड़ाव और भविष्य-केंद्रित इंजीनियरिंग का परिणाम है। उद्योग में अग्रणी वाहन उत्पादकता को ड्राइवर उत्पादकता में सुधार करने वाली सुविधाओं के साथ जोड़कर, हम ग्राहकों को वास्तव में एक विभेदित मंच प्रदान कर रहे हैं जो इंट्रा-सिटी और लंबी दूरी के अनुप्रयोगों, दोनों का समर्थन करता है।

कौन से ट्रक हैं शामिल

निर्माता की ओर से नई सीरीज में जिन ट्रकों को पेश किया गया है। उनमें लॉन्ग हॉल परफॉर्मर ट्रक Eicher Pro 3018XP Plus, अर्बन और इंटरसिटी के लिए Eicher Pro 2118XP Plus, आराम और शहर के लिए Eicher Pro 2059 Plus के साथ ही Eicher Pro 2095XP Plus, Eicher Pro 2049 Plus और Eicher Pro 2110XPT Plus जैसे ट्रक शामिल हैं।

इस दिन खुलेगा टेस्ला का दिल्ली में दूसरा शोरूम, जगह दिल्ली एयरपोर्ट के बेहद है पास

Tesla 11 अगस्त को दिल्ली में अपना दूसरा शोरूम खोलने जा रही है। यह शोरूम नई दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के पास एयरोसिटी के वर्ल्डमार्क में स्थित होगा। टेस्ला ने हाल ही में Tesla Model Y को भारतीय बाजार में लॉन्च किया है जिसकी बुकिंग अब पूरे देश में की जा सकती है। कंपनी शुरुआत में मुंबई पुणे दिल्ली और गुरुग्राम के ग्राहकों को डिलीवरी प्राथमिकता देगी।

नई दिल्ली। अमेरिकी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता कंपनी Tesla 11 अगस्त को दिल्ली में अपना दूसरा शोरूम खोलने जा रही है। टेस्ला ने भारत में अपना दूसरा शोरूम मुंबई के BKC में 15 जुलाई को खोला था, अब कंपनी दूसरा शोरूम खोलने की पूरी तैयारी कर चुकी है। टेस्ला का दूसरा शोरूम दिल्ली के वर्ल्डमार्क, एयरोसिटी में खोला जा रहा है, जो नई दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के करीब है।

इलेक्ट्रिक कार टेस्ला की बुकिंग

Tesla Model Y को हाल ही में भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया है। लॉन्च के साथ ही इसकी बुकिंग भी शुरू कर दी गई है। शुरुआत में केवल मुंबई, नई दिल्ली और गुरुग्राम में ही इसकी बुकिंग को शुरू किया गया था, लेकिन अब इसकी बुकिंग देश के किसी भी कोने से की जा सकती है। इसे खरीदने के इच्छुक लोग अपने राज्यों में टेस्ला गाड़ियों को बुक और पंजीकृत कर सकते हैं। इसके अलावा, वेबसाइट में विभिन्न कारकों के कारण ऑन-रोड कीमतें भिन्न हो सकती हैं। कंपनी मुंबई, पुणे, दिल्ली और गुरुग्राम के ग्राहकों को सबसे पहले डिलीवर करेगी। एक बार प्रक्रिया पूरी होने के बाद कंपनी इलेक्ट्रिक कार टेस्ला मॉडल वाई को सीधे एक फ्लैट-बेड ट्रक के जरिए से ग्राहकों के स्थान तक डिलीवर करेगी।

Tesla Model Y की कीमत

भारत में इसे दो वेरिएंट में लेकर आया गया है, जो रियर-व्हील ड्राइव और लॉन्ग-रेंज RWD है। इसके RWD मॉडल की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 59.89 लाख रुपये है, जबकि लॉन्ग-रेंज RWD वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 67.89 लाख रुपये है।

Tesla Model Y के फीचर्स

इसके रियर-व्हील ड्राइव में 60 kWh बैटरी और लॉन्ग-रेंज RWD को 75 kWh बैटरी पैक के साथ लॉन्च किया गया है। इसके RWD वेरिएंट में एक सिंगल इलेक्ट्रिक मोटर दिया गया है, जो 295 hp की पावर जनरेट करता है। इसके अलावा, यह बैटरी पूरी तरह से चार्ज होने के बाद WLTP रेंज 500 किमी तक की रेंज देने का दावा किया गया है, जबकि लॉन्ग-रेंज मॉडल 622 किमी तक की रेंज दे सकती है।

78 साल का शैक्षिक सुधार: स्वतंत्रता के बाद से देश की शिक्षा प्रणाली की उल्लेखनीय यात्रा

विजय गर्ग

भारत आजादी के 78 साल मनाता है, यह देश की शिक्षा प्रणाली की उल्लेखनीय यात्रा पर विचार करने का एक उपयुक्त क्षण है। स्वतंत्रता के बाद के वर्षों से लेकर वर्तमान दिन तक, भारत ने शिक्षा के प्रति अपने दृष्टिकोण में परिवर्तनकारी परिवर्तन देखे हैं, जो अधिक समावेशी और प्रगतिशील समाज के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से, भारत ने शैक्षिक सुधार की एक उल्लेखनीय यात्रा शुरू की है, जो औपनिवेशिक अभिजात वर्ग में निहित एक से अधिक समावेशी, न्यायसंगत और विकास-उन्मुख ढांचे में अपनी प्रणाली को बदल रही है। इस 78 वर्ष के विकास को कई प्रमुख नीतियों, आयोगों और पहलों के माध्यम से पता लगाया जा सकता है जिन्होंने शैक्षिक परिदृश्य को आकार दिया है। प्रारंभिक वर्ष: नींव रखना (1947-1968) स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती वर्षों में, राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली स्थापित करने और पहुंच का विस्तार करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। 1950 में अपनाए गए भारत के संविधान में 14 साल की उम्र तक के सभी बच्चों के लिए मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का निर्देश शामिल था। विश्वविद्यालय और माध्यमिक शिक्षा की चुनौतियों का समाधान करने के लिए प्रमुख कमीशन नियुक्त किए गए थे:

** विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948-1949): डॉ। सर्वपल्ली राधाकृष्णन, इस आयोग ने तीन साल के डिग्री कोर्स की सिफारिश की और ट्यूटोरियल आधारित सीखने और ग्रामीण विश्वविद्यालयों की स्थापना के महत्व पर जोर दिया।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952-1953): मुदलियार आयोग के रूप में भी जाना जाता है, इसका उद्देश्य आदर्श नागरिकों का उत्पादन करना, व्यावसायिक कौशल विकसित करना और नेतृत्व गुणों को बढ़ावा देना है।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) (1953): उच्च शिक्षा को बढ़ावा देने और गुणवत्ता मानकों को सुनिश्चित करने के लिए स्थापित, विश्वविद्यालयों के विस्तार में यूजीसी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

आईआईटी और आईआईएम का जन्म: शेपिंग तकनीकी और प्रबंधन शिक्षा स्वतंत्रता के बाद के युग में सबसे उल्लेखनीय घटनाओं में से एक भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) और भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) की स्थापना थी। पहला आईआईटी 1951 में खड़गपुर में स्थापित किया गया था, उसके बाद मुंबई, कानपुर, मद्रास और दिल्ली में अन्य लोग थे। ये संस्थान जल्दी से उत्कृष्टता के केंद्र बन गए, विश्व स्तरीय इंजीनियरों और प्रौद्योगिकीविदों का उत्पादन किया जो भारत के औद्योगिक और तकनीकी विकास में महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

कोठारी आयोग (1964-1966) एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जो शिक्षा के पूरे क्षेत्र की व्यापक समीक्षा प्रदान करता था। इसकी सिफारिशों ने 1968 में पहली राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनपीई) का आधार बनाया। नीति में शिक्षा प्रणाली के ₹कट्टरपंथी पुनर्गठन₹ का आह्वान किया गया है, इस पर जोर दिया गया है:

राष्ट्रीय एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए समान शैक्षिक अवसर।

14 वर्ष की आयु तक के सभी बच्चों के लिए सार्वभौमिक, स्वतंत्र और अनिवार्य शिक्षा।

क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और वैश्विक संचार आवश्यकताओं को संतुलित करने के लिए तीन-भाषा सूत्र।

राष्ट्रीय आय के 6% तक शिक्षा खर्च में वृद्धि। आधुनिकीकरण और विस्तार (1986-2009) 1986 का एनपीई आधुनिक सुधारों का खाका बन गया, जिसमें असमानताओं को दूर करने और शैक्षिक अवसरों को समान करने पर विशेष जोर दिया गया। इसने कई प्रमुख पहलें पेश कीं:

** ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड (1987): आवश्यक शिक्षण सहायक उपकरण और प्रशिक्षित शिक्षक प्रदान करके प्राथमिक स्कूलों को बेहतर बनाने का लक्ष्य।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (आईजीओयु) की स्थापना के साथ खुली विश्वविद्यालय प्रणाली का विस्तार।

रोजगार को बढ़ाने के लिए ग्रेड 11-12 में व्यावसायिक शिक्षा पर जोर।

एक्शन का कार्यक्रम (पीओए) 1992: 1986 की नीति का पालन, इसने कार्यान्वयन के लिए दिशानिर्देश प्रदान किए, गुणवत्ता में सुधार, लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने और व्यावसायिक प्रशिक्षण को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया। मील का पत्थर विधान और सार्वभौमिकता (2009-2020) इस अवधि में विधायी कार्रवाई के माध्यम से शैक्षिक अधिकारों का समेकन देखा गया। 2009 के बच्चों को निः शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (आरटीई) का अधिकार एक स्मारकीय कदम था, जिससे शिक्षा 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए एक मौलिक अधिकार बन गया। आरटीई अधिनियम में यह भी कहा गया है कि निजी स्कूल वंचित बच्चों के लिए अपनी 25% सीटें आरक्षित करते हैं, जो समावेशिता के लिए एक कानूनी ढांचा प्रदान करते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 सबसे हालिया और दूरगामी सुधार का प्रतिनिधित्व करती है, जिसका उद्देश्य शिक्षा प्रणाली को पूरी तरह से ओवरहाल करना है। यह कई महत्वपूर्ण परिवर्तनों के साथ सीखने के लिए एक लचीला और समग्र दृष्टिकोण प्रस्तावित करता है:

नई 5 + 3 + 3 + 4 पाठ्यक्रम संरचना: यह समग्र सीखने को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत, तैयारी, मध्य और माध्यमिक चरणों के साथ कठोर 10 + 2 प्रणाली की जगह लेता है।

रटने की याद से अनुभवात्मक सीखने में बदलाव: नीति परियोजना-आधारित आकलन और परीक्षाओं के बोझ में कमी पर जोर देती है।

ऑनलाइन और डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना: प्रौद्योगिकी की भूमिका को स्वीकार करते हुए, एनईपी 2020 का उद्देश्य डिजिटल विभाजन को पाटना और प्रौद्योगिकी को सीखने की प्रक्रिया में एकीकृत करना है। उपलब्धियां और लगातार चुनौतियां पिछले 78 वर्षों में, भारत के शैक्षिक सुधारों ने महत्वपूर्ण उपलब्धियों को जन्म दिया है:

साक्षरता दर में वृद्धि: 1947 में महज 12% से लेकर आज 77% से अधिक, साक्षरता में नाटकीय सुधार देखा गया है।

शिक्षा प्रणाली का विस्तार: भारत अब लाखों स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के साथ दुनिया की सबसे बड़ी शिक्षा प्रणालियों में से एक का दावा करता है।

लिंग अंतर में कमी: महिला साक्षरता और नामांकन दरों में सुधार में काफी प्रगति हुई है। हालांकि, महत्वपूर्ण चुनौतियां बनी रहती हैं, जिनमें शामिल हैं:

शिक्षा की गुणवत्ता: उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, एक बड़ी चिंता का विषय है।

शिक्षक प्रशिक्षण और योग्यता: शिक्षक प्रशिक्षण में अंतराल और निरंतर व्यावसायिक विकास की आवश्यकता चल रही है।

डिजिटल विभाजन: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच प्रौद्योगिकी और ऑनलाइन संसाधनों तक पहुंच में असमानता को समान अवसरों को सुनिश्चित करने के लिए संबोधित करने की आवश्यकता है।

ड्रॉपआउट दरें: प्रगति के बावजूद, विशेष रूप से हाशिए के समुदायों से छात्रों की एक महत्वपूर्ण संख्या, अभी भी शिक्षा प्रणाली से बाहर है।

चुनौतियां और सड़क आगे पिछले 78 वर्षों में हुई महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, चुनौतियां बनी हुई हैं। गुणवत्ता शिक्षा तक पहुंच, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, और डिजिटल विभाजन उन मुद्दों को दबा रहे हैं जिन्हें संबोधित करने की आवश्यकता है। कोवड-19 महामारी ने इन विषमताओं को और अधिक उजागर किया, जिसमें कई छात्र ऑनलाइन शिक्षण संसाधनों तक पहुंचने में असमर्थ थे।

हालांकि, चल रहे सुधारों और नवाचार और समावेशिता पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करने के साथ, भारत की शिक्षा प्रणाली विकसित होने के लिए तैयार है। एनईपी 2020 द्वारा निर्धारित महत्वाकांक्षी लक्ष्यों के लिए सार्वभौमिक शिक्षा की नींव रखने वाले शुरुआती सुधारों से, भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास देश की व्यापक आकांक्षाओं को दर्शाता है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब -

क्या हमारी पहचान 30 सेकंड के रील में सिमट कर रह गई है

विजय गर्ग

रिश्ते अब कैमरे के फ्रेम में तो हैं पर दिल के फ्रेम से गायब हैं। ये डिजिटल दुनिया हमें कनेक्ट कम और डिसकनेक्ट ज्यादा कर रही है- अपनों से, खुद से और असल खुशी से।

'सेल्फी लेते रह गए और जिंदगी निकल गई' ये कोई शायरी नहीं, यह हमारी पीढ़ी की त्रासदी है। मां की आंखें बूढ़ी हो गईं, पर हमने एक बार भी बिना कैमरे के उन्हें गौर से नहीं देखा। पापा की हथेलियां दरक गईं पर उनके संघर्ष का क्लोज़अप नहीं लिया। आज हर हाथ में मोबाइल है, हर चेहरे पर कैमरा है और हर दिल में खालीपन है ! तस्वीरों में मुस्कुराहट है पर हकीकत में थकावट है। रील्स में खुशियां हैं पर घर में तन्हाइयां हैं।

आज के दिन हर मोड़, हर रेस्टोरेंट, स्कूल-कॉलेज कैंपस, मंदिर, पार्क, पुल, पहाड़, झरना-नहर, खेत और श्मशान घाट तक में अब एक हाथ में मोबाइल और दूसरे में 'पोज' होता है। हमारा खाना ठंडा हो सकता है, पर उसका फोटो गर्म होना चाहिए। अब जिंदगी में रिश्ते नहीं, सिर्फ क्लिक है, क्लाउड है और लाइक्स हैं !

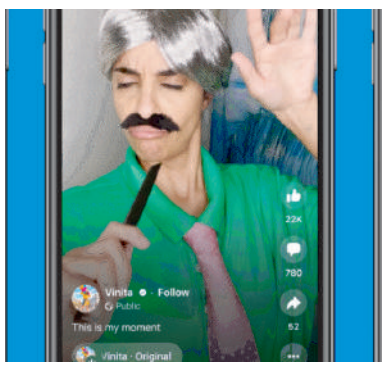

मोबाइल की स्क्रीन पर उंगलियां चलती रहीं... और उधर जिंदगी सरकती रही। रिश्ते अब कैमरे के फ्रेम में तो हैं पर दिल के फ्रेम से गायब हैं। ये डिजिटल दुनिया हमें कनेक्ट कम और डिसकनेक्ट ज्यादा कर रही है- अपनों से, खुद से और असल खुशी से। जीते जी जो बेटे पापा को देखकर मुस्कुराते तक नहीं थे, अब उन्हीं की तस्वीर पर कैप्शन लिखते हैं- मिस यू पापा। और नीचे 373 लाइक्स। अरे पगले ! जब वो जिंदा थे, तब लाइक नहीं चाहिए था, तब थोड़ी सी तवज्जो चाहिए थी।

और फिर एक दिन फोन में 50,000 फोटोज होते हैं, पर देखने वाला कोई नहीं होता। यह कोई आम चलन नहीं, यह एक धीमी मौत है, मुस्कुराते हुए आत्महत्या। मोबाइल कंपनियां हमारा दिमाग खा रही हैं... और हम खुश हैं ! हर महीने नया कैमरा, हर साल नया मॉडल। लेकिन कभी हमारे भीतर के इंसान को अपडेट करने की बात नहीं होती।

हमने वो समय देखा है जब आशीर्वाद स्पर्श से मिलता था, अब फोटो में हाथ जोड़े इमोजी भेजी जाती है। पहले जब कोई दूर होता था, चिट्ठियां आती थीं अब पास रहते हुए भी 'सीन' लिखा हुआ रह जाता है। अब स्टोरी नहीं, संवेदनाओं की जरूरत है। स्क्रीन नहीं, संवाद की जरूरत है। क्या हमारी पहचान 30 सेकंड के रील में सिमट कर रह गई है ? सत्य यह है कि दुनिया अदाओं की बजाय अद्भुत कामों को पसंद करती है। जीवन सिर्फ मेकअप, मिरर और म्यूजिक के लिए नहीं बना। इसलिये अब रील्स नहीं, असली जिन्दगी की रिकॉर्डिंग चालू करो ! रील नहीं रोल मॉडल बनो।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

लघुकथा: "चार बजे की माँ"

(लेखिका: डॉ. प्रियंका सौरभ)

सुबह के चार बजे थे।
बाहर अभी भी अंधेरा पसरा था, मगर प्रियंका की नींद खुल चुकी थी।
अलार्म बजने से पहले ही उसकी आँखें खुल गई थीं — जैसे उसकी जिम्मेदारियाँ अलार्म से भी पहले जाग जाती हों।
बिस्तर छोड़ते ही ठंडी ज़मीन पर पैर रखते हुए एक ही ख्याल —
"आज कुछ भी छूटे नहीं "
रसोई में गई। चुपचाप गैस जलाया, दूध चढ़ाया, टिफिन के डिब्बे एक-एक करके निकालने लगी।
किचन की खामोशी में बस स्टील की हल्की खटपट थी, और प्रियंका की साँसों की रफ्तार।
4:30 बजे तक उसने पति की चाय, बेटे का दूध, अपने ऑफिस की फाइलें और कल के झूठे बर्तन — सब सँभाल लिए थे।
लेकिन मन ? वो तो अब भी बिखरा हुआ था।
5 बजे नहाकर तैयार हुई। बेटे की यूनिफॉर्म प्रेस की।
हर बार घड़ी की सूइयों को देखती — जैसे वो नहीं, घड़ी उससे भाग रही हो।
5:40 —
बेटे की हलचल शुरू हुई।
थोड़ा करवट, थोड़ी कुनमुनाहट।
प्रियंका की रफ्तार और तेज़ हो गई।
अब सब्ज़ी बनानी थी।
लेकिन तभी —
टप्प... दूध उबलकर गिर गया।
पीछे से एक रोती आवाज़ —
"मम्मा "
6 बजे तक बच्चा पूरी तरह जाग चुका था, और उसके साथ उसकी माँ के लिए छटपटाहट भी।
प्रियंका भागी कमरे की ओर।
उसे गोद में उठाना चाहा, लेकिन उसी वक्त पति ने कहा —
"तुम बस तैयार हो जाओ, मैं सम्भालता हूँ।"
बेटा बिलखता रहा — "मम्मा... मम्मा... मत जाओ ना..."
वो चुप थी, क्योंकि उसके पास कहने को कुछ नहीं था — सिवाय एक बोझिल मुस्कान के।
जल्दी में दुपट्टा ढूँढा, नहीं मिला।
जो भी कपड़ा सामने आया, पहन लिया।
टिफिन में जल्दी से रोटियाँ रखीं, और सब्ज़ी फिर भूल गई।
पति की गोद में रोता बच्चा...
उसे देखते हुए प्रियंका का दिल फट रहा था।
एक बार फिर मन बोला —
"आज रुक जाऊँ ?"
पर जिम्मेदारी ने उसे चुप करा दिया।
6:30 बजे दरवाज़ा खुला।
उसने बेटे की ओर देखा —
माँ की नज़र में आँसू थे, बेटे की आँखों में सवाल।
बिना चूमे, बिना गले लगाए...
बस एक निगाह में वो सब कह गई जो शब्दों में

कभी नहीं कहा जा सकता।
गली के मोड़ तक पहुँची —
तभी फिर वही टुकड़ा आवाज़ में चुभा —
"मम्मा "
वो रुकी।
साँस रुकी।
वक़्त रुका।
लेकिन फिर उसने अपने आँसू पोंछे,
चेहरे पर एक झूठी मुस्कान सजाई,
और खुद से कहा —
"माँ हूँ मैं टूट नहीं सकती।"
और चल दी —
चार बजे शुरू हुआ उसका दिन,
अब ड्यूटी पर पहुँचने जा रहा था।

हर रोज़ वो माँ चार बजे नहीं, खुद से दो घंटे पहले जागती थी
ताकि एक दिन उसका बेटा यह कह सके —
"मेरी माँ दुनिया की सबसे मज़बूत और सबसे प्यारी माँ है।"

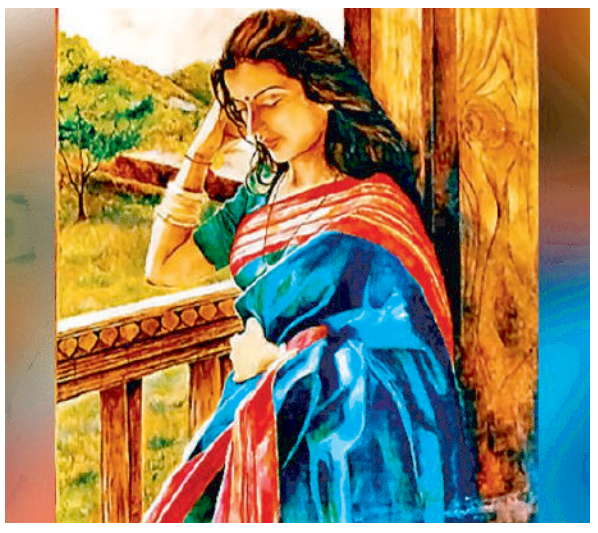

वैज्ञानिक ढंग से हो श्रद्धालुओं की भीड़ का प्रबंधन, पर्यटन तीर्थस्थलों में हादसे

विजय गर्ग

देश के तीर्थस्थलों व मेलों में हादसों का सिलसिला निरंतर जारी है। निस्संदेह, ऐसे हादसे अफवाह व संकरे आवागमन मार्गों के चलते होते हैं। बढ़ती भीड़ के मद्देनजर प्रबंधन वैज्ञानिक तरीके से होना चाहिए। साथ ही अधिकारियों की जवाबदेही भी तय होनी चाहिए।

पर्यटन क्षेत्र देश की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख स्रोत और रोजगारपरक क्षेत्र है। देश को तीन प्रकार के पर्यटन से आय प्राप्त होती है। विदेशी पर्यटकों के आगमन से देश को विदेशी मुद्रा मिलती है और अनेक लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध होते हैं। इस प्रायद्वीपीय और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर देश में तीन प्रमुख प्रकार के पर्यटन प्रचलित हैं। पहला, रमणीय पर्यटन, जिसमें पर्यटक दर्शनीय स्थलों का आनंद लेने आते हैं। दूसरा, चिकित्सीय (मेडिकल) पर्यटन, जिसमें विदेशी रोगी भारत में बेहतर और सस्ती चिकित्सा सुविधाओं के कारण आते हैं। तीसरा, धार्मिक पर्यटन है। धार्मिक आस्था से ओतप्रोत इस देश में श्रद्धालुओं की धर्मस्थानों पर निरंतर भीड़ रहती है। विशेषकर सावन जैसे पवित्र महीनों में धार्मिक स्थलों पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है, जिससे यह पर्यटन और भी सक्रिय हो जाता है।

धार्मिक श्रद्धालुओं का जमावड़ा कभी कम नहीं होता। कई बार भगदड़ जैसी घटनाओं में हृदयविदारक समाचार मिलते हैं, फिर भी पहले से भी अधिक भीड़ जुट जाती है। किसी भी प्रकार की दुर्घटना श्रद्धालुओं के उत्साह को कम नहीं कर पाती। लोग आस्था के समर्पण में इतने लीन रहते हैं कि यह देख कर आश्चर्य होता है कि देश धर्मस्थलों के प्रति कितना समर्पित है। सनातन धर्म में यह विश्वास है कि मंदिरों में साक्षात परमात्मा साकार रूप में विराजमान होते हैं। यही विश्वास करोड़ों श्रद्धालुओं को धर्मस्थलों की ओर आकर्षित करता है।

लेकिन आस्था को समर्पित इस देश में, विशेषकर सावन के पावन महीने में, हाल ही में लगातार जो दुर्घटनाएं हुईं, उनमें कई लोगों ने अपनी जान गंवाई और अनेक गंभीर रूप से घायल हुए। जब इन घटनाओं के कारणों की पड़ताल की जाती है, तो या तो बेबुनियाद अफवाहें सामने आती हैं, या फिर प्रशासनिक लापरवाही उजागर होती है। कभी-कभी श्रद्धालुओं की जल्दबाज़ी और

पहले दर्शन की होड़ में की गई धक्का-मुक्की भी भगदड़ का कारण बन जाती है। ऐसी भगदड़ों में लोगों के कष्टों का कोई अंत नहीं होता — जानें जाती हैं, लोग घायल होते हैं, परिवार उजड़ते हैं।

बीते 27 जुलाई को उत्तराखंड के हरिद्वार स्थित मनसा देवी मंदिर में मची भगदड़ में कुछ श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जबकि 36 श्रद्धालु घायल हो गए। बताया गया कि सीढ़ियां चढ़ते समय एक खंभे से जुड़े शॉर्ट सर्किट की अफवाह फैली, जिससे लोग घबरा गए और हड़बड़ी में पीछे हटने लगे।

ये घटनाएं यहीं खत्म नहीं होतीं। गत 28 जुलाई को उत्तर प्रदेश के बाराबंकी स्थित अवसानेश्वर मंदिर में भी भगदड़ की एक और दुखद घटना घटी। जलाभिषेक के दौरान करंट फैलने से दो लोगों की मौत हो गई और 29 श्रद्धालु घायल हो गए।

घटना के तुरंत बाद मंदिर की बिजली काटनी पड़ी, जिससे गर्भगृह में अंधेरा छा गया। इसके बावजूद श्रद्धालु अंधेरे में ही दर्शन और जलाभिषेक करते रहे। इसी दौरान, एक मंत्री के मंदिर में पुष्पवर्षा करने की खबर फैल गई, और देखते ही देखते वहां तीन लाख से अधिक लोग जुट गए। अत्यधिक भीड़ के कारण भगदड़ मच गई, और एक बार फिर हादसा सामने आया।

इस तरह की घटनाओं का एक सिलसिला बनता जा रहा है। भारी भीड़ में आगे बढ़ने की होड़ के बीच जब कोई अफवाह फैला दी जाती है तो लोग घबरा जाते हैं और इधर-उधर भागने लगते हैं।

यह कहना भी गलत होगा कि भगदड़ केवल अफवाहों के कारण होती है। प्रशासन की लापरवाही भी इन घटनाओं का एक प्रमुख कारण है। जब किसी मेले या धार्मिक आयोजन में भारी भीड़ जुटनी तय हो, तो प्रशासन को पहले से इसका उचित अनुमान होना चाहिए। श्रद्धालुओं के प्रवेश और निकास के लिए अलग-अलग मार्ग निर्धारित किए जाने चाहिए। इसके अतिरिक्त, मंदिर परिसरों में ऐसे सतर्क सुरक्षाकर्मी या स्वयंसेवक नियुक्त किए जाने चाहिए जो भीड़ को व्यवस्थित रूप से नियंत्रित कर सकें और श्रद्धालुओं को चरणबद्ध तरीके से दर्शन के लिए आगे बढ़ने दें। ऐसा प्रतीत होता है कि भीड़ की प्रकृति और व्यवहार का समुचित मूल्यांकन न होने के कारण, या प्रशासन की लचर निगरानी से ये घटनाएं बार-बार घटती हैं।

आने वाले समय में आस्था-पर्यटन के लिए भीड़ और भी बढ़ेगी। ऐसे में, इन तीर्थस्थलों और मेलों का प्रबंधन करने वाले अधिकारियों की जिम्मेदारी कई गुना बढ़ जाती है। उन्हें न केवल संभावित भीड़ का सही आंकलन करना चाहिए, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि उसे किस प्रकार नियंत्रित किया जाए।

अक्सर धर्मस्थलों पर प्रवेश और निकास का रास्ता एक ही होता है, जिससे भीड़ की आवाजाही में बाधा आती है और भगदड़ की आशंका बढ़ जाती है। अक्सर जिम्मेदार अधिकारी समय पर सक्रिय नहीं होते। घटनाओं के बाद वे केवल मृतकों को श्रद्धांजलि देने और मुआवज़े की घोषणा करने के लिए आगे आते हैं। यह रवैया अब बदलना चाहिए।

विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

टैबलेट या सरकारी खिलौने ? तकनीकी शिक्षा का बड़ा धोखा

हरियाणा सरकार ने कोविड काल में 700 करोड़ रुपये खर्च कर 5 लाख छात्रों को टैबलेट बांटे थे, जिनका उद्देश्य डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देना था। परंतु तीन साल बाद इन टैबलेट्स में न तो सिम कार्ड हैं, न इंटरनेट की सुविधा, और न ही इनसे पढ़ाई हो रही है। इनमें 2025-26 तक का सिलेबस तो अपलोड है, लेकिन उपयोग शून्य। यह लेख सरकारी तंत्र की लापरवाही, नीति निर्माण की खामियों और बच्चों के भविष्य के साथ हुए छल पर सवाल उठाता है। तकनीक का दिखावा शिक्षा के अधिकार की हत्या बन चुका है।

- डॉ. सत्यवान सौरभ

कोविड-19 ने भारत समेत पूरी दुनिया को शिक्षा के डिजिटल स्वरूप की अहमियत से रूबरू कराया। जब स्कूल बंद थे, तब ऑनलाइन क्लास ही बच्चों की एकमात्र शैक्षणिक जीवन रेखा बनी। ऐसे में हरियाणा सरकार द्वारा 700 करोड़ की लागत से 5 लाख छात्रों को टैबलेट बाँटना एक प्रशंसनीय निर्णय प्रतीत हुआ। योजना थी कि छात्र आधुनिक तकनीक से जुड़ेंगे, डिजिटल ज्ञान की दुनिया में कदम रखेंगे और सरकारी शिक्षा का स्तर ऊँचा उठेगा। लेकिन जैसे-जैसे वक्त बीता, यह योजना एक झूठे वादे, दिखावटी प्रयास और भारी भरकम बजट की बर्बादी में बदलती गई।

एक रिपोर्ट ने इस योजना की सच्चाई उजागर की। रिपोर्ट के अनुसार, टैबलेट वितरण के तीन साल बाद भी छात्रों ने इनका सही उपयोग नहीं किया। ये टैबलेट आज बिना सिम, बिना इंटरनेट सुविधा और बिना कोई तकनीकी सहायता के बंद पड़े हैं। इनमें तीन साल का सिलेबस जरूर अपलोड है, पर पढ़ाई नहीं हुई। शिक्षा मंत्री तक को अब इस स्थिति की जानकारी मिली है और वे मुख्यमंत्री से मिलने की तैयारी में हैं।

यह कोई साधारण चूक नहीं है। यह शिक्षा के नाम पर किया गया राजनीतिक ढकोसला है। ऐसी योजनाएं न केवल छात्रों का समय और भविष्य बर्बाद करती हैं, बल्कि समाज के सबसे कमजोर तबके — गरीब, दलित, ग्रामीण बच्चों — के साथ अन्याय भी करती हैं, जो केवल सरकारी स्कूलों में ही पढ़ पाते हैं।

प्रश्न यह है कि इतनी बड़ी योजना की बुनियादी विफलता का जिम्मेदार कौन है ?

सरकार ने बिना ज़मीनी तैयारी किए यह योजना लागू की। टैबलेट तो बांट दिए गए, लेकिन इनमें सिम कार्ड या नेटवर्क नहीं था। स्कूलों में वाई-फाई की व्यवस्था नहीं थी। शिक्षकों को प्रशिक्षण नहीं दिया गया कि इन टैबलेट्स से पढ़ाना कैसे है। तकनीकी सहायता के लिए कोई हेल्पलाइन या सपोर्ट स्टाफ नहीं था। बच्चों के घरों में बिजली और चार्जिंग की सुविधा भी सुनिश्चित नहीं की गई। इन बुनियादी सवालों को दरकिनार कर केवल टैब बांटना ही योजना मान लिया गया। यह सोच ही असफलता का बीज थी। टैबलेट बाँटना ही शिक्षा नहीं है — बल्कि उन्हें उपयोगी बनाना, बच्चों को प्रशिक्षित करना, और शिक्षकों को इसके प्रति संवेदनशील बनाना — असल काम था।

इस विफलता का बड़ा कारण हमारी नौकरशाही और राजनीतिक संस्कृति है, जहाँ योजनाएं सिर्फ 'दिखावे' के लिए बनाई जाती हैं। फोटो खिंचवाना, प्रेस विज्ञप्ति जारी करना और सोशल मीडिया पर तालियाँ बटोरना असली उद्देश्य बन जाता है। योजना ज़मीन पर कैसे उतर रही है, इसकी कोई जवाबदेही नहीं होती।

इसका सीधा असर बच्चों पर पड़ा है। सोचिए एक ग्रामीण बच्चे को टैबलेट तो मिला, लेकिन उसमें इंटरनेट नहीं, शिक्षक नहीं, मार्गदर्शन नहीं — ऐसे में वह टैबलेट उसके लिए सिर्फ एक इलेक्ट्रॉनिक खिलौना बनकर रह गया।

योजना का दूसरा पहलू यह है कि शिक्षा विभाग ने इन टैबलेट्स में पहले से ही तीन साल का सिलेबस अपलोड कर दिया था। यानी मान लिया गया कि बच्चों को बस टैब मिल जाए, पढ़ाई अपने आप हो जाएगी। यह सोच बताती है कि शिक्षा विभाग बच्चों को ₹उपभोक्ता₹ की तरह देख रहा है, ₹विद्यार्थी₹ की तरह नहीं।

अब सवाल यह उठता है — क्या टैबलेट में पाठ्यक्रम अपलोड कर देना ही शिक्षा है ? क्या शिक्षक की भूमिका इतनी नगण्य हो गई है कि वह केवल एक फॉर्मेलिटी भर है ? क्या डिजिटल शिक्षा का अर्थ केवल डिवाइस बाँटना भर है ?

शिक्षा एक संवाद है — एक दोतरफा प्रक्रिया। इसमें तकनीक एक माध्यम हो सकता है, साध्य नहीं। जब तक शिक्षक, छात्र और सामग्री तीनों एक साथ न जुड़ें — तब तक शिक्षा अधूरी है। टैबलेट अकेले इस त्रिकोण को पूरा नहीं कर सकते।

इस पूरे घटनाक्रम में एक और हैरान कर देने वाली बात यह है कि योजना के तीन साल बाद तक भी कोई ऑडिट नहीं हुआ। किसी अधिकारी ने यह जानने की कोशिश नहीं की कि टैबलेट इस्तेमाल हो रहे हैं या नहीं। यह दर्शाता है कि शिक्षा विभाग में योजना का मूल्यांकन और निगरानी तंत्र कितना कमजोर है।

सच्चाई यह है कि इस तरह की योजनाओं में भ्रष्टाचार, कमीशनखोरी और राजनीतिक प्रचार का एक घिनौना खेल चलता है। टैबलेट की खरीद से लेकर वितरण तक कई स्तरों पर घालमेल संभव है — और यही कारण है कि शिक्षा विभाग इस विफलता पर चुप्पी साधे बैठा है।

क्या इसका समाधान नहीं है ? बिल्कुल है।

सरकार को तुरंत टैबलेट्स की स्थिति का सर्वेक्षण करवाना चाहिए। हर स्कूल में वाई-फाई सुविधा अनिवार्य रूप से स्थापित होनी चाहिए। शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा का प्रशिक्षण दिया जाए। हर स्कूल में एक तकनीकी सहायक नियुक्त किया जाए। हर महीने टैबलेट उपयोग का डेटा सार्वजनिक किया जाए। भविष्य में कोई भी डिजिटल योजना लागू करने से पहले पायलट प्रोजेक्ट ज़रूरी हो।

और सबसे ज़रूरी बात — शिक्षा के क्षेत्र में नीति बनाते समय ज़मीन से जुड़े शिक्षकों और छात्रों की राय को शामिल किया जाए। केवल सचिवालय में बैठकर योजनाएं बनाना अब शिक्षा के भविष्य के साथ खिलवाड़ है।

हमें यह समझना होगा कि सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाला बच्चा भी एक सपना लेकर आता है — वह डॉक्टर बनना चाहता है, वैज्ञानिक, टीचर या लेखक बनना चाहता है। लेकिन जब उसे ऐसे ₹बंद टैबलेट₹ थमाए जाते हैं, तो यह उसके सपनों के साथ धोखा होता है।

टैबलेट योजना एक चेतावनी है — कि यदि सरकारें शिक्षा को प्रचार माध्यम समझती रहीं, तो लाखों बच्चों का भविष्य अंधेरे में चला जाएगा। शिक्षा का डिजिटलीकरण आवश्यक है, लेकिन वह केवल उपकरणों से नहीं, बल्कि नीति, प्रशिक्षण और निगरानी से संभव है।

इसलिए समय आ गया है कि हम तकनीक के पीछे भागना छोड़, उसके बेहतर इस्तेमाल की समझ विकसित करें। टैबलेट के नाम पर 700 करोड़ जलाने से बेहतर होता कि उस पैसे से हज़ारों स्कूलों में लाइब्रेरी, लैब और प्रशिक्षित शिक्षक नियुक्त किए जाते।

आज ज़रूरत है — शिक्षा को सेवा की तरह देखा जाए, सौदे की तरह नहीं। और छात्रों को ग्राहक नहीं, भविष्य का निर्माता समझा जाए।

बारिश के मौसम में खान-पान और जीवनशैली का रखें ध्यान !

हमारे देश में जून से सितंबर भारी बारिश होती है। हाल फिलहाल अगस्त का महीना चल रहा है और देश में खूब बारिश हो रही है। बारिश में हमें अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए, क्यों कि बारिश के मौसम में कई तरह की बीमारियां जैसे कि डेंगू, मलेरिया, टाइफाइड, पीलिया, चिकनगुनिया, वायरल बुखार, दस्त, और त्वचा संक्रमण फैलने का खतरा बढ़ जाता है। मानसून के मौसम में वातावरण में नमी हमारे शरीर को कई संक्रमणों और बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील बनाती है। कहना ग़लत नहीं होगा कि बारिश का मौसम अपने साथ सुकून, हरियाली और ताजगी तो लाता है, लेकिन साथ ही शरीर के लिए कुछ चुनौतियां भी खड़ी करता है। वातावरण में नमी, तापमान में गिरावट और भोजन के पचने की क्षमता में कमी – ये सभी बदलाव हमारे शरीर की कार्यप्रणाली को बहुत प्रभावित करते हैं। नमी, गंदगी और बदलता तापमान शरीर की इम्यूनिटी को कमजोर कर देता है, जिससे सर्दी-जुकाम, वायरल फीवर, स्टमक(पेट) इंफेक्शन, फूड पॉइजनिंग और त्वचा संबंधी रोगों का खतरा बढ़ जाता है। ऐसे में मौसम के अनुसार खान-पान का ध्यान रखना बहुत ही आवश्यक है। दूसरे शब्दों में कहें तो बारिश के मौसम में बीमारियों से बचने के लिए सावधानी बरतना बहुत ज़रूरी है। मसलन, हमें यह चाहिए कि इस मौसम में हम स्वच्छता का विशेष ध्यान रखें। हमें यह चाहिए कि हम बारिश के मौसम में अपने हाथों को बार-बार धोएं, खासकर खाना खाने से पहले और बाद में। बारिश में पानी को हमेशा उबालकर पीना चाहिए, ताकि हम टाइफाइड, पीलिया, डायरिया जैसे रोगों से स्वयं व अपने परिवार का बचाव कर सकें। इस मौसम में हमें अपने घरों के आसपास पानी जमा नहीं होने देना चाहिए तथा फुल स्लीव्स के कपड़े पहनने चाहिए, और मच्छरदानी का उपयोग करना चाहिए। बारिश के मौसम में कीट-पतंगों, सांप, मच्छरों और अन्य जीव जंतुओं से बचाव भी बहुत ही जरूरी है। त्वचा की देखभाल भी इस मौसम में विशेष जरूरी है, इसके लिए हम अपनी त्वचा को सूखा और साफ रखें, और फंगल संक्रमण से बचने के लिए एंटीफंगल पाउडर का उपयोग कर सकते हैं। आज हमारी जीवनशैली बहुत बदल चुकी है। पाठकों को बताता चलूं कि सावन और भाद्रपद(बारिश के महीनों में) के महीनों में, प्राचीन काल से ही खान-पान में कुछ विशेष परहेज बरते जाते रहे हैं। इन महीनों में, विशेष रूप से बारिश के मौसम में, पाचन क्रिया बहुत धीमी हो जाती है, और जैसा कि ऊपर भी जानकारी दे चुका हूं कि वातावरण में भी कीटाणुओं का प्रकोप भी बढ़ जाता है। इसलिए, इन महीनों में कुछ विशेष चीजों से जैसे कि मांस, मछली, और अंडा(मांसाहारी भोजन), प्याज, लहसुन, शहद, हरी पत्तेदार सब्जियां, बैंगन, मूली तथा दही आदि से परहेज करना चाहिए, ताकि स्वास्थ्य ठीक रहे और संक्रमण से बचा जा सके। सावन और भाद्रपद के महीनों में हल्का और सुपाच्य भोजन जैसे कि मूंग, मसूर, और अन्य दालें, चपाती आदि लेना चाहिए। पुराने चावल भी खाये जा सकते हैं। सब्जियों में परवल, तुरी, भिंडी, लौकी, कद्दू,

और अन्य मौसमी सब्जियां खाई जा सकती हैं। फलों में सेब, केला, अनार, लीची और अन्य मौसमी फलों का भी सेवन किया जा सकता है। वास्तव में, मौसमी फल विटामिन और खनिजों से भरपूर होते हैं, जो रोग प्रतिरोधक क्षमता यानी इम्यूनिटी को बढ़ाने में मदद करते हैं। इन मौसमी फलों में पानी की मात्रा कम होती है और इसलिए ये पानी से होने वाली बीमारियों के जोखिम को कम करते हैं। इन्हें अपनी मानसून डाइट में शामिल करना चाहिए। कहना ग़लत नहीं होगा कि बदलते मौसम के साथ खानपान से लेकर लाइफस्टाइल(जीवनशैली) का भी विशेष ध्यान रखना पड़ता है। इस दौरान हमारे शरीर की इम्यूनिटी(रोग प्रतिरोधक क्षमता) कमजोर हो जाती है और संक्रमण का खतरा अधिक बढ़ जाता है। बारिश के मौसम में हमें यह चाहिए कि हम मसालेदार भोजन से बचें, क्यों कि मसालेदार भोजन हमारी पाचन संबंधी समस्याओं को और भी बदतर बना सकता है, जो मानसून के मौसम में सबसे आम स्थिति है। ह्यूमिडिटी या नमी शरीर की पाचन क्षमता को प्रभावित करती है और मसालेदार भोजन खाने से एसिडिटी, अपच और बेचैनी जैसी समस्याएं हो सकती हैं। शाम के समय तो हमेशा (हर मौसम में) हल्का और सुपाच्य भोजन ही करना उचित और बेहतर रहता है। इस मौसम में हमें अत्यधिक नमक सेवन से बचना चाहिए, क्यों कि अत्यधिक नमक से पानी की कमी और ब्लोटिंग हो सकती है, जो कि नमी वाले मौसम में विशेष रूप से असुविधाजनक होती है और हाई ब्लड प्रेशर जैसी स्थितियों को बढ़ा सकती है। बरसात के मौसम में तले हुए फूड्स(पकौड़ा, जलेबी, पूड़िया आदि) अधिक पसंद किए जाते हैं, लेकिन ये हमारे पाचन को भी प्रभावित कर सकते हैं। तले हुए फूड्स में फैट की हाई मात्रा हमारे पाचन को धीमा कर देती है और यह ब्लोटिंग और बेचैनी का कारण बन सकती है। हमें यह चाहिए कि हम इन फूड्स से बचें। खिचड़ी, सूप, और उबली हुई सब्जियां बारिश के मौसम में हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छी रहतीं हैं। इस मौसम में हम तुलसी, अदरक, लौंग, कालीमिर्च और हर्बल चाय का सेवन कर सकते हैं, क्यों कि ये हमारी इम्यूनिटी को बूस्ट करते हैं। जीरा और हींग का सेवन बारिश के मौसम में अच्छा रहता है, क्यों कि ये हमारे पाचन तंत्र को संतुलित और मजबूत करते हैं। हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि जो चीज़ हमें स्वाद में अच्छी लगती है, वह हर मौसम में सही नहीं होती है। अंत में यही कहूंगा कि बारिश के मौसम में हमें संतुलित जीवनशैली को अपनाना चाहिए, यही हमारे लिए हितकर है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर,

राज्य सरकार ने अक्षम अधिकारियों की जानकारी मांगी

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : राज्य सरकार ने जानकारी मांगी है कि किस विभाग में कितने अयोग्य अधिकारी हैं और उनमें से कितनों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी गई है। इस संबंध में प्रशासनिक सचिव कार्यालय से सभी विभागाध्यक्षों को पत्र भेजा गया है। 7 तारीख तक सारा ब्यौरा सरकार को देने का आदेश दिया गया है। इसे लेकर अब सभी विभागों में घंटियाँ बजनी शुरू हो गई हैं। विभाग में कितने अफसरों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी गई है, इसकी जांच शुरू हो गई है। सोमवार को मुख्य सचिव के निर्देश पर जल संसाधन विभाग के अपर सचिव ने सभी अफसरों से रिपोर्ट मांगी है। सामान्य प्रशासन विभाग के 24 सितंबर 2019 के परिपत्र के अनुसार संबंधित अफसरों को सेवा से अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी जाएगी।

उन्होंने इस महीने की सात तारीख से पहले सरकार को सारी जानकारी देने का निर्देश दिया है। इसे लेकर अब सभी विभागों में माथापच्ची शुरू हो गई है। विभाग में कितने अफसरों को अनिवार्य सेवानिवृत्ति दी गई है, इसकी खोज शुरू हो गई है। वहीं, सोमवार को मुख्य सचिव के निर्देश पर जल संसाधन विभाग के अपर सचिव ने सभी अफसरों से रिपोर्ट मांगी है।

ओएसडी कल्याण कुमार की ओर से सभी विभागीय सचिवों को जारी पत्र में कहा गया है कि मुख्य सचिव के निर्देश पर पिछली सचिव स्तरीय बैठक में कई अहम मुद्दों पर चर्चा हुई थी। जिसमें कर्मचारियों की अनिवार्य सेवानिवृत्ति से लेकर प्रशासन में तकनीकी क्रियान्वयन समेत नागरिक केंद्रित सरकार के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई थी। इसी के मद्देनजर मुख्य सचिव ने 12 मुद्दों की स्थिति जानना चाही थी।

भारत को सनातन ने नहीं, विदेशी आक्रांताओं और कांग्रेस ने बर्बाद किया

कमलेश पांडेय

भारतीय पृष्ठभूमि वाली दुनिया की सबसे पुरातन सभ्यता-संस्कृति 'सनातन धर्म₹ पर सियासी वजहों से जो निरंतर हमले हो रहे हैं, उनका समुचित जवाब देने में अब कोई कोताही नहीं बरती जानी चाहिए अन्यथा इसकी सार्वभौमिक स्थिति और महत्ता को दरकिनार करने वाले ऐसे ही बेसिरपैर वाले क्षुद्र सवाल उठाए जाते रहेंगे।

हाल ही में तथाकथित धर्मनिरपेक्ष और अवसरवादी क्षेत्रीय पार्टी एनसीपी शरद पवार के विधायक जितेंद्र आव्हाड ने एक नया विवाद छेड़ते हुए जो कहा है कि सनातन धर्म ने भारत को बर्बाद कर दिया और इसकी विचारधारा को विकृत बताया, वह निहायत ही बेहूदगी भरी, अपरिपक्व और पूर्वाग्रह ग्रसित बयानबाजी है, उसकी जितनी भी निंदा की जाए, वह कम है।

वहीं, भारत की आत्मा समझी जाने वाली सनातन सभ्यता-संस्कृति पर ऐसी अपमानजनक टिप्पणी करने वाले जनप्रतिनिधियों के खिलाफ उनकी पार्टी को अपना स्टैंड क्लियर करते हुए उनका इस्तीफा लिया जाना चाहिए अन्यथा चुनाव आयोग को ऐसे जनप्रतिनिधियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए उनसे सम्बन्धित राजनीतिक दल की मान्यता अविलंब समाप्त की जानी चाहिए अन्यथा जनमानस में यही संदेश जाएगा कि भारतीय संविधान के मातहत जारी कार्यपालिका प्रशासन और न्यायपालिका प्रशासन में धर्मनिरपेक्षता की पक्षधरता करने वाले ऐसे ऐसे सनातन विरोधी लोग बैठे हैं जो भारत की सबसे पुरानी सभ्यता-संस्कृति के हमलावरों पर भी उसी तरह से उदार हैं जैसे कभी मुगल या अंग्रेज प्रशासक या कांग्रेसी राजनेता हुआ करते थे।

उल्लेखनीय है कि उपरोक्त विधायक का यह बयान 2008 मालेगाव विस्फोट मामले में सभी सात आरोपियों के विशेष एनआईए अदालत द्वारा बरी किए जाने के बाद आया है जिसने भगवा/हिन्दू आतंक शब्द को लेकर पिछले डेढ़ दशकों से जारी राजनीतिक बहस को एक बार फिर से गरमा दिया है।

यह अजीबोगरीब है कि पत्रकारों से बात करते हुए आव्हाड ने कहा कि सनातन धर्म ने भारत को बर्बाद कर दिया। कभी कोई धर्म सनातन धर्म नाम से नहीं था। हम हिंदू धर्म के अनुयायी हैं। यही कथित सनातन धर्म था जिसने हमारे छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक में बाधा डाली। इसी सनातन धर्म ने हमारे छत्रपति संभाजी महाराज को बदनाम किया। इसी सनातन धर्म के अनुयायियों ने ज्योतिराव फुले की हत्या का प्रयास किया।

इन्होंने सावित्रीबाई फुले पर गोबर और गंदगी फेंकी। यही सनातन धर्म शाहू महाराज की हत्या की साजिश में शामिल था। इसने आंबेडकर को पानी पीने या स्कूल में पढ़ने की अनुमति तक नहीं दी। वहीं, आव्हाड के सनातन धर्म और सनातन समाज विरोधी बयान पर राणे और संजय निरुपम ने भी ठोककर जवाब दिया है। महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री नितेश राणे ने जितेंद्र आव्हाड के बयान पर कहा कि 'हिंदू आतंकवाद' या 'सनातनी आतंकवाद' जैसी भाषा भारत की हिंदू और संत परंपरा को बदनाम करने के लिए गढ़ी गई एक परिभाषा है।

राणे की इस प्रतिक्रिया का लब्बोलुआब यह है कि हिन्दू समाज के प्रति हद से ज्यादा नकारात्मक हो चुकी कांग्रेस को देशवासियों ने सजा दी और केंद्रीय सत्ता से बाहर कर दिया जिससे कांग्रेसी बौखलाये हुए हैं। उसके लोग मुस्लिम वोटों को समाजवादियों से खींचने के लिए रणनीतिक गलतियां दर गलतियां करते जा रहे हैं। ऐसा करके वे लोग विपक्ष की राजनीति तो कब्जा सकते हैं लेकिन केंद्रीय सत्ता 15 साल बाद भी उनके लिए दिल्ली दूर ही साबित होगी।

वहीं, बीजेपी के राष्ट्रीय प्रवक्ता और सांसद संबित पात्रा ने कांग्रेस के तथाकथित ₹इकोसिस्टम₹ पर निशाना साधते हुए कहा कि वह सनातन धर्म को बदनाम करने और हिंदू आतंक जैसे शब्दों का इस्तेमाल करने पर आमादा है। उन्होंने कांग्रेस के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण के उन हालिया बयानों का भी जिक्र किया जिसमें उन्होंने सनातन आतंकवाद का नया जुमला गढ़ा है।

श्री पात्रा ने एनसीपी विधायक जितेंद्र आव्हाड के ताजा विवादित बयान का हवाला देते हुए कहा कि, ₹आव्हाड महाराष्ट्र के नेता हैं और शरद पवार की पार्टी से ताल्लुक रखते हैं। एक बार फिर उन्होंने सनातन धर्म के लिए अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल किया है। आपने सत्य का अपमान किया है, शिव के खिलाफ बोला है और उस भारत की सुंदरता का विरोध किया है। वह भारत जिसकी खूबसूरती सबके सम्मान में निहित है। मैं शरद पवार से पूछना चाहता हूं कि क्या यह आपकी पार्टी भी यही सोचती है, स्पष्ट कीजिए।

वहीं, शिवसेना नेता संजय निरुपम ने सोशल मीडिया पर लिखा, 'जितेंद्र आव्हाड ने सनातन धर्म को बदनाम करने के लिए खूब सारी फर्जी कहानियां सुनाई हैं। वे यह बताना भूल गए कि अगर सनातन धर्म नहीं होता तो वे अब तक जितेंद्र नहीं जित्तुद्दीन हो जाते। अगर सनातनी नहीं होते तो देश सऊदी अरब बन जाता।

बता दें कि महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण ने भगवा शब्द की जगह सनातन या हिंदुत्ववादी शब्दों के उपयोग की वकालत की है। मालेगांव ब्लास्ट मामले में सभी दोषियों को बरी किए जाने के बाद चव्हाण ने सनातन संगठन की आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्तता का हवाला देते हुए उस पर प्रतिबंध का समर्थन किया। उन्होंने कहा है कि आतंकवादियों के लिए 'भगवा' शब्द का प्रयोग न करके 'सनातन' या 'हिंदुत्ववादी' शब्दों का इस्तेमाल किया जाना चाहिए. उन्होंने अपने विचारों के समर्थन में ऐतिहासिक संदर्भ भी दिए।

चव्हाण ने कहा, 'मेरे मुख्यमंत्री काल में 'सनातन' संगठन की आतंकवादी गतिविधियों में संलिप्तता थी।' इस संगठन पर प्रतिबंध लगाने के लिए मैंने एक गोपनीय रिपोर्ट केंद्रीय गृह मंत्रालय को भेजी थी। उसी संदर्भ में मैंने 'सनातन' शब्द का उपयोग किया था क्योंकि उस संगठन का कार्य आतंकवादी प्रवृत्ति का था। इस संगठन पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए था।'

उन्होंने डॉ. नरेंद्र दाभोलकर और कॉ. गोविंद पानसरे की हत्याओं का जिक्र करते हुए कहा कि उनके साथ क्या हुआ और आज तक न्याय क्यों नहीं मिला, यह गंभीर प्रश्न है।

उन्होंने सवाल उठाया और कहा, 'ऑपरेशन सिंदूर पर सदन में चर्चा होनी थी, उसी समय मुंबई सीरियल ब्लास्ट और मालेगांव फैसले का आना संयोग है या साजिश? मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने जब मालेगांव केस चल रहा था, तब जो बयान दिया था, उसका असर कोर्ट के निर्णय पर पड़ा हो, तो यह गंभीर मामला है।

चव्हाण ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर भी सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा, 'बीते 15 वर्षों से अमित शाह केंद्रीय गृह मंत्री हैं लेकिन इस अवधि में जांच एजेंसियों ने न्यायोचित कार्य नहीं किया है। ये सब सोची-समझी रणनीति के तहत किया गया है।' मुंबई विस्फोट और मालेगांव दोनों मामलों में सरकार को उच्च न्यायालय में अपील करनी चाहिए।'

चव्हाण के अनुसार, कोई भी धर्म आतंकवादी नहीं होता लेकिन नाथूराम गोडसे की विचारधारा संघ की थी। सरदार वल्लभभाई पटेल ने एक समय संघ पर प्रतिबंध लगाया था। उन्होंने यह भी साफ किया कि चिदंबरम, सुशील कुमार शिंदे और दिग्विजय सिंह ने 'भगवा आतंकवाद' शब्द का उपयोग किया था लेकिन मैं और मेरी पार्टी उस शब्द से सहमत नहीं थे और आज भी नहीं हैं। इसलिए सनातनी आतंकवाद कहते हैं।

तल्ख हकीकत यह है कि भारत को सनातन ने नहीं, विदेशी आक्रांताओं और कांग्रेस ने बर्बाद किया। आजादी की प्राप्ति के बाद तुष्टिकरण की राजनीति करते हुए तत्कालीन हिंदूवादी कांग्रेस ने हिंदुओं के साथ छल किया। जब तक हिन्दू समाज इसे समझ पाया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। हिन्दू हित के जो कार्य 1947 में ही शुरू कर दिए जाने चाहिए थे, वो 1998-99 में प्रारंभ हुए लेकिन उन्हें सही गति 2014 के बाद मिल पाई।

अभी भी तथाकथित धर्मनिरपेक्षता इस राह में सबसे बड़ी बाधक है। यह इस्लामिक व ईसाइयत को संरक्षण देती है तो हिंदुओं को सिख, बौद्ध, जैन आदि पंथ को धर्म ठहराकर तोड़ती है। इससे हिन्दू समाज आंदोलित है। उसे योगी शासन का इंतजार है ताकि यूपी की तरह पूरे देश का कायाकल्प संभव हो सके।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

शिबू सोरेन: जंगल से संसद तक —दिशोम गुरु की राजनीतिक दास्तान

ओंकारेश्वर पांडेय

दिशोम गुरु शिबू सोरेन चले गए। 10 बार सांसद, 3 बार मुख्यमंत्री और उससे भी बढ़कर—वो शख्स जिसने तीर-कमान से नहीं बल्कि संघर्ष और अपनी सियासी चालों से बिहार के आदिवासियों को उनका हक दिलाया। अलग झारखंड का सपना उठाने वाले कई थे पर उसे सच करने वाला सिर्फ एक नाम था—दिशोम गुरु।

लोग कहते हैं, "गुरुजी सिर्फ नेता नहीं थे, आंदोलन की आत्मा थे।" उनके समर्थकों के लिए वे एक विचार थे, एक प्रतिरोध की पहचान।

नेमरा से उठी हुंकार, जिसने पूरा बिहार हिला दिया

भारतीय राजनीति में झारखंड आंदोलन दरअसल आदिवासी पहचान की वह कहानी है, जिसे दिशोम गुरु ने खून-पसीने से लिखा।

11 जनवरी 1944 को रामगढ़ के नेमरा गांव में जन्मे शिबू सोरेन ने बचपन में साहूकारों की लूट देखी, खनन कंपनियों का लालच देखा। 1969 का अकाल, जब सरकारी गोदामों में अनाज सड़ रहा था और आदिवासी भूख से मर रहे थे, ने उनके भीतर ज्वाला भर दी। उन्होंने कसम खाई—"जल, जंगल, जमीन की लड़ाई लड़ी जाएगी।"

नेमरा (रामगढ़) की गलियों से उठी उनकी आवाज़ ने 1960–70 के दशक में आवाम को झकझोरा। जब धनकटनी आंदोलन शुरू हुआ, तब आदिवासी महिलाएँ खेतों से धान काटकर ले जाती थीं, पुरुष तीर-कमान लिए पहरे पर खड़े रहते थे पर सिस्टम भी था—सरेंडर, गिरफ्तारी, गिरफ्तारी वारंट तक जारी।

उनकी शुरुआत छोटी थी पर असर बड़ा। धान जब्ती आंदोलन से शिबू सुर्खियों में आए। साहूकारों के गोदामों से अनाज निकालना, तीर-कमान लिए आदिवासी पहरेदारों का पहरा— यह केवल विरोध नहीं था, यह सिस्टम को सीधी चुनौती थी।

एक दिन शिबू सोरेन पारसनाथ के जंगलों में छिप गए, वहीं से आंदोलन चला—"बाहरी" लोगों को निकालो, "झारखंड को शोषण से मुक्त करो"—सपनों के इस आंदोलन ने उन्हें 'दिशोम गुरु' की पहचान दी।

1973 में उन्होंने ए.के. रॉय और बिनोद बिहारी महतो के साथ झारखंड मुक्ति मोर्चा बनाई। उस समय उनके नारे गूंजते थे—"हमारी जमीन हमारी है, कोई दीकु (बाहरी) नहीं छीन सकता।" इसके साथ ही झारखंड आंदोलन तेज होने लगा।

उस समय JMM का बनना कोई आसान बात नहीं थी—राजनीतिक विरोध, विभाजन और मानसिक खींचतान के बीच उन्होंने पार्टी को जीवंत रखा। तब लालू यादव ने 1998 में कहा था, "झारखंड मेरी लाश पर ही बनेगा,"।

लेकिन शिबू सोरेन ने सभी विरोधों को पार करते हुए, कांग्रेस, RJD और BJP से गठबंधन बनाया और बातचीत से राज्य का मामला संसद तक पहुँचाया।

राजनीति के शतरंज में माहिर खिलाड़ी

शिबू सोरेन ने समझ लिया था कि झारखंड का सपना सिर्फ जंगलों में धरना देकर पूरा नहीं होगा, इसके लिए दिल्ली की सत्ता के दरवाजे खोलने होंगे। और यही उन्होंने किया।

1989 में वी.पी. सिंह की सरकार को समर्थन, 1993 में नरसिम्हा राव को अविश्वास मत से बचाना, फिर 1999 में वाजपेयी की NDA सरकार से डील—शिबू हर बार सही मोड़ पर सही दांव खेलते रहे। कहते हैं, "गुरुजी का भरोसा सिर्फ लिखित वादों पर था, शब्दों पर नहीं।"

और हुआ भी वही।

15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग होकर झारखंड बना। जयपाल सिंह मुंडा ने आंदोलन की शुरुआत की थी लेकिन उसे मंज़िल तक पहुंचाने वाला नाम था शिबू सोरेन।

कॉरपोरेट से जंग, जीती भी, हारी भी

शिबू सोरेन की राजनीति का मूल था—आदिवासी पहचान और जल-जंगल-जमीन की रक्षा। उन्होंने सरहुल जैसे त्योहारों को विरोध का मंच बनाया। खदान मजदूरों को संगठित किया और खनन कंपनियों की नाक में दम किया। उनकी पहल पर PESA कानून आया जिसने ग्राम सभाओं को जमीन पर फैसला लेने का अधिकार दिया। 2006 का वन अधिकार कानून भी उनकी जिद का नतीजा था।

सरहुल जैसे त्योहारों को विरोध-अवसर में बदला, कंपनियों की चौकी को बाधित किया लेकिन फिर भी व्यापार-शक्ति रास्ते में आई— कॉरपोरेट का कॉकस नहीं टूटा। खनिज संपदा पर कंपनियों की पकड़ कायम रही। झारखंड से अरबों का कोयला और लौह अयस्क दिल्ली तक गया पर गांवों तक सिर्फ गरीबी पहुंची।

यही विडंबना है—राज्य तो बना, पहचान मिली पर आर्थिक न्याय अब भी अधूरा है।

झारखंड देश के सबसे समृद्ध खनिज राज्यों में है। कोयले, लौह अयस्क और अन्य खनिजों से केंद्र को सालाना 40-45 हजार करोड़ से ज्यादा का हिस्सा मिलता है जबकि राज्य को खुद के टैक्स से करीब 34 हजार करोड़ की आमदनी होती है। केंद्र से टैक्स शेयर और ग्रांट्स मिलाकर राज्य को कुल राजस्व का लगभग आधा हिस्सा ही मिलता है।

— स्थानीय कर-रकम 34 हजार करोड़

— टैक्स शेयर एवं ग्रांट ₹45–50 हजार करोड़

आसान शब्दों में—खनिज निकलता है झारखंड से, फायदा जाता है दिल्ली को। यही सबसे बड़ी लड़ाई रही है। और यह लड़ाई आज भी जारी है।

मुकदमे, सज़ा और जनता का अटूट विश्वास

दिशोम गुरु का सफर सियासत और मुकदमों की सफेद-स्याह परछाइयों और विवादों से भरा रहा।

1975 में 'बाहरी-विरोधी अभियान' जिसमें 11 मौतें हुईं, उन पर हत्या का आरोप लगा। 1993 के अविश्वास मत में रिश्वत का आरोप, 1994 में उनके निजी सचिव शशिनाथ झा की हत्या का मामला— 2006 में सजा हुई, फिर 2007 में बरी हुए।

"आरोप जितने भी लगे, शिबू सोरेन बरी हो गए।"

फिर भी जनता ने उनका साथ नहीं छोड़ा। जेल से निकलकर भी चुनाव जीते। तीन बार मुख्यमंत्री बने। दस बार सांसद रहे। पार्टी के एक नेता कहते हैं—"एक आदिवासी जब खड़ा होता है तो उसे राजनीति में फंसाया भी जाता है। हेमंत सोरेन को भी जेल में डाला गया पर क्या साबित हुआ? जनता अब इन चालों को अच्छी तरह समझने लगी है।"

शिबू सोरेन के उपर मुकदमे, सज़ा और विवादों का बोझ था, पर जनता ने उनका साथ नहीं छोड़ा।

उनके योगदान को लोग याद करते हैं— उन्होंने झारखंड का सपना रखा, आदिवासी पहचान को राष्ट्रीय विमर्श में रखा, और सबसे बड़ी बात— कारपोरेट पावर को चुनौती दी।

आज के दौर में विकास की जो रफ़्तार है, वह आर्थिक अधिकारों के सवाल को और गहरा कर देती है—क्या राज्य की खनिज संपदा उसी जनता को लाभान्वित कर पाएगी जिसने इसे जन्म दिया? गुरुजी चले गए, पर सवाल वहीं हैं।

समझदारी या सौदेबाजी?

शिबू सोरेन ने कभी BJP का समर्थन किया, फिर RJD से हाथ मिलाया, कभी कांग्रेस से तालमेल किया—हर कदम पर साबित किया कि राजनीतिक दृढ़ता और पहचान की चुनौतियाँ गठबंधन नीति से होकर गुज़रती हैं। "गुरुजी का भरोसा सिर्फ लिखित वादों पर था, शब्दों से नहीं।" भाषणों की नहीं, जमीन की राजनीति की गई। यह उन्हें अलग बनाता है।

जनता का भरोसा और हेमंत की अग्निपरीक्षा

शिबू सोरेन ने झारखंड का सपना देखा, उसे संसद में गूँज़ाया, और आखिरकार राज्य के रुप में राजनीतिक हक की लड़ाई जीत ली।

"इतिहास उन्हें सिर्फ नेता नहीं, बगावत और पहचान का प्रतीक लिखेगा..."

लेकिन गरीबी, बेरोजगारी, और आर्थिक आत्मनिर्भरता का संघर्ष जारी है। आज JMM फिर सत्ता में है। हेमंत सोरेन मुख्यमंत्री हैं। यह भरोसा सिर्फ बेटे पर नहीं बल्कि उस इतिहास पर है जो शिबू सोरेन ने लिखा।

चुनौती बड़ी है—खनिज संपदा पर कॉरपोरेट कब्जा, विकास की जरुरत और आदिवासी अस्मिता का सवाल। हेमंत कहते हैं—"विकास जरूरी है, पर वह हमारी पहचान को मिटाए नहीं।"

उन्होंने केंद्र से बकाया खनन राशि 1.40 लाख करोड़ रूपये मांगी है। टैक्स शेयर बढ़ाने की मांग की है।

आदिवासियों को राजनीतिक हक मिला, पर आर्थिक हक का सवाल अब भी अधूरा है। यही वह लड़ाई है जो आज हेमंत को लड़नी है। क्या हेमंत वह कर पाएंगे जो गुरुजी के दौर में अधूरा रह गया? मोदी सरकार के अधीन केंद्र को मिले कोयला रॉयल्टी की मांग, लंबित बकाया —यह संकेत है आर्थिक आत्मनिभरता की दिशा में संघर्ष की।

जमीनी राजनीति की बिसात पर सतर्कता और सफलता से चल रहे हेमंत सोरेन के सामने

उनका नारा—"जल, जंगल, जमीन" अब भी गूँजता है। और ये सवाल झारखंड तक सीमित नहीं है। झारखंड में फिर झामुमो की सफलता के बाद अन्य राज्यों के आदिवासी इस दल को हसरत से देखने लगे हैं।

सवाल है कि—क्या यह नारा सिर्फ झारखंड तक सीमित रहेगा या पिता की राह पर आग चलते हुए हेमंत सोरेन झारखंड मुक्ति मोर्चा को आदिवासी मुक्ति मोर्चा के रूप में स्थापित कर पाएंगे।

मोहन-मनमोहन दिल्ली जाएंगे: कैबिनेट फेरबदल पर बातचीत तेज

मनोरंजन सासमल, बरिष्ठ पत्रकार

भूबनेश्वर : मोदी-मोहन बैठक को एक महीना हो गया है और अब मुख्यमंत्री मोहन माझी फिर से दिल्ली आने वाले हैं। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मनमोहन सामल मंगलवार को मुख्यमंत्री मोहन माझी के साथ दिल्ली जा रहे हैं। जिसके बाद इस बात की चर्चा ज़ोरों पर है कि राज्य में जल्द ही मंत्रिमंडल में बदलाव हो सकता है। इतना ही नहीं, पिछले एक साल से भी ज़्यादा समय से ऐसी खबरें आ रही हैं कि दोनों नेता निगम और बोर्ड नियुक्तियों के लंबित मुद्दे पर दिल्ली के नेताओं से बातचीत कर सकते हैं। राज्य में भाजपा सरकार बनने के बाद से मंत्रिमंडल में एक भी फेरबदल नहीं हुआ है। अभी भी, जबकि मोहन सरकार में 6 मंत्री पद खाली हैं, कई नेता मंत्री बनने की उम्मीद लगाए बैठे हैं। और अब तक, मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश भाजपा अध्यक्ष को भी दिल्ली तलब किया जा चुका है।

इस बीच, निगम और बोर्ड नियुक्तियों की तारीख़ भी आगे बढ़ रही है। चूँकि पार्टी पहली बार सरकार में आई है, इसलिए बोर्ड, निगम और मंत्रिमंडल में किसे मौका मिलेगा, इस बारे में पार्टी सोच-समझकर फ़ैसला ले रही है। और इसी वजह से चर्चा है कि मंत्रिमंडल के साथ-साथ निगम और बोर्ड नियुक्तियों में भी देरी हो रही है।

इससे पहले, पिछले महीने मुख्यमंत्री प्रदेश भाजपा अध्यक्ष के साथ दिल्ली गए थे। और उस समय एक फ़ाइल को लेकर बातचीत बढ़ गई थी। मोदी से मुलाक़ात के दौरान मुख्यमंत्री मोहन माझी एक फ़ाइल पकड़े बैठे थे। मंत्रिमंडल में किसे जगह मिलेगी, इस पर चर्चा तेज़ होने के साथ ही मोदी की ओर से हरी झंडी मिल चुकी थी। लेकिन उसके बाद से ही बालासोर और बलंगा की घटनाओं को लेकर ओडिशा की राजनीति में उथल-पुथल मची हुई है, और अब ओडिशा के नेताओं को दिल्ली बुलाए जाने ने एक बड़ी राजनीतिक चर्चा को जन्म दे दिया है।

पहाड़ों का सर्वनाश: उत्तराखंड की आखिरी चेतावनी

उत्तरकाशी के थराली में बादल फटने से हुई भीषण तबाही उत्तराखंड के पर्यावरणीय संकट की गंभीर चेतावनी है। विकास के नाम पर हो रही पहाड़ों की अंधाधुंध कटाई, अवैज्ञानिक निर्माण और बेतरतीब पर्यटन ने पहाड़ों की सहनशीलता को खत्म कर दिया है। जमीन की लूट, संस्कृति का क्षरण और लगातार बढ़ता तापमान, उत्तराखंड को विनाश की ओर धकेल रहे हैं। यह लेख केवल एक त्रासदी का बयान नहीं, बल्कि उस गूंगी प्रकृति की पुकार है जिसे हमने वर्षों से नजरअंदाज किया। अब वक्त है रुकने, सोचने और सुधरने का — वरना अगली आपदा आपके दरवाज़े पर होगी।

(लेखक: डॉ. सत्यवान सौरभ)

उत्तरकाशी के थराली में बादल फटा। चार लोग मारे गए, पचास से अधिक लापता हैं। पूरा का पूरा गांव मिट्टी में मिल गया। पहाड़ एक बार फिर चीख पड़ा है — मगर इस बार उसकी चीख में सिर्फ पीड़ा नहीं, बल्कि आक्रोश है। वर्षों से सहते-सहते अब पहाड़ों ने जवाब देना शुरू कर दिया है। और यह सिर्फ एक प्राकृतिक आपदा नहीं, बल्कि हमारी बनाई हुई त्रासदी है। हमने पहाड़ों को छेड़ा, उन्हें काटा, उन्हें चीर दिया — और अब वे टूटने लगे हैं, बिखरने लगे हैं।

उत्तराखंड, जिसे देवभूमि कहा जाता था, अब आपदाओं की भूमि बन गया है। बारिश, भूस्खलन, बादल फटना, नदी का रुख बदल जाना — अब ये आम हो गया है। हर मानसून एक गांव बहा ले जाता है, हर बरसात किसी के घर उजाड़ जाती है, और हर बारिश एक नई लाश गिनती है। लेकिन इसके बावजूद सरकारें चुप हैं, योजनाएं गूंगी हैं और जनता बेबस।

जिसे हम विकास कहते हैं, दरअसल वह विनाश का दूसरा नाम बन चुका है। पहाड़ों पर सड़कें बनाने के लिए डायनामाइट से विस्फोट किए जाते हैं। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई होती है। पूरी की पूरी पर्वत श्रृंखलाएं काटी जाती हैं, ताकि टनल बने, चौड़ी सड़कें बनें, जल परियोजनाएं बनें। लेकिन ये सब किस कीमत पर? प्रकृति की शांति और संतुलन को तोड़कर हम क्या हासिल कर रहे हैं? जो सड़कें सुरक्षा लानी चाहिए थीं, वे अब मौत की राह बन गई हैं। जो टनल सुगमता का वादा करती थीं, वे अब आपदा का द्वार बन चुकी हैं।

पर्यटन के नाम पर उत्तराखंड का जिस तरह से दोहन किया जा रहा है, वह अभूतपूर्व है। सैकड़ों गाड़ियाँ, हजारों पर्यटक, प्लास्टिक का पहाड़, ट्रैफिक की कतारें — यह सब मिलकर उत्तराखंड के पर्यावरण पर ऐसा बोझ डाल रहे हैं, जिसे अब पहाड़ सह नहीं पा रहे। कभी यहां गर्मियों में पंखा नहीं चलता था, अब अक्टूबर में भी लोग एसी चला रहे हैं। यह सिर्फ जलवायु परिवर्तन नहीं, यह चेतावनी है कि हमने अपनी सीमाएं पार कर दी हैं।

बाहरी लोग भारी संख्या में आकर जमीनें खरीद रहे हैं, घर बना रहे हैं, कॉलोनियां उगा रहे हैं। स्थानीय लोगों की जमीनें औने-पौने दामों में छीनी जा रही हैं। संस्कृति खतरे में है, भाषा गुम हो रही है, और पहचान मिट रही है। उत्तराखंड अब उत्तर-हाउसिंग प्रोजेक्ट बन चुका है। जो भूमि कभी साधु-संतों की थी, अब रियल एस्टेट माफिया की गिरफ्त में है। और सरकारें बस तमाशबीन बनी बैठी हैं।

दिल्ली से उत्तराखंड तक एक्सप्रेसवे बनने वाला है। इस पर कोई गर्व महसूस कर सकता है, लेकिन जो लोग उत्तराखंड की आत्मा को जानते हैं, उन्हें पता है कि यह सड़क उस दरवाजे की आखिरी कड़ी होगी जो शांति की ओर जाता था। यह मार्ग विकास के नाम पर उत्तराखंड की आत्महत्या की

कहानी बन जाएगा। अभी तो वीकेंड में ही दिल्ली से हजारों लोग आते हैं, सोचिए जब यह सड़क पूरी होगी और हर दिन लाखों की भीड़ पहाड़ों पर चढ़ेगी — तब क्या बचेगा यहां?

विनाश का यह सिलसिला नियमों की कमी से नहीं, नियत की कमी से है। पर्यावरणीय रिपोर्टें बस एक औपचारिकता बन चुकी हैं। परियोजनाओं को मंजूरी देने वाले अधिकारी जानते हैं कि उनका हर हस्ताक्षर एक पेड़ को मार रहा है, एक चट्टान को कमजोर कर रहा है, एक गांव को डुबो रहा है। लेकिन धन, पद और प्रभाव के आगे ये सारी चेतावनियां बेअसर हो जाती हैं। इसीलिए तो आज स्थिति यह है कि हिमालय जैसा अचल पर्वत भी थरथराने लगा है।

यह केवल प्राकृतिक संकट नहीं, यह हमारी नैतिक विफलता भी है। हमने न सिर्फ पेड़ काटे, बल्कि भरोसे भी काट डाले। नदियों की धारा मोड़ी, तो साथ में भविष्य भी मोड़ दिया। हम भूल गए कि हिमालय सिर्फ बर्फ से नहीं बना, वह आस्था से बना है, संतुलन से बना है। और इस संतुलन को तोड़ने की हमारी कोशिश अब हर बरसात में लाशों की गिनती बढ़ाकर जवाब दे रही है।

समाधान कठिन है, पर असंभव नहीं। हमें तत्काल प्रभाव से नई निर्माण परियोजनाओं पर रोक लगानी होगी। पहाड़ों की सहनशीलता को विज्ञान से नहीं, विवेक से समझना होगा। पर्यटन को सीमित करना होगा — उसके लिए 'Carrying Capacity' जैसी अवधारणाओं को गंभीरता से लागू करना होगा। पर्यटकों की संख्या तय हो, वाहनों की सीमा तय हो, और सबसे जरूरी — स्थानीय लोगों की भागीदारी के बिना कोई भी निर्णय न लिया जाए।

जमीन की खरीद-फरोख्त पर रोक लगानी होगी। यह जरूरी है कि कोई बाहरी व्यक्ति पहाड़ में जमीन खरीदने से पहले उस भूमि की संस्कृति और पारिस्थितिकी को समझे। नहीं तो वह सिर्फ एक नया खतरा लेकर आएगा।

शिक्षा के स्तर पर हमें जलवायु संकट और पर्यावरणीय जागरूकता को स्कूलों से जोड़ना होगा। बच्चों को यह सिखाना होगा कि पेड़ सिर्फ ऑक्सीजन नहीं देते, वे पहाड़ों को थामे रहते हैं। नदी सिर्फ पानी नहीं देती, वह जीवन देती है। चट्टानें सिर्फ पत्थर नहीं होतीं, वे इतिहास, भूगोल और संस्कृति की नींव होती हैं।

इस समय जब थराली का गांव कीचड़ में दबा पड़ा है, और सैकड़ों परिजन अपनों को ढूंढ रहे हैं — हमें यह समझना चाहिए कि यह शुरुआत नहीं है, यह आखिरी चेतावनी है। अगर अब भी हम नहीं रुके, तो अगली बार यह हादसा किसी और गांव में नहीं, आपके दरवाजे पर दस्तक देगा। दिल्ली, देहरादून, हल्द्वानी, मसूरी — कोई सुरक्षित नहीं बचेगा।

उत्तराखंड सिर्फ एक राज्य नहीं, वह एक चेतना है। उसे बचाना केवल स्थानीय लोगों की जिम्मेदारी नहीं, यह पूरे देश की जिम्मेदारी है। सरकारों को अब सिर्फ घोषणाएं नहीं, कठोर और साहसी निर्णय लेने होंगे। वरना वह दिन दूर नहीं जब उत्तराखंड का हर गांव एक थराली बन जाएगा — और फिर हम सिर्फ शोक सभा कर पाएंगे, समाधान नहीं।

आज समय है संकल्प लेने का। समय है यह स्वीकार करने का कि हमने गलती की है — और समय है उसे सुधारने का। अगर अभी नहीं चेते, तो हम इतिहास में दर्ज हो जाएंगे — उन लोगों के रूप में, जिन्होंने देवभूमि को विनाशभूमि बना दिया।

चक्रधरपुर रेल मंडल में पोने दो किलोमीटर तक पटरी पर लगा पेंड्रोल क्लिप खुला मिला

कार्तिक कुमार परिच्छा स्टेट हेड-झारखंड

रांची, लगातार असुरक्षा के बीच चल रहा सारंडा इलाके में रेल के लिए मनोहरपुर थाना क्षेत्र के घाघरा गांव के पास हावड़ा-मुंबई रेलमार्ग पर करीब पौने दो किलोमीटर की दूरी तक थर्ड लाइन की रेल पटरी पर लगाया गया पेंड्रोल क्लिप खुला मिला ।जिससे गोइलकेरा से मनोहरपुर के बीच कुछ घंटों के लिए थर्ड लाइन पर आवागमन ठप हो गया। यह घटना रेलवे किलोमीटर पोल संख्या - 364 / 1 ए से 366 / 11 ए के बीच हुई है। रेल सूत्रों के अनुसार यह दूरी करीबन पौने दो किलोमीटर तक की है।

घटना की खबर मिलने पर आरपीएफ तथा मनोहरपुर थाना पुलिस के अलावा रेलवे के अधिकारी मौके पर जाकर स्थिति का जायजा लिया। साथ ही जरूरी कार्रवाई में जुट गई है। रेल सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक सोमवार को ड्यूटी पर तैनात की - मैन ने ड्यूटी के दौरान मौके पर पाया कि थर्ड लाइन की पटरी पर कई जगहों पर अज्ञात लोगों द्वारा पेंड्रोल क्लिप को खोल दिया है। साथ ही खोले गए पेंड्रोल क्लिप की ईआरसी को रेलवे पोल संख्या - 366 / 5 ए के पास इकठ्ठा छोड़ दिया है। तब उसने इसकी जानकारी पोसैता स्टेशन मास्टर को दी। उसके बाद मामले की जानकारी आरपीएफ और रेलवे के अधिकारियों को दी गई। उसके बाद सुबह 11 : 23 बजे से थर्ड लाइन पर आवागमन बंद कर दिया गया। हालांकि कुछ घंटों बाद पेंड्रोल क्लिप लगाए जाने के बाद थर्ड लाइन से यातायात पूर्ववत बहल कर दिया गया। रेल सूत्रों के अनुसार पेंड्रोल क्लिप के लंबी दूरी तक खुले रहने की स्थिति में रेल हादसे की प्रबल संभावना रहती है।

देशभक्ति की ज्वाला, और भारत के वीर सपूतों का प्रण

भारत माता के वीर सपूतों की वीरता, त्याग और बलिदान की गाथाएं देशभक्ति की ऐसी प्रेरणा हैं जो हर भारतीय के हृदय में मां भारती के प्रति अपार प्रेम और श्रद्धा की भावना जगाती हैं। ये वे महापुरुष हैं जिन्होंने अपनी जान की परवाह न करते हुए देश को आज़ाद कराने के लिए अदम्य साहस और अटूट संकल्प दिखाया।

सबसे पहले बात करते हैं चंद्रशेखर आजाद की, जिन्हें आज़ाद नाम से जाना जाता है। वे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के नायक थे, जिन्होंने ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ कई महत्वपूर्ण क्रांतियां छेड़ीं। अपनी युवावस्था से ही वे अंग्रेजों से लोहा लेते रहे। इलाहाबाद में आखिरी मुकाबले में, जब वे घिरे हुए थे, तब उन्होंने कहा था ₹मैं आज़ाद हूँ, आज़ाद ही रहूँगा,₹ अंग्रेजों के हाथ कभी नहीं आए। उनकी यह शहादत भारतीय आज़ादी के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज है।

भगत सिंह भी ऐसे महानायक थे जिन्होंने अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों से युवाओं में आज़ादी की भावना को अभिव्यक्त किया। उन्होंने सजा-ए-मौत की परवाह किए बिना अंग्रेजों के अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई और 'इंकलाब जिंदाबाद' के नारे से देश को प्रेरित किया। उन्होंने ब्रिटिश संसद में बम फेंकने का साहस किया ताकि सरकार को चेताया जा सके कि भारत को दबाया नहीं जा सकता। 23 मार्च 1931 को उनकी फांसी ने पूरे देश को झकझोर दिया।

अशफाक उल्ला खां काकोरी कांड के

प्रमुख क्रांतिकारियों में थे। उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल, राजगुरु के साथ मिलकर ब्रिटिश सरकार के खजाने को लूटने की योजना बनाई, ताकि देश के स्वतंत्रता संग्राम के लिए धन जुटाया जा सके। अशफाक उल्ला खां ने अपनी ज़िन्दगी बहादुरी से जी ,और 1927 में उन्हें फांसी दी गई। वे मुसलमान क्रांतिकारी थे जिन्होंने धर्म को दरकिनार कर देश की आज़ादी को सर्वोपरि माना, जिसका बलिदान हर किसी के लिए प्रेरणा है।

इन तीनों के अतिरिक्त, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के कई अन्य महानायक भी हैं जिन्होंने आज़ादी का दीप जलाया। रानी लक्ष्मीबाई ने झांसी की रक्षा के लिए अंग्रेजों से अंतिम सांस तक लड़ाई लड़ी। सुभाष चंद्र बोस ने आज़ाद हिंद फौज का गठन कर युद्ध के मैदान में क्रांति की ज्वाला भड़की। महात्मा गांधी ने सत्याग्रह और अहिंसा के माध्यम से करोड़ों भारतीयों को आज़ादी का मार्ग दिखाया। सरदार वल्लभभाई पटेल ने देश की राजनीतिक एकता के लिए जीवन समर्पित किया। भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव जैसे कई और भी क्रांतिकारियों ने अपनी जान की परवाह किए बिना स्वतंत्रता संग्राम को आगे बढ़ाया।

यह वीरांगनायें और वीर सपूत हमारी मातृभूमि को स्वतंत्र और गौरवशाली बनाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान देकर हमें गर्व की भावना सिखाते हैं। उनका त्याग हमें सिखाता है कि देशभक्ति केवल शब्दों में नहीं, बल्कि कर्मों में प्रकट होनी चाहिए। हमें उनकी कुर्बानियों को याद रखते हुए, अपने देश के प्रति समर्पित और जिम्मेदार नागरिक बनना चाहिए।

भारत माता के इन अमर सपूतों की लड़ाई और बलिदान की कहानी हर भारतीय के हृदय में देशभक्ति की लहर दौड़ाती रहे यही सच्चा सम्मान होगा। उनकी जयंती और शहादत दिवस मनाकर हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम भी उनके बलिदान को सार्थक करते हुए अपनी मातृभूमि की सेवा में निरंतर तत्पर रहेंगे। जय हिन्द ! जय भारत माता !

डॉ. मुश्ताक अहमद

नेमरा माता की गोद में बैठकर पंचतत्व में विलीन हुए शिबू सोरेन , गमगीन माहौल ने दी विदाई

हेमंत ने दी पिता को मुखाग्नि

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड-झारखंड

रांची। झारखंड अलग राज्य का सपना लिये आजादी के बाद जिस मशाल को मारागं गोमके जयपाल सिंह ने जलाकर आजाद मुल्क के छोटानागपुर राजनीति को आदिवासी हवा दी थी ,

उस आन्दोलन भले ही भटक गया । पर उनके स्वर्ग सिधारने (1970) के बाद 1944 में तत्कालीन हजारीबाग जिले के नेमरा गांव में जन्मा एक मास्टर का बेटा अपनी पिता के हत्या के बाद फिर से राजनीतिक ट्रैक में आन्दोलन दौड़ा कर मुकाम पर पहुंचाया । महाजनी प्रथा के विरूद्ध अपने पिता का संकल्प लिए आदिवासी - मूलवासी लोगों से साथ भावनात्मक संबंध को राजनीतिक उठा पटक के साथ चलाया । अंततः 2000 में नये राज्य झारखंड को बिहार से पृथक कर दिखाया । कालान्तर में नव गठित झारखंड राजनीति ने उन्हें दिसोम गुरू (देश के गुरु) का खिताब देकर महिमा मंडित की ।

'दिशोम गुरु' के नाम से नामित शिबू सोरेन अपने जीवन के सफर मे 81वर्ष की आयु में अपना जीवन दीप बुझते दिल्ली के गंगाराम हॉस्पिटल मे सोमवार को अंतिम सस ली थी ।आज झारखंड के उसी नेमरा गावं में मातम पसरा है कारण 1944 में जन्मा

उसका लाल आज नेमरा माता की गोद मे पंचतत्व में विलीन जो हो रहा है ,अपने सांथल परंपरा अनुसार यहां अन्तिम विदाई दी जा रही है । जहां अपने बेटे संप्रति उसी झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने उन्हें यहां नाला समीप स्थल पर मुखाग्नि दी है ।

कल शाम दिल्ली से रांची लाने के बाद यहां पूर्व नेता , मंत्री , पूर्व मुख्यमंत्रियों ने शिबू सोरेन का पार्थिव शरीर पर श्रद्धांजलि दी । आज उनका पार्थिव शरीर रांची विधानसभा के बाद अपने पैतृक गांव नेमरा में लाया गया तो रास्ते भर लोगों ने श्रद्धांजलि दते रहे ।उनके अंतिम दर्शन के लिए भारी भीड़ उमड़ी जहां तील तक रखने हेतु जगह नहीं थी नेमरा की जमीं पर । दिली से कांग्रेस के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे, राहुल गांधी, बिहार से नेता गण समेत झारखंड के पूर्व नेतृत्वकर्ता गण रांची श्रद्धांजलि देने पहुंचे थे ।

रांची रिम्स में इलाज, बदहाली को लेकर झारखंड हाईकोर्ट सख्त हाईकोर्ट जनहित याचिका में तब्दील किया था मामला ,

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची। झारखंड हाइकोर्ट ने रिम्स में मरीजों के बेहतर इलाज व बुनियादी सुविधाओं को लेकर स्वतः संज्ञान से दर्ज जनहित याचिका पर सुनवाई की. चीफ जस्टिस तरलोक सिंह चौहान व जस्टिस राजेश शंकर की खंडपीठ ने मामले की सुनवाई के दौरान प्रार्थी व राज्य सरकार का पक्ष सुना. पक्ष सुनने के बाद खंडपीठ ने मामले को गंभीरता से लेते हुए कहा कि रिम्स राज्य का प्रमुख अस्पताल है. यहां इलाज की उत्कृष्ट व्यवस्था होनी चाहिए. खंडपीठ ने मामले में सख्त रूख अपनाते हुए राज्य के स्वास्थ्य सचिव व रिम्स निदेशक को छह अगस्त को सुनवाई के दौरान सशरीर हाजिर होने का निर्देश दिया. खंडपीठ ने रिम्स से पूछा कि राज्य सरकार हर साल करोड़ों रुपये देती है, तो उसे खर्च किये बिना क्यों लौटा दिया जाता है. प्राप्त राशि से मेडिकल उपकरण व इलाज के लिए अन्य जरूरी वस्तुएं क्यों उपलब्ध नहीं रहती है. वर्षों से चिकित्सकों, प्राचार्यों, प्रोफेसरों, नर्स, पारा मेडिकल स्टॉफ व चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के रिक्त पदों को अब तक क्यों नहीं भरा गया है. खंडपीठ ने नन प्रैक्टिस एलाउंस (एनपीए) लेने के बाद भी रिम्स के चिकित्सकों द्वारा प्राइवेट प्रैक्टिस

करने को गंभीरता से लेते हुए खंडपीठ ने रिम्स निदेशक को चिकित्सकों की बायोमेट्रिक उपस्थिति रिपोर्ट कोर्ट में प्रस्तुत करने का निर्देश दिया. उक्त निर्देश देते हुए खंडपीठ ने मामले की अगली सुनवाई के लिए छह अगस्त की तिथि निर्धारित की. इससे पूर्व प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता दीपक कुमार दुबे ने पैरवी की. उन्होंने खंडपीठ को बताया कि रिम्स की स्थिति में कोई बदलाव नहीं हुआ है. इलाज की व्यवस्था में कोई सुधार नहीं हुआ है. रिम्स में बड़ी संख्या में पद खाली पड़े हैं. पदों को भरने के लिए जो विज्ञापन निकाले गये थे, उसकी प्रक्रिया अब तक पूरी नहीं की गयी है. रिम्स में नियुक्ति दर्जनों चिकित्सक एनपीए लेने के बाद भी प्राइवेट प्रैक्टिस धड़ल्ले से कर रहे हैं. वहीं राज्य सरकार की ओर से खंडपीठ को बताया गया कि रिम्स को नियमित रूप से राशि आवंटित की जाती है, लेकिन रिम्स प्रबंधन द्वारा आवंटित राशि का उपयोग किये बिना वापस कर दिया जा रहा है. उल्लेखनीय है कि रिम्स में इलाज की दयनीय स्थिति को झारखंड हाइकोर्ट ने गंभीरता से लेते हुए उसे जनहित याचिका में तब्दील कर दिया था. साथ ही प्रार्थी ज्योति शर्मा की ओर से भी जनहित याचिका दायर रिम्स की व्यवस्था बेहतर बनाने की मांग की गयी है. पिछली सुनवाई के दौरान कोर्ट ने राज्य सरकार, रिम्स प्रबंधन व झारखंड बिल्डिंग कॉरपोरेशन को जवाब दायर करने का निर्देश दिया था.

प्रार्थी की ओर से अधिवक्ता दीपक कुमार दुबे ने कोर्ट को बताया कि रिम्स में लंबे समय से बड़ी संख्या में पद रिक्त हैं और उन पदों पर नियुक्ति प्रक्रिया यदि शुरू भी की गयी थी, तो वह पूरी नहीं हुई है. रिम्स ने 13 मार्च 2024 को 145 पदों पर नियुक्ति के लिए विज्ञापन जारी किया था, जिसमें प्रोफेसर के 37, एडिशनल प्रोफेसर के नौ, एसोसिएट प्रोफेसर के 56, असिस्टेंट प्रोफेसर के 43 पद शामिल थे, जो पूरा नहीं हुआ. रिम्स डेंटल कॉलेज में एक प्रिंसिपल का पद है, लेकिन तीन साल से इंचार्ज के भरोसे चल रहा है. 22 जून 2023 को विज्ञापन निकला था, लेकिन प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है. वहीं नर्सिंग कॉलेज में एक प्रिंसिपल का पद है. इसकी नियुक्ति के लिए 19 मार्च 2025 को विज्ञापन जारी हुआ, लेकिन प्रक्रिया पूरी नहीं हुई है. नर्सिंग स्टाफ (ग्रुप-सी) का 144 पद, पारा मेडिकल स्टाफ का 44 तथा ग्रुप-डी का 418 पद रिक्त।

उत्तराखंड से दिल दहलाने वाला दृश्य! उत्तरकाशी के धराली गांव में तबाही का मंजर – भयावह प्राकृतिक प्रकोप!

परिवहन विशेष न्यूज

यह कोई फिल्मी सीन नहीं, बल्कि एक जीवंत और दिल दहला देने वाला सच है। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के धराली गांव पर कुदरत का कहर इस कदर टूटा कि सब कुछ पल भर में बर्बाद हो गया।

पहाड़ियों से उमड़ते भयंकर मलबे और तेज बहाव वाले सैलाब ने गांव को अपनी चपेट में ले लिया। घर, दुकानें, होटल, ढाबे – सब कुछ पानी के तूफानी बहाव में तिनके की तरह बह गए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com

(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023